राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ

१ प्रमाणमञ्जरी – तार्किकचूड़ामणि सर्वदेव। २ यन्त्रराजरचना – महाराजाधिराज जयसिंहदेव कारिता। ३ कान्हडदे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ। ४ क्यामखांरासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)। ५ लावारासा – चारण कविया गोपालदान। ६ महर्षिकुलवैभवम् – विद्यावाचस्पति स्व. श्री मधुसूदनजी ओझा। ७ वृत्तिदीपिका – मौनि कृष्णभट्ट। ८ राजविनोद काव्य – कवि उदयराज।

प्रेस में

त्रिपुराभारतीलघुस्तव – सिद्धसारस्वत लघुपण्डित। २ बालशिक्षा व्याकरण – ठक्कुर संग्रामसिंह। ३ करुणामृतप्रपा – महाकवि ठक्कुर सोमेश्वरदेव। ४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – पं. कृष्णमिश्र। ५ शकुनप्रदीप – पं. लावण्यशर्मा। ६ उक्तिरत्नाकर – पं. साधुसुन्दर गणी। ७ प्राकृतानन्द – पं. रघुनाथ कवि। ८ ईश्वरविलासकाव्य – पं. कृष्णभट्ट। ९ चक्रपाणिविजयकाव्य – पं. लक्ष्मीधर भट्ट। १० काव्यप्रकाश – भट्ट सोमेश्वर। ११ तर्कसंग्रहफक्किका – क्षमाकल्याण गणी। १२ कारकसंबन्धोद्योत – पं.रभसनन्दी। १३ शृंगारहारावलि – हर्षकवि। १४ कृष्णगीतिकाव्यनि – कवि सोमनाथ। १५ नृत्यसंग्रह – अज्ञातकर्तृक। १६ नृत्यरत्नकोश – महाराजाधिराज कुंभकर्णदेव। १७ नन्दोपाख्यान – अज्ञातकर्तृक। १८ चान्द्रव्याकरण – चन्द्रगोमी। १९ शब्दरत्नप्रदीप – अज्ञातकर्तृक। २० रत्नकोश – अज्ञातकर्तृक। २१ कविकौस्तुभ – पं. रघुनाथ मनोहर। २२ एकाक्षरकोशसंग्रह – विविधकविकर्तृक। २३ शतकत्रयम् – भर्तृहरि, धनसारकृत व्याख्यायुक्त। २४ वसन्तविलास – अज्ञातकर्तृक। २५ दुर्गापुष्पाञ्जलि – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २६ दशकण्ठवधम् – म. म. पं. दुर्गाप्रसादजी द्विवेदी। २७ गोरा बादल पदमिणी चऊपई – कवि हेमरतन। २८ बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास। २९ मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नेणसी। इत्यादि।

प्राप्तिस्थान – सञ्चालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर।

महाकवि उदयराज विरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम्



सम्पादक

श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम० ए०



—: प्रकाशनकर्त्ता :—

श्रीराजस्थान-राज्याज्ञानुसार

संचालक—राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

ज य पु र (रा ज स्था न)

विक्रमाब्द २०१३] प्रथमावृत्ति ★ मूल्य [ख्रिस्ताब्द १९५६

प्रकाशकीय वक्तव्य

प्रस्तुत "राजविनोद" काव्य की रचना कवि उदयराज द्वारा अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगड़ा के यशोवर्णन के रूप में हुई है। महमूद बेगड़ा गुजरात का एक महाप्रतापी, शूरवीर और कर्त्तव्यपरायण नरेश हो गया है, जिसका वर्णन सम्बन्धित इतिहासों में विस्तार से मिलता है। उदयराज महमूद बेगड़ा का आश्रित एक संस्कृत कवि था। तत्प्रणीत "राजविनोद" द्वारा मध्यकालीन भारतीय इतिहास के कई नवीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है तथा राजस्थान की तात्कालिक स्थिति आदि के विषय में भी कितनी ही सूचनाएं प्राप्त होती हैं। सर्व प्रथम डाक्टर बूलर ने सन् १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये "राजविनोद" की प्रति प्राप्त कर इसका महत्त्व प्रदर्शित किया था। तब से इसके प्रकाशन की आवश्यकता बनी हुई थी।

भाण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना में हमारा जाना हुआ तो वहां पर सुरक्षित बम्बई सरकार के ग्रन्थ-संग्रह से "राजविनोद" की प्रति प्रकाशन के लिये हम अपने साथ ले आए। राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में "राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर" की स्थापना होने पर श्री गोपालनारायण जी बहुरा हमारे सम्पर्क में आये और हमने इनकी साहित्यिक रुचि देख कर "राजविनोद" के सम्पादन का कार्य इनको सौंप दिया। इन्होंने प्रास्ताविक परिचय के साथ-साथ ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर महमूद बेगड़ा का वंश-परिचय तथा डा० एच० डी० सांकलिया के दोहाद के शिलालेख का अनुवाद और अनुक्रमणिका आदि से इसे समन्वित करके पुस्तक की उपयोगिता को संवर्धित कर दिया है।

"राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" के ८ वें पुष्प के रूप मे प्रस्तुत रचना को प्रकाशित करते हुए हमें परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इति।

मुनि जिनविजय

सम्मान्य संचालक

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर,

जयपुर

जयपुर,

ज्येष्ठ कृष्णा ७

वि० सं० २०१३

प्रास्ताविक परिचय

डाक्टर ब्रूलर ने सन् १८७५ ई० में बम्बई सरकार के लिये 'राजविनोद' नामक काव्य की एक हस्तलिखित प्रति* प्राप्त की। इस काव्य में अहमदाबाद के सुलतान महमूद बेगडा के जीवन चरित्र का वर्णन मिलता है।† यह ऐतिहासिक काव्य अभी तक प्रकाशित नही हुआ है। डाक्टर ब्रूलर ने 'सस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थो की रिपोर्ट (१८७४-७५) में इस काव्य को एक साहित्यिक विनोद बतलाते हुए इस प्रकार लिखा है —"उदयराज विरचित 'राजविनोद' अथवा 'ज़र बक्स पातसाहि श्री महमूद सुरत्राणचरित्र', जिसमें अहमदाबाद के सुलतान महमूद बेगडा का जीवन-चरित्र वर्णित है, एक विशुद्ध साहित्यिक विनोद है। प्रयागदास के पुत्र और रामदास के शिष्य उदयराज ने महमूद की प्रशसा करते हुए उसको महान् पराक्रमी, प्रतापी और हिन्दू धर्म

---

* प्रति स० १८। १८७४–७५ ई० (भा० ओ० रि० इ०)

† बेगडा का जन्म १४४५ ई० में हुआ था। उसका नाम फतहखाँ था। वह १४५८ से १५११ ई० तक ५३ वर्ष गुजरात का सुलतान रहा। उसके समय की कुछ मुख्य मुख्य घटनायें इस प्रकार है —

१४६७–७० ई० जूनागढ का युद्ध।

१४७२ ई० कच्छ और सिन्ध पर आक्रमण।

१४७३ ई० द्वारका पर अधिकार, मन्दिर का तोडना।

१४६५ ई० महमूद द्वारा बहरोट, पारनेर के किलो और दम्मन के बन्दरगाह पर अधिकार करने के लिये सेना भेजना। महमूद के सेनानायक अलपखान द्वारा सजान की पारसी बस्ती का ध्वस (१४६५ अथवा १४९१ ई०)।

१४७९ ई० वातरक पर महमूदाबाद का बसाना।
रानपुर विजय।

१४८२–८४ ई० चम्पानेर की लडाई। पावागढ का २० महीने तक घेरा।

१४८४ ई० (नवम्बर) पावागढ पर आक्रमण और विजय।

१४९१–९४ ई० बहमनी राज्य के बहादुर गिलानी द्वारा गुजरात के समुद्री किनारे पर हमले। गिलानी को पराजित करके मार डाला गया।

१५०८ ई० खान देश के तख्त पर महमूद द्वारा अपने आदमी को बिठाना।

१५०८–९ ई० चौल और दीव पर पुर्तगालियो से झगडा।

१५११ ई० (२३ नवम्बर) महमूद की ६७ वर्ष की अवस्था में मृत्यु। उसकी मृत्यु के थोडी ही देर पहले महमूद को दिल्लीश्वर की ओर से भेंट प्राप्त हुई। (पृ० २०७)।
(कोमिसरियट—History of Gujrat, Vol I (1938) P. 130)

का रक्षक वतलाया है, मानो वह कोई कट्टर हिन्दू राजा हो। कवि ने क्षत्रिय राजा के समान वर्णन करते हुए लिखा है कि वह राजन्यचूडामणि है, श्री और सरस्वती दोनो उसकी सेवा करती है, दानवीरता में वह कर्ण से भी वढ कर है और उसके पूर्वज मुज़फ्फरखाँ ने श्रीकृष्ण की कलिकाल के विरुद्ध सहायता की थी। यह चरित्र सात सर्गो में वर्णित है। पहले सर्ग मे २९ श्लोक है और इसमें मुरेन्द्र-सरस्वती-सम्वाद रूप से काव्य की भूमिका बाँधते हुए यह वर्णन किया है कि ब्रह्मा ने इन्द्र को सरस्वती की खोज करने के लिये भेजा। इन्द्र ने उसे महमूदशाह के सभामण्डप में पाया। सरस्वती ने अपने वहाँ रहने का कारण वताते हुए महमूद का कीर्तिगान किया। दूसरे सर्ग का नाम 'वंशानुकीर्त्तन' है। इसमे ३१ श्लोक है और महमूदशाह की वंशपरम्परा का वर्णन है। इसमें दिया हुआ वंशानुक्रम इतिहास के अनुसार सही ज्ञात होता है। "सभा समागम' नामक तीसरे सर्ग में ३३ श्लोको में महमूद के सभा प्रवेश का वर्णन है। दरवार में कौन-कौन से राजा और सभ्य उपस्थित होते थे, इसका वर्णन सर्वावसर नामक चतुर्थ सर्ग में ३३ श्लोको में किया गया है। पाँचवे सर्ग में सङ्गीतरङ्गप्रसङ्ग का ३५ श्लोको में वर्णन है और छठे सर्ग में विजययात्रोत्सव वर्णन के ३६ श्लोक है। सातवें सर्ग का नाम 'विजय लक्ष्मीलाभ' है और इसमें ३७ श्लोको मे महमूद के सामरिक पराक्रम का वर्णन है। पातशाह की उदारता के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन से ज्ञात होता है कि कवि को उसके दरवार मे पर्याप्त दक्षिणा मिली होगी अथवा मिलने की आशा रही होगी।"

अहमदावाद के प्रसिद्ध सुलतान महमूद बेगडा (१४५८ ई० १५११ ई०) के दरबारी कवि उदयराज विरचित ऐतिहासिक काव्य की इस दुर्लभ प्रति* पर यह टिप्पणी पर्याप्त नहीं है। सामान्यत गुजरात के इतिहास और विशेषत गुजरात के सुलतानो के इतिहास में रुचि रखनेवाले एव अन्य साहित्यिक अभिरुचि वाले विद्वानो के परिचय के लिए यह दुष्प्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। इसकी प्रति† भाण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इस्टीट्यूट पूना से प्राप्त की गई है और इसी सस्थान के सग्रहाध्यक्ष श्री पी० के० गोडे के मन्तव्यानुसार इस काव्य को आवश्यक टिप्पणियो सहित प्रस्तुत किया गया है।

राजविनोद के प्रत्येक सर्ग के अन्त में निम्नलिखित पद्य दिया हुआ है जिसमे सुलतान महमद के वंशानुक्रम का वर्णन है —

श्रीमान् साहिमुदफ्फरः समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति—
स्तस्मात्साहि महम्मदस्समभवत्साहिस्ततोऽहम्मद ।
जात साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात्तदीयात्मज ॥

एपिग्राफिका इन्डिका जि० २४ भाग ५, जनवरी १९३८ पृ० २१२ पर डाक्टर एच डी

---

* आफ्रेट ने 'राजविनोद' की भाण्डारकर सग्रहालयवाली प्रति के अतिरिक्त और किसी प्रति का उल्लेख नही किया है। (C C I 502) कृष्णमाचारि ने भी History of Classical Sanskrit Literature, Madrass, 1937 P 271, 433 में इसी एक प्रति का उल्लेख किया है।

† गवर्नमेन्ट मैनिस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, भा ओ रि इ पूना, स० १८। १८७४-७५।

साँकलिया द्वारा सम्पादित दोहाद का एक शिलालेख प्रकाशित हुआ है। महमूद बेगडा का यह लेख विक्रम सम्वत् १५४५ शक सम्वत् १४१० (१४८८ ई०) का है। इस लेख में दिए हुए वशानुक्रम और ऊपर दिये हुए पद्यान्तर्गत क्रम को इस प्रकार मिलाया जा सकता है —

राजविनोद (१४५८–१५११ ई०)	दोहाद का शिलालेख (१४८८ ई०)
१—साहि मुदफ्फर (१३९२-१४१० ई०)	१—शाहिमुदाफर
२—साहि महम्मद (१) का पुत्र (तस्मात्समभवत्)।	२—महम्मद (१) का पुत्र (तत्पुत्र)।
३—साहि अहम्मद (१४११–१४४२ ई०) इसके बाद (तत)।	३—अहम्मद (इसका वशज) 'तस्यान्वये प्रसूत'
४—साहि महम्मद (३) का पुत्र (तस्य तनुज जात) '१४४२-१४५१ ई०।	४—साह महम्मद (३) का पुत्र (तस्माद-भूत्)।
५—महमूदसाहि (४) का पुत्र 'तदीयात्मज' (१४५८-१५११ ई०)।	४—साह महमूद 'अन्वये जात'

इन वशावलियो से विदित होगा कि चार पीढी के नाम तो ज्यो के त्या मिलते है केवल महमूद (बेगडा) को राजविनोद में तो महम्मद का पुत्र लिखा है 'जीयात्तदीयात्मज' और दोहाद के शिलालेख मे उसको साह महम्मद का वशज 'तस्यान्वये जात' लिखा है। डाक्टर साँकलिया ने मुसलमान इतिहासकारो के आधार पर इन सुलतानो का वशानुक्रम* इस प्रकार लिखा है—(१) मुज़फ्फरशाह (मुज़फ्फर १), २—अहमदशाह (अहमद), (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद), (४) उसका पुत्र कुतुबुद्दीन (कुतुबुद्दीन अहमदशाह), (५) दाऊद और (६) महमूद १, मुहम्मदशाह का द्वितीय पुत्र।

सम्वत् १५८७ में पण्डित विवेकधीरगणि नामक जैन विद्वान् ने शत्रुञ्जयतीर्थोद्धार-प्रबन्ध नामक एक ऐतिहासिक प्रबन्ध की रचना की है जिसका सम्पादन मुनि श्रीजिनविजयजी ने करके सम्वत् १९७३ में भावनगर की जैन आत्मानन्द सभा द्वारा प्रकाशित कराया है। सम्वत् १५८७ में चित्तौड के रहनेवाले ओसवाल जाति के कर्माशाह ने लाखो रुपये खर्च करके शत्रुञ्जय के मुख्य मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया और उसका प्रतिष्ठा महोत्सव किया। उस समय वहाँ पर गुजरात के सुलतान बहादुरशाह का राज्य था। इसी बहादुरशाह की आज्ञा प्राप्त करके यह जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न किया गया था। इसलिये इस ऐतिहासिक प्रबन्ध में गुजरात के इन सुलतानो का सक्षेप में वश वर्णन दिया गया है। बहादुरशाह, जिसके समय में जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ, प्रस्तुत राजविनोद काव्य में वर्णित महमूदशाह अर्थात् महमूद बेगडा का पौत्र था। इसलिये इसमें इसके वश का उल्लेख होना स्वाभाविक है। इस ऐतिहासिक प्रबन्ध मे गुजरात के सुलतानो के वशानुक्रम के विषय में निम्नलिखित श्लोक मिलते है —

* एपिग्राफिया इन्डिका, जनवरी १९३८, पृ० २१४।

पीरोजशाहेः समयेऽस्य जज्ञे श्रीगूर्जरत्रा भुवि पादशाहि ।
मुज्जफुराह्वः(१)खगुणाब्धिचन्द्रमितेषु (१४३०) वर्षेषु च विक्रमार्कात् ॥१४॥
अहिमदशाहिर्जज्ञे(२) तत आशेष्वब्धिचन्द्रमितवर्षे (१४५४)
दिग्रसवेदेन्द्वब्दे (१४६८) योऽस्थापयदहिमदाबादम् ॥१५॥
महिमुन्द(३)कुतुबदीनौ(४) शाहिमहिमुंद(५)वेगडस्तदनु ।
यो जीर्णदुर्गचम्पकदुर्गौ जग्राह युद्धेन ॥१६॥
उल्लास २, पृ० १३ ।

इतिहास के विशेषज्ञ इन वशावलियो की छानबीन करके इन पर विशेष प्रकाश डालेगे ।

राजविनोद महाकाव्य का रचयिता उदयराज अवश्य ही महमूद का दरबारी कवि था क्योकि उसने इस काव्य में उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है। यह विचारणीय है कि धार्मिक कट्टरता के लिये प्रसिद्ध महमूद ने* उदयराज जैसे हिन्दू पण्डित को अपने आश्रय में कैसे रक्खा। यो तो इस काव्य के रचनाकाल का निर्धारण करने के लिये यह कहा जा सकता है कि महमूद के शासन काल १४५८ ई० से १५११ ई० के बीच में ही यह लिखा गया था परन्तु अवश्य ही यह उस समय रचा गया होगा जब महमूद का भाग्य उदय के शिखर पर पहुँच चुका था। प्रस्तुत काव्य के चतुर्थ सर्ग में उन सभी राजाओ का वर्णन आया है जिनको महमूद ने अपने आधीन कर लिया था। इसके अतिरिक्त अलग अलग राजाओ के पद और सम्मान आदि का भी इस सर्ग के पद्यो से पता चलता है —

"राज्ञोऽस्य वेत्रधरदत्तपदावकाशान्देशाधिपान् सदसि कृतप्रवेशान् ।"
१, स० ४

इस प्रसङ्ग मे मालवराज और दक्षिणनृप का वर्णन इस प्रकार है —

'वेषं विशेषरुचिरं दधतादरेण हस्तारविन्दसमुदञ्चितचामरेण ।
राजा विराजतितरां परिहृष्यमानो गोष्ठीषु दक्षिणनृपेन विचक्षणेन ॥१०॥ स० ४.

एतस्य चण्डभुजदण्डपराक्रमेण नि शेषखण्डितरणाङ्गणशौण्डभाव. ।
सर्वस्वमेव निजजीवितरक्षणाय दण्ड समर्प्पयति मालवमण्डलेश. ॥११॥ स० ४

फिर ७ वें सर्ग में 'मालव' के लिए लिखा है —

"त्यक्त्वा लुण्ठितदेशकोशविषयो द्राग्दुर्गमानग्रहं
राजन् जीवितमात्रलाभमधुना काक्षत्यमौ मालव ॥२६॥

सम्भवत दक्षिण के निज़ामशाह पर जब मालवा के महमूद खिलजी ने १४६२-६३ ई० म हमला किया तब सुलतान महमूद (वेगडा) ने जो मालवा के विरुद्ध सैनिक सहायता दी थी,

* महमूद ने अपने आज्ञाकारी गिरनार के माण्डलिक राजा को इस्लाम धर्म ग्रहण करने के लिये बाध्य किया। (देखो डा एम के बनर्जी कृत 'हुमायू बादशाह' सस्करण १९३८ पृ० ११२ और कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भा० ३, पृ० ३०५)।

यहाँ उसी से अभिप्राय है; यदि यह सच है तो यह काव्य १४६३ ई० के वाद का रचा हुआ होना चाहिए ।

इसी चतुर्थ सर्ग के वारहवें श्लोक में मेवाड के राणा कुम्भा का वर्णन है—

"यः पार्थिवः खलु कुम्भकर्णः कर्णेन वर्णमुचित सहते तुलायाः ।
सोऽयं करोति महमूदनृपस्य सेवा दण्डे वितीर्णवरभूरिसुवर्णभारः ॥१२॥

इसके अतिरिक्त सातवें सर्ग में भी मेदपाट के राजा का ज़िकर है । इससे स्पष्ट है कि महमूद और राणा कुम्भा समकालीन थे । राणा कुम्भा* ने १४३३ से १४६८ ई० तक राज्य किया था । इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि "राज विनोद" का रचना काल १४६२ से १४६९ के वीच मे है ।

दोहाद के शिलालेख (१४८८ ई०) में वहुत सी उन घटनाओ का भी उल्लेख मिलता है जिनका राजविनोद में कोई वर्णन नही है । यदि राजविनोद के रचना काल के विष्य मे उपरोक्त अनुमान ठीक मान लिया जावे तो इसका समाधान सहज ही में हो सकता है । क्योकि शिलालेख का समय राज विनोद के समय से लगभग २० वर्ष वाद का है जिसमें महमूद के १४५८ ई० से १४८८ ई० तक ३० वर्षो के राज्यकाल का वर्णन मिलता है ।

दोहाद के शिलालेख की भाषा, शैली और विषय को देखते हुए यह भी एक धारणा वनती है कि सम्भवतः राजविनोद नामक ऐतिहासिक काव्य और दोहाद के शिलालेख, दोनो का रचयिता एक ही हो । इन दोनो की समानता के कुछ अश इस प्रकार है —

---

* महाराणा कुम्भा वि० स० १४९० (ई० स० १४३३) में चित्तौड के राजसिंहासन पर वैठा । .. . .. पिछले दिनो में महाराणा को उन्माद रोग हो गया था । एक दिन वह कुम्भलगढ में मामादेव (कुम्भ स्वामी) के मन्दिर के पास जलाशय के तट पर वैठा हुआ था उस समय उसके राज्यलोभी पुत्र ऊदा (उदयसिंह) ने कटार से उसे अचानक मार डाला । यह घटना वि० स० १५२५ (ई० स० १४६८) में हुई । (श्री गौरीशकर हीराचन्द ओझा कृत 'राजपूताने का इतिहास' पृ० ६३३–६३४) इस सम्वन्ध में देखिए—मुहाणोत नैणसी की ख्यात, पत्र १२, पृ० १ । वीर विनोद, भा० १ पृ० ३३४ ।

इतिहास और शिलालेखो के आधार पर महमूद और राणा कुम्भा मे कोई लडाई होना अथवा राणा का उसके आधीन होना नही पाया जाता है । महमूद के पूर्वज कुतुवुद्दीन से अवश्य ही कुम्भा का युद्ध हुआ था जवकि उसने मालवा के महमूदशाह के साथ मिल कर चित्तौड पर आक्रमण किया था । इस युद्ध में कुतुवुद्दीन और मालवा का सुलतान दोनो ही राणा से हार कर अपने अपने देशो को लौट गए थे । (देखिए—वि० स० १५१७ (ई० म० १४६०) मार्ग० वु० ५ का कीर्तिस्तम्भप्रशस्ति लेख) ।

प्रस्तुत काव्य में कवि परम्परा के अनुसार ही कवि ने अपने प्रशसनीय सुलतान के समकालीन, प्रसिद्ध और पराक्रमी कुम्भा को उसके आधीन होना लिख दिया है । डा० साँकलिया द्वारा सम्पादित दोहाद के शिलालेख में भी कुम्भा का महमूद के साथ कोई सम्वन्ध वर्णित नही है । (स०) ।

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१—काव्य पद्यात्मक है ।	१—लेख पद्यात्मक है ।
२—काव्य की भाषा सस्कृत है ।	२—लेख सस्कृत भाषा मे है ।
३—काव्य की हस्तलिखित प्रति डा० बूलर ने गुजरात में प्राप्त की ।	३—लेख वडौदा मे उत्तर-पूर्व मे ७७ मील पर दोहाद में प्राप्त हुआ ।
४—राजविनोद की हस्तलिखित प्रति में सन् सम्वत् नही दिया हुआ है परन्तु लेख व पृष्ठ मात्रा के आधार पर १५०० और १६०० ई० के बीच की लिखी ज्ञात होती है ।	४—शिलालेख विक्रम सम्वत् १५४५ शक सम्वत् १४१० (२४ आपरेल, १४८८ ई०) का लिखा हुआ है ।
५—राजविनोद महमूद बेगडा के शासन-काल (१४५८ से १५११ ई०) में ही रचा गया था । अथवा, जैसे कि ऊपर अनुमान लगाया गया है १४६३ से १४६९ के बीच मे लिखा गया था ।	५—शिलालेख भी महमूद बेगडा के शासन काल में ही उसके राज्यारोहण के समय से लगभग ३० वर्ष बाद १४८८ ई० में लिखा गया था ।
६—राजविनोद सरस्वती वन्दना से आरम्भ होता है । प्रथम सर्ग को सुरेन्द्र सरस्वती-सम्वाद नाम दिया गया है । वास्तव मे, सम्पूर्ण काव्य ही सरस्वती के द्वारा अभिगीत है । 'महमूदपातसाहे अभिनववर्णने प्रसक्ता सरस्वती सरसपदानि व्यतानीत् ॥३२॥ स० ४ ।	६—शिलालेख भी काश्मीरवासिनीदेवी अर्थात् सरस्वती की वन्दना से प्रारम्भ होता है । (डा० साँकलिया का नोट एपि० इडिका जन० १९३८ पृ० २१३) । डा० साँकलिया का कथन है कि यह देवी ब्राह्मी अथवा सरस्वती प्रतीत होती है । राजविनोद में भी सरस्वती को 'ब्राह्मि' नाम से सम्बोधित किया है । (पद्य २ सर्ग २रा)
७—राजविनोद में दिया हुआ बेगडा का वंशानुक्रम इस प्रकार है:— मुदफ्फर, महम्मद, (१) अहम्मद, महम्मद, (२) महमूद । यह वशानुक्रम मुसलमान इतिहासकारो के आधार से भिन्न है ।	७—शिलालेख में दिया हुआ वशानुक्रम भी इस प्रकार है — मुदाफर, महमद, (१) अहमद, महम्मद, (२) महमूद । यह वशानुक्रम भी मुस्लिम इतिहासकारो द्वारा दिये हुये वशानुक्रम से भिन्न है ।
८—राजविनोद के दूसरे सर्ग के ३० पद्यो में महमूद के पूर्वजों के पराक्रम का वर्णन	८—शिलालेख में कुल २९ पद्य हैं जिनमे से पहले ६ पद्यो में तो महमूद के पूर्वजो

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
है। शेष सर्गो में स्वय महमूद के पराक्रमो (१४५८ से १४६९ ई० तक) का वर्णन है।	का वर्णन है और शेष २० पद्यो में महमूद के राज्यकाल में १४५८ ई० से १४८८ ई० तक की घटनाओ का वर्णन है।
९—प्रथम सर्ग के तीसरे पद्य में कवि ने लिखा है कि "पूजोपहाराय मयोपनीत कवित्वपुष्पञ्जलिरेष रम्य ।" इससे विदित होता है कि महमूद की कृपा प्राप्त करने के लिये (सम्भवत) उसके दरवार में प्रवेश पाने के लिये ही यह काव्य लिखा गया था।	९—शिलालेख की रचना का प्रकार प्राय राजविनोद के समान ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजविनोद के कर्ता ने ही वहुत समय तक सुलतान की कृपा का उपभोग कर चुकने के वाद इसकी रचना की थी। शिलालेख में वहुत से ऐसे पुरुषो और स्थानो का उल्लेख है जिनका राजविनोद में वर्णन नही है। अत स्पष्ट है कि यह राजविनोद के रचनाकाल से शिलालेख के समय (१४८८ ई०) तक की घटनाओ का वर्णन उसी कवि ने इस लेख मे किया है।
१०—राजविनोद मे महमूद के पूर्वज अहमद को अहमदेन्द्र लिखा है। (पृ० ५ व ६)	१०—शिलालेख मे भी अहमद को अहमदेन्द्र लिखा है। (पद्य ४)
११—राज विनोद, सर्ग २, पद्य १८ में महमूद द्वारा पावागढ पर आक्रमण करने का वर्णन है— "यस्य प्रतापभरपावकसङ्गमेन दग्धस्य पावकगिरे शिखरान्तरेषु। प्रेक्षन्त जर्ज्जरसुधाविधुराणि भस्मराशिप्रभाभि रिपवो निजमन्दिराणि ॥"	११—शिलालेख में पावकदुर्ग पर (नवम्बर १४८४ ई०) चढाई का उल्लेख यो किया है— "जित्वा पावक (दुर्गं) पित्रारुद्धं प्रतापतापूर्वं ॥१०॥ महमूदमहीपालप्रतापेनैव पावकम्। प्रविश्य ज्वालितं सर्वं वैरिवृन्द पतगवत्॥११॥ जीवंतं तत्पतिं (वद्ध्वा) दुर्गं नीत्वा महावल। चकार तत्पुरे राज्यं महमूदमहीश्वर: ॥१२॥ डा० साँकलिया ने लिखा है कि पावागढ लेने के लिये अहमद का प्रयत्न असफल हुआ था। (एपि० इण्डि०, जन० १९३८ पृ० ३२१।

उदयराजकृत राजविनोद	दोहाद का शिलालेख
१२—मुदफ्फर के पुत्र महमद के विषय में वर्णन करते हुए राजविनोद (सर्ग २ प० १०) में नन्दपद और पल्लिवन का उल्लेख है — "आद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत्पल्लिवने भ्रमन्ति" ॥६॥ फिर, नन्दपद के राजाओ के विषय में लिखा है — 'विभिन्नप्राकारसौधस्फुरद्देहमाला.' यहाँ 'विभिन्न प्राकार' पद से विदित होता है कि पल्लिवनान्तर्गत नन्दपद में उस समय कोई किला भी था । यहाँ मुदफ्फर के पुत्र महम्मद के समय के पल्लिवन मे तात्पर्य्य है ।	१२—दोहाद शिलालेख के पद्य १८ में पल्लिदेश का उल्लेख है । इस देश पर वेगडा सुलतान के मुख्य मन्त्री इमादल का शासन था— "पल्लीदेशाधिकारं च पुण्यं पुण्यमतिस्तदा दुष्टारिहृदये राज्यं दुर्गमेनं चकार वै ॥१८॥" डा० साँकलिया का मत है कि गोधरा तालुका में पाली नामक स्थान ही पल्लि देश है । पल्लीवन और पल्लिदेश एक ही हैं । यहाँ वेगडा के समय के पल्लि देश से तात्पर्य है ।
१३—राजविनोद में 'गायासदीन' उपाधि का प्रयोग महमूद वेगडा के पिता महम्मद के लिए हुआ है — "गायासदीन इति साहि महंमदेन्द्र."	१३—दोहाद शिलालेख के पद्य ७ में—"श्री श्याम (दीन) प्रभो अन्वये साह श्री महमूद वीर नृपति . जात " लिखा है । यह भी महमूद के पिता ही की उपाधि है, महमूद की नही, जैसाकि पद्य पढने से प्रतीत होता है । महमूद को सिक्कों और लेखो में 'नासिर उद्दुनियाँ वा-उद्-दीन' (ससार और धर्म का रक्षक) लिखा है । अहमद (१) के पुत्र महमद (२) को भी सिक्को में गायासउद्दीन लिखा है । (एपि० इन्डि० जन० १६३८ पृ० २१६)

इस प्रकार दोहाद के शिलालेख और राजविनोद काव्य की तुलना करने से हम नीचे लिखे निष्कर्षों पर पहुँचते है —

(१) प्रयागदास का पुत्र उदयराज महमूद वेगड़ा (१४५८-१५११ ई०) का हिन्दू राजकवि था ।

(२) उदयराज ने यह सप्तसर्गात्मक 'राजविनोद महाकाव्य' संस्कृत में लिखा है और इसमें महमूद वेगडा व उसके पूर्वजो का वर्णन है । यह काव्य वेगडा के राज्य के पहले दस वर्षो (१४५८-१४६८) में लिखा गया था ।

(३) इसके बाद भी दो दशको तक वह महमूद के दरबार में ही रहा और उसके पूर्वजो व उसके पराक्रमो के वर्णन मे अभिरुचि रखता रहा।

(४) राजविनोद और दोहाद के शिलालेख की तुलना से यह धारणा बनती है कि यह शिलालेख इसी कवि की पूर्व रचना की सक्षिप्त और सम्पूर्ण आवृत्तिमात्र है।

'एपिग्राफिआ इन्डिका' जनवरी, सन् १९३८, भाग २४ अक ४ मे यह लेख इसके मूल सम्पादक डाक्टर एच० डी० साँकलिया की टिप्पणी सहित प्रकाशित हुआ है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। उक्त लेख को ज्यो का त्यो एव डाक्टर साँकलिया की टिप्पणी का अनुवाद, आवश्यक टिप्पणियो सहित, इसी पुस्तक मे पृष्ठ २३ से प्रकाशित किया जा रहा है।

जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है इस काव्य की एकमात्र प्राचीन हस्तलिखित प्रति बम्बई सरकार के सग्रहालय की सम्पत्तिरूप है जो पूना के भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में सुरक्षित है। इस प्रति के कुल २८ पन्ने है। इसके लिखे जाने का कोई समयोल्लेख प्रति मे नही दिया गया है। इससे यह तो निश्चित नही कहा जा सकता कि यह किस समय में लिखी गई होगी परन्तु, प्रति की जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखते हुए प्रतीत होता है कि यह प्राय रचनाकाल के बहुत पीछे लिखी हुई नही है, और यह तो निश्चित ही है कि उसी शताब्दी में लिखी हुई तो अवश्य है। इसको किसी राम नामक लिपिकार ने अपने आत्मज के पठनार्थ लिखा है। यह कथन अन्तिम उल्लेख से ज्ञात होता है। पाठको के अवलोकनार्थ, प्रति के अन्तिम पत्र का चित्र भी अन्यत्र दिया जाता है जिससे प्रतिकी लिपि आदि का साक्षात् परिचय मिल सकेगा। प्रति का पाठ प्राय शुद्ध है। पूरे काव्य में कोई ४-५ ही स्थल ऐसे दृष्टिगोचर होते हैं जो अशुद्ध कहे जा सकते है। इससे मालूम होता है कि लिपिकार श्रीराम स्वय अच्छा संस्कृत का विद्वान् होगा।

महमूद बेगडा गुजरात के सुलतानो में प्रसिद्ध और लोकप्रिय सुलतान हुआ है। सभी हिन्दू अथवा मुसलमान इतिहास लेखको ने समान रूप से इसकी प्रशसा लिखी है। इन्ही के आधार पर अग्रेज इतिहासकारो ने भी इसके इतिहास पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। मूलत यह सुलतान राजपूत वंश का था और इसके पूर्वजो ने किस प्रकार सत्ता हाथ में लेकर गुजरात का स्वतत्र राज्य स्थापित किया, इसका विवरण 'मीराते सिकन्दरी' 'मीराते अहमदी,' 'तवारीख मोहम्मदशाही,' कॉमिसरियट् की 'हिस्ट्री ऑफ गुजरात' व किन्लाक् फार्व्स् कृत 'रासमाला' आदि पुस्तको के आधार पर सक्षिप्त रूप मे 'वश परिचय' शीर्षक लेख में अन्यत्र दिया गया है। इस लेख में आवश्यक पाद-टिप्पणियो के साथ राज-विनोद महाकाव्य के वे श्लोक भी उद्धृत किए गए है जिनसे मुख्य-मुख्य ऐतिहासिक घटनाओ पर प्रकाश पडता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जावेगा कि राजविनोद महाकाव्य केवल साहित्यिक विनोद न होकर अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी रखता है।

इस महाकाव्य के कर्त्ता कवि उदयराज के विषय मे अभी और कोई विशेष परिचय प्राप्त नही है। कृति को देखते हुए यही प्रतीत होता है कि वह महमूद का समकालीन

कवि था। सम्भव है, उसके दरवार मे भी उसे स्थान प्राप्त हो। प्रस्तुत काव्य के द्वारा कितनी ही ऐतिहासिक घटनाओ व महमूद के चरित्र पर तो प्रकाश पड़ता ही है, साथ ही अपनी कृति के लिए समयानुसार विषय चुनकर संस्कृत काव्य परम्परा की श्रृंखला में एक कडी जोडने का श्रेय भी कवि को अवश्य ही प्राप्त है।

इस कृतिके इस प्रकार सपादन और प्रकाशन में राजस्थान पुरातत्त्वमन्दिर के सम्मान्य संचालक आचार्य श्रीजिनविजयजी की ही प्रेरणा और मार्ग-दर्शन मुख्यत. कारणभूत है, अत इनके प्रति आन्तरिक कृतज्ञभाव प्रकट करना अपना परम कर्त्तव्य मानता हूँ।

यदि मध्यकालीन इतिहास के विशेषज्ञ इस ऐतिहासिक काव्य से अपनी गवेषणा में कोई सहायता प्राप्त करके इतिहास के तथ्यो पर अधिक प्रकाश डाल सकेंगे तो इसके प्रकाशन का श्रम सफल समझा जा सकेगा।

गोपालनारायण



महमूदबेगड़ा का वंश-परिचय

गुजरात के राजपूत सुलतानों का मूलपुरुष जिसने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था उसका नाम सहारन था। बाद में उसकी उपाधि व उपनाम वज़ीर-उल्-मुल्क हुआ। वह टाँक (तक्षक) जातीय सूर्यवंशी क्षत्रिय* था इसीलिए गुजरात के इतिहास में इसके वंशजों का 'राजपूत सुलतान' नाम से उल्लेख किया गया है।

भगवान् श्री रामचन्द्र जी से कितनी ही पीढ़ियों बाद मुहुस हुआ। उसी के कुल में क्रम से दुर्लभ, नाक्त, भूक्त, मंडन, भुलाहन, शीलाहन, त्रिलोक, कुँअर, दरसप, हरीमन, कुँअरपाल, हरीन्द्र, हरपाल, किन्द्रपाल, हरपाल और हरचन्द हुए। सहारन हरचन्द का पुत्र था और थानेश्वर के पास एक गाँव में रहता था। उसके छोटे भाई का नाम साधु था। वे दोनों भाई जमींदारी का काम करते थे।

एक बार दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुग़लक के काका का लड़का शाहजादा फ़ीरोजशाह शिकार को निकला और अपने साथियों से बिछुड़ कर सहारन के गाँव के पास जा पहुँचा। उस समय सहारन, उसका छोटा भाई साधु और दूसरे राजपूत एक जगह बैठे हुए थे। एक राजपूत ने फीरोज के पैर में राजचिह्न पहचान लिया। सहारन और साधु उसे अपने घर ले गए और उसका आगत-स्वागत किया। साधु की बहन ने उसे शराब पिलाई और उसी की लहर में फीरोज ने अपना परिचय दे दिया। साधु की बहन और फीरोज की शादी हो गई। तदनन्तर, वे दोनो भाई फीरोजशाह के साथ दिल्ली चले गये और इसलाम धर्म को ग्रहण कर लिया। बादशाह ने सहारन को वज़ीर-उल्-मुल्क का खिताब दिया। वजीर-उल्-मुल्क के जफरखाँ और शमशेर खाँ नामक दो लड़के हुए। जफर खाँ ही आगे चल कर मुजफ्फर खान के नाम से इस वंश का गुजरात का प्रथम शासक हुआ।

बादशाह के कहने से सहारन और साधु ने कुतुब उल् आफताब-हजरत मुखदुम जहानिआँ से इसलाम धर्म की दीक्षा ली थी। सहारन का पुत्र जफर खाँ भी इन्हीं महात्मा का शिष्य था। एक दिन हजरत के मठ पर कुछ फकीर इकट्ठे हुए। उस समय महात्मा मुखदुम के पास खाने पीने का कुछ भी सामान नहीं था। जफ़र खाँ को यह बात मालूम थी। वह तुरन्त ही अपने घर से व बाजार से मिठाइयाँ आदि ले आया और सभी फकीरों को भोजन करा दिया। फ़क़ीरों ने तृप्त होकर जोर से 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाया। जब मुखदुम जहानिआँ को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने जफर खाँ को बुलाकर प्रसन्नता पूर्वक कहा 'जो तुमने फक़ीरों को भोजन कराकर तृप्त किया है उसके बदले में मैं तुम्हें सम्पूर्ण गुजरात की हुकूमत प्रदान करता हूँ।' इस प्रकार जफरखाँ को फकीर का वरदान प्राप्त हुआ।

---

*वंशस्सहस्रांशुभवो जगत्यां जागर्त्यसौ राजभिरर्चनीयः।
कर्णोपमो यत्र किलावतीर्णः श्रीमान् साहि मुदप्फरेन्द्रः ॥१॥ राजविनोद-सर्ग २

हिजरी सन् ७९३ (१३९१ ई०) में यह खबर आई कि गुजरात के सूबेदार मुकर्रर खाँ ने जो रास्ती खाँ के नाम से प्रसिद्ध था, बलवा कर दिया। उसी वर्ष के रवीउल-अव्वल महीने की दूसरी तारीख को सुलतान मोहम्मद ने जफर खाँ को एक लाल तम्बू बख्शीश किया और निज़ाम मुकर्रर खाँ को दण्ड देने के लिए गुजरात की तरफ भेजा। उसी महीने की चौथी तारीख को सुलतान मोहम्मद जफर खाँ को विदा करने के लिए होज़खास पर गया और उसके पुत्र तातार खाँ को अपने पास रखकर पुत्रवत् पालन करने का वचन दिया।

हिजरी सन् ७९४ (१३९२ ई०) में सनहुमन नामक ग्राम के पास जफर खाँ और मुकर्रर की मुठभेड़ हुई और इस लड़ाई में जफरखाँ विजयी हुआ। निज़ाम युद्ध में मारा गया और जफर ने पाटण में प्रवेश किया।

सन् ७९५ हिज्री में खान खम्भात[1] की तरफ गया और मुसलमानी रीति के अनुसार गुजरात को अपने आधीन कर लिया।

हिजरी सन् ८०६ (ई० स० १४०३) में मुजफ्फरशाह ने तातार खाँ को गद्दी सौंप दी और उसको नासिरउद्दीन मोहम्मद शाह की पदवी धारण कराई। वह स्वयं आशावल कसबे में आकर रहने लगा और सब झंझट छोड़ दिया।

सुलतान मोहम्मदशाह इसी वर्ष के जमादिउल आख़िर महीने में आशावल क़सबे में तख्त पर बैठा। एक सप्ताह बाद ही उसने नांदोल[2] के हिंदुओं पर चढ़ाई की और उनको हराया। फिर, उसने अपने लश्कर को साथ लेकर दिल्ली की ओर कूच किया। यह खबर सुनकर इक़बाल खाँ के मन में बहुत संताप उत्पन्न हुआ[3]। परन्तु शक्तिवान्

(१) समुद्गिरन् कच्छमहीपु येन डिण्डीरपाण्डूनि यशांसि खड्ग ।
स्फूर्जद्द्विपच्छोणितपङ्कलिप्त प्रक्षालित पश्चिमवारिराशौ ॥३॥
रा० वि० सर्ग २

(२) यस्य प्रसिद्धैर्द्विरदैर्विभिन्नप्राकारमौक्स्फुरदट्टमाला ।
अद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥६॥
रा० वि० सर्ग २।

(३) तवारीख मोहम्मदशाही में लिखा है कि फीरोज़शाह के पुत्र सुल्तान मोहम्मद की मृत्यु के बाद दिल्ली में एक बड़ा विद्रोह हुआ। प्रत्येक विद्रोही सरदार दिल्ली का तख्त प्राप्त करना चाहता था। . . . इसी बीच में दिल्ली का राज्य कार्यभार एक वकील (प्रतिनिधि) के रूप में इकबाल खाँ के हाथ में आया। उस समय तातार खाँ पानीपत में था उसको जीतने के लिए इकबाल खाँ पानीपत को रवाना हुआ। तातार खाँ अपना सब सामान किले में रखकर लड़ाई के लिए तैयार हुआ और दिल्ली में घेरा डाला। तीसरे दिन इकबाल खाँ ने पानीपत का किला जीतकर तातार खाँ के सामान पर अधिकार कर लिया। तातार खाँ ने गुजरात में लश्कर लाकर दिल्ली पर चढाई करने का इरादा किया इसलिए वह अपने बाप से आकर मिला। इकबाल खाँ का वैर और दिल्ली का तख्त उसके मन से दूर न हुए। इकबाल खाँ भी उससे सशङ्क रहता था। निम्नांकित पद्य में सम्भवतः मल्लखान से इकबालखां का ही तात्पर्य है —

के महीनेमें तातार खाँ की तबीयत एकदम बिगड़ गई और अच्छे अच्छे वैद्यों के दवा करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। अन्त में, तातार खाँ की मृत्यु हो गई और उसका शव पाटण में लाकर दफनाया गया।

गुजरात की हकीकत जानने वाले लोगो का कहना है कि कुछ दिखावटी मित्रो के कहने से तातार खाँ ने अपने पिता जफर खाँ को कैद कर दिया था और स्वय मोहम्मद-शाहका नाम धारण करके गद्दी पर बैठ गया।.... .. ..कुछ दिनो बाद उसके पास रहनेवाले जफरखाँ के हितचिन्तको ने उसे जहर दे दिया । इसीलिए लोग उसको 'खुदाई शहीद' (The Martyred Lord) कहते हैं। इससे भी प्रतीत होता है कि उसकी मृत्यु स्वभाविक रूप से नहीं हुई थी।

सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के बाद जफर खाँ फिर गद्दी पर बैठा। राज्य के नौकर चाकर सब उसके आधीन हो गए और उसने भी सबको आश्वासन दिया।

प्राचीन इतिहास लेखको ने लिखा है कि सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के बाद राज्य के बड़े बड़े अमीरो और अधिकारियो ने इकट्ठे होकर जफर खाँ से प्रार्थना की कि बादशाह के वंश में दिल्ली के शासन को सम्हालने वाला अब कोई नहीं रह गया है और वहाँ पर गड़बड़ी फैल रही है। गुजरात के शासन जैसे बड़े कार्य को सम्हालनेवाला आपके सिवाय अन्य पुरुष दिखाई नही देता है। अत समस्त प्रजा का यह मत है कि आप गुजरात का राजच्छत्र धारण करें। इससे सबको आनन्द होगा। ऐसी इच्छा रखनेवालो की प्रार्थना पर (?) बीरपुर ग्राम में हि० स० ८१० (१४०७ ई०) में सुलतान मोहम्मद की मृत्यु के तीन वर्ष और सात महीने बाद जफर खाँ ने राज्यछत्र धारण करके मुजफ्फरशाह नाम धारण किया।[1]

इस प्रकार सुलतान का पद धारण करने के पश्चात् मुजफ्फरशाह ने मालवा में धार के हाकिम अलपखान (दिलावरखाँ के पुत्र) को आधीन करने के लिए चढ़ाई की और उसको कैद करके उसके देश का शासन नुसरत खाँ को सौंप दिया।

इसी बीच में खबर मिली कि जवानपुर के सुलतान इब्राहीम ने दिल्ली पर अधिकार करने की नीयत से कन्नोज के आगे लड़ाई का निशान रोप दिया है। उस समय दिल्ली के तख्त पर सुलतान मोहम्मदका पुत्र महमूद था। उसकी सहायता करने के लिए मुजफ्फर-शाह ने दिल्ली की तरफ कूच किया। यह खबर सुनकर सुलतान इब्राहिम वापस जवानपुर चला गया। सुलतान मुजफ्फर ने उसका पीछा किया और फिर अपनी

उदित्वरो यस्य बभौ जगत्या सहस्रभानुप्रतिम प्रताप ।
यो मल्लखानाख्यमुलूकमिन्द्रप्रस्थस्थमुद्धेजितवान् द्विषन्तम् ।।८।।
रा० वि० सर्ग २ ।

(१) दिल्लीपुराद् गूर्ज्जरदेशमेत्य दधार यो मूर्द्धिन सितातपत्रम ।।२।।
रा० वि० सर्ग २ ।

राजधानी को लौट आया। उस समय वह धार के पूर्व शासक अलपखाँ को अपने साथ लेता आया था।

अलपखाँ एक वर्ष तक कैद में रहा। इसी बीच में उसी के एक उमराव मूसा खाँ ने, जो माँडू का हाकिम था, मालवे के थोड़े से भाग पर अधिकार कर लिया। इस पर अलपखाँ ने अपने हाथ से एक अर्जी लिखकर मुजफ्फरशाह के पास भेजी कि मेरे एक अधीनस्थ उमराव ने मालवे के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लिया है; यदि आप मुझे इन बेड़ियों से मुक्त करके उपकार की कैद में डाल दें तो थोड़े ही समय में मालवे पर पुनः अधिकार प्राप्त करके अपनी शेष आयु आपके गुलाम की तरह विताऊँगा। सुलतान ने उसपर कृपा करके मुक्त[1] ही नहीं कर दिया वरन् अपने पुत्र अहमदखाँ को लश्कर देकर सहायता के लिए उसके साथ भी भेजा। मूसाखाँ में सामना करने की शक्ति कहाँ थी? वह भाग गया और शाहजादा अलपखाँ को गद्दी पर बिठा कर वापस आया।

मुजफ्फरशाह ने हिजरी सन् ८१२ (ई० १४०९) में कुम्भकोट के हिन्दुओं के विरुद्ध सुबावन्द खाँ की सरदारी में फौज भेजी जो विजयी होकर वापस आई।

मुजफ्फरशाह की मृत्यु के विषय में तवारीख बहादुरशाही में इतना ही लिखा है कि सुलतान की मृत्यु हि० स० ८१३ (ई० स० १४१०) में हुई। कुछ जानकार लोग इस वृत्तान्त के विषय में इस प्रकार कहते है कि आशावल कसबे के कोलियों ने सुलतान की सत्ता को स्वीकार नहीं किया और घाट बाट पर लूट पाट करने लगे। मुजफ्फरशाह ने एक हजार सिपाही साथ देकर अहमदखाँ को उन्हें दबाने के लिए भेजा। अहमदखाँ ने शहर से बाहर निकल कर विद्वानों को बुलाया और उनसे प्रश्न किया कि 'एक शख्श किसी दूसरे शख्श के बाप को बिना कुसूर मार डाले तो उससे बाप के मारने का बदला लेना धर्मानुकूल है या नहीं?" सभी विद्वानो ने कहा "बदला लेना ठीक है।" विद्वानों की यह सम्मति एक कागज पर लिखाकर अहमदखाँ ने अपने पास रक्खी। दूसरे दिन वह अपने सवारो सहित शहर में दाखिल हुआ और सुलतान को क़ैद करके मार डाला। सुलतान ने मरते समय अहमदखाँ को कुछ शिक्षाएं दीं, जो इस प्रकार हैं —

"पुत्र! तुमने इतनी जल्दी क्यों की? कुरान में लिखा है कि मृत्यु तो अन्त में आवेगी ही—एक घड़ी पहले या पीछे। मेरी इन शिक्षाओं पर ध्यान रखना। इनसे तुझे लाभ होगा।

जिन लोगों ने तुझे यह काम करने के लिए उकसाया है उनसे दोस्ती मत रखना वरन् उनको मार डालना क्योंकि दगाबाज का खून हलाल (उचित) है।

शराब पीने का शौक बिलकुल मत करना क्योंकि शराब के प्याले में दु:ख के समुद्र का तूफान रहता है।

---

(१) मुमोच वन्दीकृतमल्पखानमनल्पवीर्यं बलवत्तरो य।
वश्यास्ततो मालवराजवन्दिमोक्षपदाख्य विरुद वहन्ति ॥४॥ रा० वि० सर्ग २।

शेख मलिक और शेर मलिक को मार डालना क्योंकि ये राज्य में बखेड़ा करने वाले हैं।

तू हमेशा कृपावन्त रहना। यदि तू अपने ही सुख में डूबा रहेगा तो देश में सुख चैन नहीं रह सकेगा।

गरीब दरवेशों (सन्तों) की फिकर रखना क्योंकि प्रजा के बल पर ही राजा ताज धारण किए रहता है।

प्रजा मूल है और सुलतान वृक्ष है। हे पुत्र! मूल ही से वृक्ष मजबूत होता है। इसलिए जहां तक हो सके वहां तक प्रजा से बिगाड़ नहीं करना चाहिए। हे पुत्र! यदि ऐसा करोगे तो तुम अपनी ही जड़ काट डालोगे।"

इसके थोड़ी ही देर बाद सुलतान इस क्षणभगुर ससार को छोड़कर चल बसा[1]। यह घटना सफर महीने के अन्तिम दिनों में हुई। उसको पाटण शहर के किले के अन्दर कब्र में दफनाया गया।

मुजफ्फरशाह के बाद उसका पौत्र सुलतान मोहम्मद का पुत्र अहमदशाह— सुल्तान अहमद नासिरुद्दीन अबुलफ़त अहमदशाह का पद धारण करके हिजरी सन् ८१३, तारीख १४ रमजान के महीने में गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी आयु २१ वर्ष की थी।

अहमदशाह के गद्दी पर बैठते ही उसके चचेरे भाई फीरोज खाँ ने अपना हक प्रकट किया और भड़ौंच में अपनेआपको सुलतान घोषित कर दिया। परन्तु अहमदशाहने कुछ समय के लिए उसके विद्रोह को दबा दिया। इसके बाद सुलतान ने आशावल[2] ग्राम की जलवायु को अपने अनुकूल मानते हुए वहीं पर १४१२ ई० में एक नगर बसाया जो उसीके नाम पर अहमदाबाद कहलाया[3]। आशावल ग्राम भी इस बड़े नगर का ही एक हिस्सा बन गया। अहमदाबाद उसी समय से गुजरात के बादशाहों की राजधानी रहता आया है।

---

१ मुजफ्फरशाह की मृत्यु २७ जनवरी सन् १४११ ई० को हुई। रासमाला पृ० ४३४

२ आशावल ग्राम आशा नामक भील के नाम पर बसा हुआ था। यही पर कर्ण सोलकी ने - कर्णावती पुरी बसाई थी। अलबेरूनी ने भी ४ शताब्दी पूर्व येशावल नगर का जिकर किया है।

३ अहमदाबाद का कोट हि० स० ८१६ (१४१३ ई०) में बन कर तैयार हुआ था। कहते हैं कि इस नगर की नीव रखने में अहमद नाम के चार व्यक्तियों का हाथ था। एक, कुतुबुल मुशायख शेख अहमद खतु, दूसरा सुलतान अहमद, तीसरा शेख अहमद और चौथा मुल्ला अहमद। पिछले दोनों व्यक्ति बहुत विद्वान् थे।

राज विनोद में अहमदशाह द्वारा नगर बसाए जाने का कोई वर्णन नही है।

उसी वर्ष के अन्त में फीरोज खाँ ने फिर राजगद्दी का दावा किया और मोडासा के स्थान पर अपना झण्डा खडा किया । ईडर का राव रणमल भी उसके साथ हुआ परन्तु शाह ने रूपनगर स्थान पर उनको परास्त कर दिया और राव व फीरोज खाँ प्राण वचाकर पहाडियो में भाग गए । थोडे दिन वाद राव में और फीरोज खाँ में भी अनवन हो गई और रणमल ने उसके हाथी और घोडे छीन कर शाह को भेंट कर दिए ।

मालवा के सुल्तान हुशगशाह ने गुजरात के शत्रुओ को आश्रय दिया तथा इस देश पर १४११ ई० व १४१८ ई० में हमले किये परन्तु शाह ने उसको हर वार परास्त कर दिया । अहमदशाह ने भी १४१६ ई० में मालवा पर हमला किया और हुशगशाह को भागकर माँडू के किले में शरण लेनी पड़ी[1] । १४२२ ई० में अहमदशाह ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु वह माँडू के किले पर अधिकार करने में सफल न हुआ ।

हि० स० ८१७ (१४१५ ई०) में अहमदशाह को गिरनार का किला देखने की इच्छा हुई इसलिए उसने विद्रोहियोको उसी दिशा में खदेड़ा । उस समय तक सौराष्ट्र के किसी भी राजा ने मुसलमानो के आगे सिर नहीं झुकाया था इसलिए सोरठ के राजा पर शेर मलिक को आश्रय देने का वहाना वना कर शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया । हिन्दू राजा ने सामना तो किया परन्तु मुसलमानो की युद्धप्रणाली से अनभिज्ञ होने के कारण वह जल्दी ही हार गया और भाग खड़ा हुआ । शाह ने गिरनार के किले तक उसका पीछा किया । इसके वाद कुछ वार्षिक कर देना स्वीकार करलेने पर वह अहमदावाद लौट गया । रास्ते में उसने सिद्धपुर के देवालयो को नष्ट करके वहुत सा धन व जवाहरात प्राप्त किए ।

गुजरात के वलशाली राजाओ के अतिरिक्त छोटे छोटे सरदारो को भी वश करने व उनसे कर वसूल करने में अहमदशाह को खूब प्रयास करना पडा था । ये लोग अपने अपने किलो में छुप जाते थे और जगलो में भाग जाते थे इसलिए इनसे कर वसूल करने में वहुत कठिनाई पडती थी । अन्त में शाह ने इन पर वार्षिक कर नियुक्त कर दिए और इनकी जमीनें व किले इनको वापस कर दिये ।

१४२६ ई० में शाह ने फिर ईडर पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की । वह जानता था कि ईडर के राज्य पर अधिकार रखना उसके काबू से वाहर की वात थी । वह यहाँ का किला कभी भी न ले सका था, इसलिए उसने यहाँ के रावो पर आतक जमाने के लिए हाथमती नदी के किनारे एक विशाल किला वनवाना शुरू किया । यह किला ईडरगढ पर झुके हुए पर्वत शिखरो पर से स्पष्ट दिखाई पडता था । वादशाह ने इसका नाम अहमदनगर रक्खा । तत्कालीन ईडर का राव पूंजा तो

---

१ "हुशङ्गशाहेनधिवामदुर्गमाक्रामता मण्डपमाग्रहेण।
येनोच्चकैराचकृषे करेण पदे पदे मालवमण्डलश्री ॥११॥" स० वि० सर्ग २

एक खड्डे में गिरकर मर गया और उसके पुत्र नारायणदास ने चाँदी के तीन लाख टंक वार्षिक कर देना स्वीकार करके संधि करली [१]। परन्तु दूसरे ही वर्ष १४२८ ई० में वह संधि टूट गई और अहमदशाह ने १४ नवम्बर को वह किला जीत लिया। वहीं पर उसने एक विशाल मसजिद भी बनवाई।

इसके बाद (८३५ हि०, १४३१ ई०) दक्षिण के बहमनी सुलतान, सालसेट, माहिम और बम्बई द्वीप पर सुलतान ने विजय प्राप्त की। दिव, घोघा और खम्भात के द्वीप भी गुजरात के इस सुलतान के अधिकार में थे। कितनी ही बार गुजरात की विजयिनी सेना इन द्वीपो से सोने चाँदी और जरकशी के कपड़े व जवाहरात लेकर घर लौटी थी। [२]

अहमदशाह की मृत्यु ४ जुलाई सन् १४४३ ई० को अहमदाबाद नगर में हुई और उसको जामा मसजिद के सामने दफनाया गया।

गुजरात के सुलतानो में अहमदशाह को बहुत प्रजाप्रिय और न्यायी सुलतान के रूप में याद किया जाता है। एक कवि ने उसके लिए लिखा है कि "हे राजा! तेरे न्यायपूर्ण समय में किसी मनुष्य को फरियाद करने की आवश्यकता नहीं पडी [३]।" यह कविता प्रेमी और गुणग्राहक था।

अहमदशाह के बाद उसका पुत्र मुहम्मदशाह गद्दी पर बैठा। यह बहुत विलासी [४] था और राजकाज में विशेष रुचि नहीं रखता था। इसमें बादशाह के पदयोग्य बुद्धि भी नहीं थी; परन्तु, वह बहुत उदार [५] था इसीलिए उसको लोग 'जरबख्श' कहते थे [६]।

गद्दी पर बैठते ही उसने ईडर पर चढ़ाई की। राव कुछ दिनो तक तो इधर उधर पहाड़ियो में छिपता रहा, बाद में उसने अपने अपराधो के लिए क्षमा माँग ली। १४४९ ई० में सुलतान ने चम्पानेर [७] के रावल गंगादास पर चढ़ाई की और उसको हराकर किले में भाग जाने के लिए बाध्य किया। परन्तु, गगांदासने बाद में मालवा के खिलजी सुलतान को अपनी सहायता के लिए राजी कर लिया

---

(१) फरिश्ता।

(२) इन सब घटनाओ का उल्लेख राजविनोद के इस श्लोक मे किया गया है -
विभज्य दुर्गाणि निहत्य वीरान् हठान् महाराष्ट्रपतिं विजित्य।
जग्राह रत्नाकरसारजातमनर्गलैर्यः स्वबलैर्बलीयान् ॥१२॥ रा० वि० सर्ग २

(३) कुर्वन्तु गर्वं बहवोऽप्यखर्वमुर्वीश्वराः श्रीगुणगौरवेण।
अहम्मदेन्द्रस्य जतानुरागसौभाग्यलेश न परे लभन्ते ॥१३॥ रा० वि० सर्ग २

(४) रूपश्रियैव विजितं समभून् मनोभू श्रीमन्महम्मदनराधिपतेरनङ्ग।
अस्य स्त्रिय. खलु जगज्जयिनोऽपि तस्य वीक्ष्यैव तत्क्षणममु विवशीबभूवु ॥१६॥
रा०-वि० सर्ग २.

(५) रा० वि० १७,१९ सर्ग: २; (६) मीराते सिकन्दरी।

(७) रा० वि० १८, स० २

तव इस नवीन शत्रु के सामने मुहम्मदशाह न टिक सका और वुरी तरह हारकर लौट गया[1]। थोडे ही समय वाद हि० स० ८५५ (ई० १४५१-५२)के मोहर्रम मास की २०वीं तारीख को उसकी मृत्यु हो गई।[2]

मुहम्मदशाह के वाद हि० स० ८५५ (१४५१ ई०) के मोहर्रम मास की ११ वीं तारीख को उसका वडा शाहजादा कुतुवउद्दीन तख्त पर वैठा। उसी समय उसे मालूम हुआ कि राजधानी से कुछ ही मील की दूरी पर मालवा के सुलतान की सेना आ पहुँची है इसलिए आगे वढकर उसका सामना किया। मालवा के महमूद खिलजी को वापस लौटना पडा और कुतुव की जीत हुई। इसके वाद इन दोनो सुलतानो ने मिलकर हिन्दुओ के विरुद्ध युद्ध-योजना करते रहने की प्रतिज्ञा की और मेवाड के राणा कुम्भा के राज्य को आपस में वांट लेने का मनसूवा किया।

मुजफ्फरशाह के भाई का वशज शम्स खा उस समय नागौर का स्वामी था इसलिए उसने राणा के विरुद्ध सहायता करने के लिए कुतुवशाह से प्रार्थना की। शाह ने अपनी फौजें उसकी सहायता के लिए भेजीं परन्तु राणा ने उन्हें वुरी तरह हरा दिया। इस पर कुतुवशाह फिर नागौर की तरफ स्वय रवाना हुआ और मेवाड के अधीनस्थ सिरोही के राजपूतो को जीत लिया। फिर वह पहाड़ी मार्ग से कुम्भलमेर के किले की ओर वढ़ा परन्तु वीच ही में राणा ने उस पर आक्रमण कर दिया। इसके वाद राणा में और कुतुवशाह में सन्धि हो गई।

अव, मालवा के सुलतान ने कुतुवशाह को फिर भड़काया और चम्पानेर के स्थान पर राणा के राज्य को आपस में वांट लेने की सधि पर हस्ताक्षर किए। दूसरे वर्ष, कुतुवशाह ने फिर आवूगढ को जीत लिया। वहाँ कुछ फौज छोडकर वह सिरोही पहुँचा और एकवार फिर राणा से सधि हो गई। अगले वर्ष १४५८ ई० में राणा ने फिर नागौर पर चढाई की। वहुत देर करके कुतुवशाह उसका सामना करने के लिए रवाना हुआ और जय प्राप्त करता हुआ कुम्भलमेर की तरफ वढ़ा परन्तु उसको वीच ही में रुकना पड़ा। इसके थोडे ही दिनो वाद वह अहमदावाद लौट गया और मर गया।

कुतुवउद्दीन के वाद हिजरी सन् ८६३ (१४५८-५९) के रजव महीने की २३ वीं तारीख को अहमदशाह का पुत्र दाऊद गद्दी पर वैठा। परन्तु वह विलकुल अयोग्य सिद्ध हुआ[3] इसलिए गुजरात के अमीरो व उच्च राज्याधिकारियो ने निर्णय किया

---

(१) रासमाला (२) अथवा उसको जहर दे दिया गया। देखो रासमाला, मीराते सिकन्दरी, तवारीख अहमदशाही।

३ राजविनोद में कुतुवुद्दीन और दाऊद का कोई वर्णन नही है। दाऊद का नाम न होने का तो कारण स्पष्ट है क्योकि उसने केवल ७ ही दिन राज्य किया परन्तु कुतुवुद्दीन ने तो ८ वर्ष के लगभग राज्य किया था और मेवाड के राणा व मालावा के सुलतान से युद्ध करके उसने कीर्तिलाभ भी किया था। अन्य हिन्दू एव मुसलमान इतिहासकारो ने उसका उल्लेख किया है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि कुतुवुद्दीन फतहखाँ

कि मुहम्मदशाह के पुत्र फतहखाँ को गद्दी पर बिठाना चाहिए क्योंकि उसमें बादशाह होने के गुण भी पाए जाते हैं और आकृति में भी वह भव्य है।

फतहखाँ महमूदशाह के नाम से हि० स० ८६३ (१५१० ई०) के शअबान मास की पहली तारीख, रविवार के दिन अहमदाबाद में तख्त पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था तेरह वर्ष की थी।[1] यही महमूदशाह आगे चल कर महमूद बेगड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ और यही राजविनोद काव्य का चरित्र-नायक है।

तख्त पर बैठने के थोडे ही दिन बाद कुछ अविचारशील सरदारो ने वज़ीर ईमादउल् मुल्क के साथ झगड़ा करके उसको मार देने का षड्यन्त्र किया। परन्तु, सुलतान ने धीरज और चतुराई से ऐसी व्यवस्था की कि सब विद्रोह शात हो गया और इसके बाद में वज़ीर के विरुद्ध सर उठाने की किसी भी सरदार को हिम्मत न पड़ी।]

सन् १४६७ ई० में महमूद ने सोरठ पर चढ़ाई की परन्तु इस बार उसको विशेष सफलता नहीं मिली इसलिए उसने बहुत से जवाहरात और नकदी की भेंट लेकर राव से शत्रुता बन्द कर देने की आज्ञा दे दी[2]।

(महमूद बेगाडा का पहला नाम) का सौतेला भाई था और शुरू से ही उससे द्वेष रखता था। फतह खाँ की माता सिन्ध के बादशाह जाम जानु- हन की पुत्री थी। उसका नाम बीबी मुघली था। उसकी दूसरी बहन बीबी मिरघी थी। पहले उनके पिता ने बीबी मिरघी की शादी गुजरात के सुलतान मुहम्मदशाह के साथ और मुघली की हज़रत कुतुबुल अ।कृताब के पुत्र हज़रत शाह आलम के साथ करने का निश्चय किया था। परन्तु बीबी मधुली अधिक सुन्दरी थी इसलिए मुहम्मदशाह ने अपनी सत्ता और द्रव्य के दबाव से उसकी शादी अपने साथ करवाली। बीबी मिरघी का विवाह हजरत शाह आलम के स।थ हो गया। मुहम्मदशाह की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन के व्यवहार से असन्तुष्ट होकर मुघली अपने पुत्र फतह खाँ को लेकर शाहआलम के आश्रय में आकर रही। कुछ समय बाद बीबी मिरघी की मृत्यु हो गई और मुघली ने शाहआलम के साथ पुर्नविवाह कर लिया। इस प्रकार फतहखा का पालनपोषण व शिक्षा दीक्षा हज़रत शाह आलम ही ने किया। बीबी मुघली ने अपनी सेवाओ से प्रसन्न करके उनसे फतहखाँ के लिए गुजरात के तख्त का वरदान भी प्राप्त कर लिया था। कुतुबखा ने कई बार फतह खाँ को मार देने के प्रयत्न किए परन्तु हज़रत ने उसकी हर बार रक्षा की। राजविनोद महमूद की प्रशस्ति मे उसके आश्रित कवि द्वारा रचा हुआ काव्य है अत इसमें कुतुब का उल्लेख जानबूझ कर नही किया गया है। कविने तो यहा तक किया है कि कुतुबुद्दीन ने राणा कुम्भा पर जो विजय प्राप्त की थी उसका श्रेय भी अपने वर्णनीय आश्रयदाता महमूद को ही दे दिया है। वास्तव में राणा कुम्भा और महमूद बेगडा में किसी युद्ध का होना इतिहास में नही पाया जाता है। (सं)

(१) मीराते सिकंदरी

(२) रासमाला।

परन्तु, इससे उसको सतोष नहीं हुआ और वह फिर गिरनार पर हमला करने का बहाना ढूंढने लगा । दूसरे ही वर्ष उसे बहाना मिल भी गया ।

राव माण्डलिक राजचिन्हो को धारण किए हुए किसी मन्दिर में पूजा करने के लिए गया। जब महमूद को यह समाचार मिला तो उसे वह सहन नहीं कर सका और तुरन्त चालीस हजार फौज लेकर राव को शिक्षा देने के लिए रवाना हो गया। राव में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह मुसलमानो का सामना करता इसलिए उसने मुंहमाँगा कर दे दिया और राजचिह्न भी सुलतान को भेंट कर दिए। परन्तु, यह सब व्यर्थ हुआ और परम शूरवीर पृथ्वीराज चौहान का यह कथन कि 'एक वार उडाई हुई मक्खी की तरह शत्रु भी फिर फिर कर वापस आता है' उस पर ठीक ठीक लागू हो गया। उसी वर्ष के अन्त में महमूद ने सोरठ पर फिर चढाई कर दी। राव ने अपनी प्रजा को सकट से बचाने के लिए फिर मुंहमाँगा धन देना चाहा परन्तु महमूद ने उसे इसलाम धर्म स्वीकार करने के लिए वाध्य किया। राव ने कुछ उत्तर न देकर किले के दरवाजे वन्द कर लिए और महमूद ने घेरा डाल दिया। अन्त में, राव ने देखा कि उसके दुःखों का अन्त नहीं है तो उसने किले की चावियाँ सुलतान को सौंप दी और उसके कहने के अनुसार कलमा पढ लिया। (१४७० ई०)[1]

इस विजय के अनन्तर महमूद ने विभिन्न प्रांतो से बहुत से सय्यदो और विद्वानो को सोरठ में वसने के लिए वुलाया और एक नगर भी वसाया। इस नगर का नाम मुस्तफाबाद पड़ा। कहते हैं, यह नगर वहुत जल्दी ही तैयार होकर राजधानी की समानता करने लगा था। वर्ष का कुछ भाग महमूद यहीं विताता था।

जब वह इस नए नगर के भवनो का निरीक्षण कर रहा था उसी समय यह समाचार मिला कि कच्छ के निवासियो ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया है इसलिए वह उधर चढ़ चला और वहुत जल्दी ही उनको अपनी आधीनता स्वीकार करने के लिए वाध्य कर लिया। इसके अनतन्र महमूदशाह ने सिन्ध के जाटो और वलूचियो पर चढाई की और सिन्धु नदी तक देश के अतरग में घुसता चला गया। ये घटनाएं ई० स० १४७२ में हुई।[2]

सिन्ध की चढ़ाई के वाद महमूद ने जगत (द्वारका) और शङ्खोद्धार (वेट) द्वीप के सरदारो पर चढाई की। इसका कारण यह वतलाया जाता है कि मौलाना मोहम्मद समरकन्दी ने सुलतान के पास आकर द्वारका व बेट द्वीपके ब्राह्मणो की शिकायत की और महमूद ने उधर चढाई कर दी। उसने द्वारका की वहुत सी

(१) मीराते सिकन्दरी के लेखक का कहना है कि रावने सुलतान के कहने से इसलाम धर्म स्वीकार नही किया था वरन् एक फकीर का चमत्कार देखकर ऐसा किया था। उसे यह वोध देने वाले रसूलावाद के पीर शाहआलम थे।

(२) कॉमिसरियट्—हिस्ट्री आफ गुजरात, भा० १ (१९३८), पृ० १३०

इमारतो व मूर्तियो को तुड़वा दिया। इसके वाद वहीं एक मसजिद वनवाने के विचार से चार महीनो तक फौज को रोके रहा। तदनन्तर, शङ्खोद्धार द्वीप पर चढ़ाई की। वहाँ के राजा भीम ने २२३ वार युद्ध किया परन्तु अन्त में महमूद का वेड़ा पार उतर गया और वहुत से राजपूत मारे गए। एक छोटीसी नाव में बैठकर भागता हुआ भीम पकड लिया गया और अहमदावाद में लाकर मार दिया गया।[१]

सन् १४७६ ई० की वरसात मे सुलतान अहमदावाद की तरफ गया और शरद ऋतु में मुस्तफावाद आकर रहने लगा। वहीं आस पास के जगलो में वह शिकार के लिए निकलता था। कुछ दिनो वाद वह फिर अहमदावाद आ गया। एक वार वह शिकार खेलता हुआ अहमदावाद से ईशानकोण में वारह कोस की दूरी पर वात्रक नदी तक जा पहुँचा। वहाँ उसे ज्ञात हुआ कि लोग जभी तभी लूट पाट कर लेते है इसलिए उसके मन में विचार आया कि इस स्थान पर एक नगर वसाया जावे और उसका नाम महमूदावाद रक्खा जावे। उसी समय नगर की नींव रख दी गई और वहुत जल्दी ही वह वन कर तैयार हो गया।

इसके वाद ही हि० स० ८८५ (ई० स० १४८०) में कुछ मुसलमान सरदारो ने महमूद को पदभ्रष्ट करके उसके पुत्र अहमद (मुजफ्फर) को तख्त पर विठाने का षड्-यन्त्र रचा। सुलतान ने उनका ध्यान वटाने के लिए चम्पानेर पर चढ़ाई करने के विषय में उनसे मत्रणा की। परन्तु, वे उसकी वातो में न आए। अतः चम्पानेर की चढ़ाई कुछ समय के लिए स्थगित रही। वाद में १४८२ ई० में उसने फिर चम्पानेर पर आक्रमण करने की तैयारियाँ की। परन्तु, उसी समय उसका ध्यान सूरत के दक्षिण में वलसाड़ के जहाजियो की ओर गया जिनका प्रभाव इतना वढ़ गया था कि वे केवल व्यापार ही नहीं करते थे प्रत्युत उनकी ओर से उसके राज्य पर भी हमला होने की आशंका होने लगी थी। महमूद ने खम्भात में एक वेडा इकट्ठा किया जिसमें तीरदाज व वन्दूकें तथा तोपें चलाने वाले सभी लोग थे। यह वेडा जहाजो में चढ़कर रवाना हुआ। शत्रुओ के पैर उखड़ गए और सुलतान के वेड़े ने उसका पीछा किया। कुछ देर युद्ध होने के वाद वे मल्लाह और उनके वाहन पकड़ लिए गए। इसी वर्ष के अन्त में उसने चम्पानेर पर चढाई कर दी।

हिजरी सन् ८८७ (१४८२ ई०) में समस्त गुजरात व चम्पानेर में वर्षा वहुत कम हुई थी। उसी समय सुलतान की फौज का विशेष अफसर मलिक असद अपने लश्कर के साथ चम्पानेर दुर्ग के पास जा पहुँचा। रावल ने भी किले से

---

(१) द्वारका और वेट द्वीपो पर महमूद ने हि० स० ८७८ (ई० स० १४७३) मे विजय प्राप्त करके मलिक तोघान को वहाँ का सूवेदार नियुक्त किया और उसको 'फरहतउल् मुल्क' का अलकाव दिया।

वेट का राजा भीम १४७५ में मौलाना समरकन्दी के कहने के अनुसार नगर में चारो तरफ घुमाकर टुकडे टुकडे करके मार दिया गया (मीराते सिकन्दरी).

बाहर आकर युद्ध शुरू किया। मलिक की हार हुई और सरकारी हाथी, कुछ घोड़े और सभी सिपाही मारे गये। यह खबर सुनकर सुलतान को बहुत क्रोध आया और उसने चम्पानेर पर पूर्ण विजय प्राप्त करने का निश्चय किया।

जब चम्पानेर के रावल[1] ने सुना कि महमूद उसपर हमला करने आ रहा है तो पहले तो वह आवेश में आकर निकल पडा और सुलतान के मुल्क में आग लगाने लगा व मार काट करने लगा। परन्तु, फिर कुछ सोच विचार कर उसने सन्धि का प्रस्ताव कर दिया। महमूद किसी भी शर्त पर सन्धि करने को राजी न हुआ और अन्त में मुसलमानी सेना ता० १७ मार्च १४८३ ई० को काली के पर्वत की तलहटी में जा पहुँची। रावल ने एक बार फिर सन्धि के लिए प्रार्थना की परन्तु उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अन्त में उसने पूर्ण साहस के साथ सामना करने का निश्चय किया। मुसलमानी सेना नें घेरा डाल दिया और राजपूतो ने उन पर आक्रमण चालू कर दिए। कई बार मुसलमानो के छक्के छूट गए परन्तु अन्त में विवश होकर रावल को अपने पुराने सहायक मालवा के सुलतान गियासुद्दीन से सहायता मांगनी पड़ी और वह उसका साथ देने के लिए रवाना भी हो गया। परन्तु, इतने ही में महमूद ने उस पर चढ़ाई कर दी और वह समय अनुकूल न देखकर मालवा लौट गया। महमूद भी अपने घेरे पर चम्पानेर लौट आया।

अपना घेरा चालू रखने का आशय जानते हुए सुलतान ने वहीं एक मसजिद बनवाई और सुदृढ घेरा डाल दिया। अन्त में मुसलमान लोग किले के इतने नजदीक पहुंच गए कि उन्हें उस गुप्त मार्ग का भी पता चल गया जिससे राजपूत लोग नहाने-धोने व पानी आदि लेने के लिए बाहर आया करते थे। इसके बाद उन्होंने क़िले की पश्चिमी दीवार तोड़ डाली और उस मार्ग पर अधिकार कर लिया। यह घटना सन् १४८४ ई० के १७ नवम्बर की है। अब किले पर गोलाबारी शुरू हुई और उधर राजपूतों ने जौहर की तैयारियां कीं। चिता तैयार हुई और उसमें रानियां, दासियां, धन दौलत आदि सभी कुछ स्वाहा हो गए[2]। इसके बाद पावागढ़ के रक्षक राजपूत केसरिया वस्त्र पहन कर बाहर आए और रणभूमि में मृत्यु प्राप्त की। चम्पानेर का रावल और उसका प्रधानमत्री डूगरशी जीवित पकड लिए गए। महमूद ने अपनी विजय के स्मारक-स्वरूप वहीं महमूदाबाद नामक नगर बसाया। रावल और डूंगरशी के घाव अच्छे होने पर उन्हें इसलाम धर्म

(१) रावल गंगादास का पुत्र जयसिंह, फरिश्ता ने इसका नाम बेनीराय लिखा है। हिन्दू दन्तकथाओ में यह 'पताई रावल' के नाम से प्रसिद्ध है। (देखो रा० ब० गो० ही० ओझा कृत मेवाड का इतिहास)।

(२) राजविनोद में पावक गिरिका यह वर्णन महमूद के पिता महम्मद के समय में होना बताया गया है—

"यस्य प्रतापभरपावकसंगमेन दग्धस्य पावकगिरे शिखरान्तरेषु।
प्रैक्षन्त जर्ज्जरसुधाविधुराणि भस्मराशिप्रभाणि रिपवो निजमन्दिराणि ॥
रा० वि० सर्ग २ १८

ग्रहण कर लेने को कहा गया परन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर सुलतान ने उनको मरवा दिया।

भाट ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है :—

सवत् पंदर प्रमाण, एकतालो संवत्सर,
पोस मास तिथि त्रीज, वढ़ेहु वार रवि सुदन;
मरशिया षट्भूप, प्रथम वेरसी पडीजे,
जाडेचो सारंग, करण,, जेतपाल कहीजे।

सरवरियो चन्द्रभाण, पताह काज पिडज दियो।
महमुदावाद मेहराण, लघु कटक सर पावो लियो।

सन् १४९४ ई० में दक्षिण के वहमनी राज्य के विद्रोही वहादुर गिलानी नामक सरदार ने गुजरात के कुछ व्यापारिक जहाजो को लूट कर माहिम द्वीप पर अधिकार कर लिया। महमूद ने उसके विरुद्ध जल व स्थल सेनाए भेजीं और वहमनी के सुलतान के पास भी एक ऐलची द्वारा पत्र भेजा। उसने तुरंत गिलानी पर चढाई करदी और उसे पकड कर मार डाला। गुजरात के मनुष्यो व वाहनो को मुक्त करके वापस भेज दिया गया।

दूसरे वर्ष महमूद ने वागड और ईडर[1] पर चढाई की और वहाँ के राजाओ से भारी भेंट वसूल करके महमूदावाद (चम्पानेर) लौटा।

सन् १५०७ ई० में महमूद फिर हमारे सामने जल-सेनापति के रूप में आता है। कुछ यूरोप निवासियो ने समुद्र पर अधिकार जमा रक्खा था और गुजरात के किनारे वस जाने की इच्छा से कुछ वन्दरगाहो पर कब्जा कर लिया था। तुर्की वादशाह वजाजेत द्वितीय का जहाजी कप्तान पन्द्रहसौ आदमियो का वेड़ा लेकर गुजरात के किनारे आ पहुँचा। उधर महमूद व उसके अन्य सेनापति भी आ पहुँचे। इस लड़ाई में मुसलमानो की विजय हुई और पुर्तगालियो का झण्डेवाला जहाज, एडमिरल डॉन लारेञ्जो अलमीड़ा व १४० मनुष्य नष्ट हुए।

सन् १५१० ई० में महमूद पाटण गया। यह उसकी अन्तिम यात्रा थी। उसने वहाँ के वड़े वडे आदमियों को वुलाकर उनसे भेंट की। फिर वह अहमदावाद लौट आया और तीन महीनो तक वीमार रहा। इसी बीच में उसने अपने पुत्र खलील खाँ को वुलवाया और उसकी अतिम सलाम लेकर हिजरी सन् ९१७ (१५११ ई०) के रमजान महीने की तीसरी तारीख सोमवार को वह इस असार संसार को छोड़कर चल वसा। उसे सरखेज में दफनाया गया था जहां पर उसकी कब्र अव तक मौजूद है।[2]

---

(१) उस समय ईडर पर राव भान का पुत्र सूरजमल राज्य करता था।

(२) मीराते अहमदी। फरिश्ता ने लिखा है कि उसकी मृत्यु हि० स० ९१७ के रमज़ान महीने की दूसरी तारीख मगलवार को हुई थी। उस समय उसकी आयु ७० वर्ष ११ महीने की थी। उसने ५५ वर्ष १ महीना और दो दिन राज्य किया।

अहमदावाद के सुलतानो में महमूदशाह, यदि सबसे महान् नहीं तो अत्यन्त लोकप्रिय अवश्य हुआ है। जैसे हिन्दू सम्राट् सिद्धराज के विषय में कितनी ही किम्वदनियाँ और अद्भुत कथाएं प्रचलित है वैसे ही इसके विषय में भी कितनी ही वातें प्रसिद्ध हैं। महमूद की शारीरिक गठन, शूरता, वल, न्याय, परोपकार, इसलाम पर दृढ आस्था, नियम पालन में दृढता और विचारशक्ति की श्रेष्ठता का समानरूप से वखान हुआ है। उसकी 'वेगडा' उपाधि के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि जिस वैल के सींग दाए वाँए लम्वे (एक आदमी दूसरे से मिलते समय हाथ वढाए इसतरह) हो उस वैल को हिंदी में वेगडा कहते हैं; सुलतान की मूछें इसी तरह की थीं इसलिए लोग उसे वेगड़ा कहते थे। दूसरा मत यह है कि सुलतान महमूदने जूनागढ और चम्पानेर के दो किले जीते थे इसलिए वह (वे–दो; गढा–किला) वेगड़ा (दो किलो का विजेता) कहलाता था।[1]

कहते हैं कि, वह वहुत खाने वाला था और इतने वडे राज्य का स्वामी और राजवैभव में रहनेवाला होने पर भी उसकी जठराग्नि वहुत प्रवल थी। वह कला प्रेमी था और इमारतो का उसे वहुत शौक था। गुजरात की मुसलमानी इमारतो में से अधिकाश के साथ महमूद वेगडा का नाम सम्वद्ध है। 'मुश्तफाबाद और महमूदाबाद (चम्पानेर) के अतिरिक्त वात्रक नदी के किनारे उसने अपने नाम से एक और शहर वसाया था जिसके चारो ओर कोट खिचवाकर अच्छी अच्छी इमारतें वनवाई थीं। इसी नदी के किनारे पर उसने एक उत्कृष्ट महल वनवाया था जिसके अवशिष्ट अव तक वर्तमान है।[2] वह इन्हीं तीन नगरो में से एक में प्रायः वना रहता था परन्तु गरमी के दिनो में जव मतीरे (तरवूज) पक जाते हैं तव अहमदावाद अवश्य जाता था। मीराते अहमदी के कर्ता ने आगे चलकर लिखा है कि गुजरात देश में जितने शहरो, कसवो और गाँवो में फलो के पेड है वे सव महमूद के समय में लगाए हुए हैं।[3]

मीराते सिकन्दरी में लिखा है कि अपनी वीमारी की अवस्था मे उसने फरमाया कि शाहज़ादा खलील खा को वुलाओ। परन्तु, वह आकर पहुचा इससे पहले ही हि० म० ९१७ के मुवारक रमज़ान महीने में सोमवार के दिन दोपहर की नमाज़ के वक्त इस फानी दुनिया को छोड कर अनन्त धाम के लिए विदा हो गया।. . . उस समय उसकी उम्र ६७ वर्ष और तीन महीने की थी।

कॉमिसरियट–हिस्ट्री आफ गुजरात भा० १ पृ० २०७ में लिखा है कि उसकी मृत्यु २३ नवम्वर १५११ ई० को हुई। उस समय वह अपने ६७ वें वर्ष में था।

(१) फरिश्ता।

(२) मीराते अहमदी (१८५६ ई०)

(३) शाखोटैः कुटजैश्च शाल्मलिवनैश्च्छन्नाश्च या भूमय-
स्तत्राशोकरसालवाल-वकुलै रम्या कृता· वाटिकाः।
आम्राताः किटिकोटिमर्कटकुलैर्हर्यक्षर्यक्षैश्च या-
स्तत्रानेन पुराणि पुण्यजनतापूर्णानि क्लृप्तानि च ॥ २४ ॥ रा वि सर्ग।

जहाजी लड़ाइयाँ लडने के कारण उसकी प्रसिद्धि यूरोपीय देशो तक फैल गई थी। मिस्टर एलिफन्स्टन ने लिखा है कि इस वादशाह के विषय में तत्कालीन प्रवासियो के वडे भयानक विचार थे। Bartema (वार्टिमा) और Barbosa (वार्वोसा) दोनो ही में उसका विस्तारसहित वर्णन किया गया है। एक यात्री ने उसके शरीर की बनावट के विषय में भयकर वर्णन लिखा है। उसके असाधारण मात्रा में भोजन करने और उसके शरीर में विष होने के वारे में दोनो ही लेखक सहमत है। विषैला भोजन करते करते उसके शरीर में इतना विष फैल गया था कि यदि कोई मक्खी उडती उडती आकर बैठ जाती तो तुरन्त मर जाती थी। सत्तावान् मनुष्यो को दण्ड देने की उसकी साधारण रीति यह थी कि पान खाकर उन पर पीक की पिचकारी मार देता था। वटलर ने "खम्भात के राजा की वात" लिखी है जिसमें उसका नित्य का भोजन दो जहरी साँप और एक जहरी मेंढक लिखा है। मीरसते सिकन्दरी में लिखा है कि साधारण भोजन के अतिरिक्त १५० सोन केले व गुजराती तौल का सवा मन रायता उसके नित्य के भोजन में सम्मिलित थे। रात को सोते समय दो वडे वड़े भगोने पूओं व वडे भुजियो के भरे हुए उसके पलग के दोनो ओर रख दिए जाते थे। जव तक नींद न आती वह इधर उधर करवट लेकर उनको खाता रहता था। वीचमें नींद खुलजाने पर भी वह उन्हें खाने लगता था। वह प्रायः कहा करता था कि यदि वह वादशाह न होता तो उसकी जठराग्नि किस प्रकार शान्त होती ?

मीराते सीकन्दरी में इस सुलतान के चरित्र एव राज्य-प्रवन्ध के विषय में जो विवरण लिखा है वह इस प्रकार है—

"यहाँ यह वात प्रकट करना है कि यह सुलतान गुजरात के सुलतानो में सव से उत्तम था। न्याय में, धर्म में, संग्राम में, इसलाम धर्म के नियमो का पालन करने में, वाल्य, यौवन, और वृद्धावस्था में सदैव एकसार उत्तम बुद्धि रखने में, शारीरक सामर्थ्य में और उदारता में अद्वितीय था। इतने बडे राज्य वैभव और महान् देश का स्वामी होते हुए भी उसकी पाचन-शक्ति वहुत प्रवल थी।

(इसके राज्य में) "गुजरात देश में एक नई स्फूर्ति आई जो कितने ही समय पूर्व तक न आई थी। सेना सुव्यवस्थित थी और प्रजा निरुपद्रव थी। साधु-सन्त स्थिर चित्त से भजन में व्यस्त रहते थे और व्यापारी अपने व्यापार और लाभ से प्रसन्न थे। देश में सर्वत्र शान्ति थी और चोरो का भय नहीं था। सोने की थैली लिये हुए अकेला आदमी पूर्व से पश्चिम तक घूम आता है। हे सम्राट ! तेरे भय से ससार की सभी दिशाएँ निर्भय है। इस प्रकार किसी को पुकार करने की आवश्यकता ही न पड़ती थी।"

"सुलतान की आज्ञा थी कि कोई अमीर अथवा सैनिक अधिकारी युद्ध में मारा जाय वा स्वाभाविक रीति से मर जाय तो उसकी जागीर उसके पुत्र को दी

जाय, यदि उसके पुत्र न हो तो जागीर का आधा भाग उसकी पुत्री को दे दिया जाय, यदि पुत्री भी न हो तो उसके आश्रितो के लिये ऐसा प्रबन्ध कर दिया जाय कि उनको जीवन-यापन में किसी प्रकार का कष्ट न मिले। कहते है कि एक बार एक मनुष्य ने आकर कहा कि अमुक अमीर मर गया है और उसका पुत्र उस पद के योग्य नहीं है। सुलतान ने कहा कि वह पद उस लडके को अपने योग्य बना लेगा। इसके बाद ऐसी बातो में किसी को कुछ कहने का साहस न पडा।

इस सुलतान के समय में प्रजा सुखी थी इसका कारण यह था कि अकारण ही अत्याचार करके किसी जागीरदार की जागीर नहीं छीनी जाती थी और सरकार द्वारा निश्चित लगान ही ले लिया जाता था। जब सुलतान महमूद शहीद के समय में कार्यकर्ता मन्त्रियों ने देश की उपज की तपास की तो ज्ञात हुआ कि उस समय देश में पहले से दशगुनी उपज अधिक होने लगी थी और गावों में कोई भी किसान निर्धन नहीं था। व्यापारियो को लुटेरो की कोई चिन्ता न थी क्योंकि व्यापार के सभी मार्ग सुरक्षित थे और सुलतान के राज्य में चोर की उत्पत्ति ही न होती थी। साधु-सन्त शान्ति से रहते थे क्योकि सुलतान स्वय इस मान्य-वर्ग का शिष्य एव भक्त था। वह प्रति वर्ष इनकी जागीरें बढ़ाता रहता था और इसके अतिरिक्त भी सन्तों की इच्छानुसार उन्हें अनुदान दिया करता था। यात्रियों के लिये उसने बडी-बडी धर्मशालाएँ बनवाई और स्वर्ग के समान सुन्दर पाठशालाओ तथा मसजिदों का निर्माण कराया। सुलतान बडा न्यायी था और उसके राज्य म किसी को हानि पहुचाने का किसी का साहस न होता था। उसके विषय में एक कविता में लिखा है कि "अपराधियों पर तुम्हारा ऐसा आतङ्क छाया हुआ है कि कोई कबूतर पकड़ने के लिये बाज नहीं छोड़ सकता है"।

छोटे बडे सभी वर्गों के लोगों का मत है कि महमूद बेगड़ा जैसा बादशाह गुजरात में पहले नहीं हुआ और न्याय में तो उस के बाद भी कोई समानता न कर सका। उसने जूनागढ़ का किला, सोरठ देश, चाँपानेर का किला तथा और आसपास के प्रदेशों को जीतकर वहां पर हिन्दू रीति-रिवाजों को नष्ट कर दिया और इसलामी रीति-रिवाजो को प्रचलित किया, इसलिये कयामत तक जो भी कार्य इन प्रदेशों में होंगे वे उसी के नाम लिखे जावेंगे। उसका पौत्र बहादुरशाह यद्यपि देश जीतने में उससे बढ़ कर हुआ तथापि अनुभव में वह सुलतान महमूद को नहीं पा सकता था। सुलतान तो इन दोनो ही बातो में बढ़ कर था।

"युवा प्रतिभाशाली और भाग्यवान् वह ऐसा था कि वैभव में युवक और युक्ति प्रयुक्ति में प्रौढ़ था।"

"जिस समय यह सुलतान यहां राज्य करता था उसी समय खुरासान में सुलतान हुसेन मिर्जा राज्य करता था और बेनमून वजीर मीरअली उसके प्रधान मंत्री

के पद पर सुशोभित था। मुल्लां तथा मनोहर काव्यकर्ता के स्थान पर मौलाना जामी प्रतिष्ठित थे जो ईश्वरीय मार्ग एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन ज्ञान में अनुभवी थे। उसी समय दिल्ली के तख़्त पर सुलतान सिकन्दर बहलोल लोदी विराजमान थे। उनके वज़ीर परम बुद्धिमान और दूरदर्शी जीयान बहलोलखां लोदी थे। उसी समय मांडू के तख़्त पर सुलतान महमूद खिलजी के पुत्र सुलतान गयासुद्दीन बैठे थे जिनके शासन और उदारता की ख्याति चारो ओर फैल रही थी। उसी समय दक्षिण की गद्दी पर सुलतान महमूद बहमनी वर्तमान था। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कितने ही वर्षों बाद सुलतान महमूद गजनवी की आत्मा सुलतान महमूद बेगड़ा के रूप में अवतार लेकर आ गई थी क्योंकि उसके सभी कार्य उतने ही प्रतिष्ठित थे जितने कि उस महान् सुलतान के थे।"

"कहते हैं कि जिस दिन सुलतान महमूद गद्दी पर बैठा उस दिन उसके जमाई खुदावन्द खां ने जो बड़ा विद्वान और वक्तृत्व कला में निपुण था, सुलतान के हाथ में दीवान हाफिज की पुस्तक देकर शकुन देखने के लिये प्रार्थना की। ज्यों ही सुलतान ने पुस्तक खोली अनायास उसमें इस आशय की कविता निकली .... "अरे जिसके शरीर पर बादशाही का जलवा आ रहा है और जिसके नमूने के दो मोतियो से बादशाही झलक रही है।"

"इस सुलतान के राज्य में कभी अनाज महँगा नहीं हुआ। प्रत्येक चीज़ सस्ते मूल्य पर प्राप्त होती थी। गुजरात के लोगों का कहना है कि गुजरात में ऐसी सस्ताई कभी नहीं देखी थी। चगेजखां मुग़ल की तरह इसकी सेना ने भी कभी पराजय का अनुभव नहीं किया था। सदा नई-नई विजय इसको प्राप्त होती थी। सुलतान ने एक आदेश जारी किया था कि सेना के आदमियो में से कोई ऋण न ले। उनके लिये सरकारी कर का कोई अंश अलग निर्धारित करके रख दिया जाता था जिसमें से सिपाही लोग आवश्यकतानुसार रकम उधार लेते थे और वापस जमा करा दिया करते थे। इस प्रबन्ध से व्यापारी लोग अवश्य ही कुछ सकट में पड गये थे और इसलिये वे उसकी आलोचना करते हुये उसे बुरा कहा करते थे। सुलतान बारम्बार कहा करता था कि जो मुसलमान व्याज खाता है वह धर्म-युद्ध में नहीं टिक सकता। इसी कारण परमात्मा उसे युद्ध में विजयी करता था।"

"ईश्वर की कृपा से गुजरात में आम, अनार, रायण, जामुन, नारियल, बेल और महुआ आदि के अनेक जाति के पेड प्रचुरता से मिलते हैं वे सब इसी महाप्रतापी सुलतान के सत्प्रयत्नों के फल हैं। प्रजा में जो कोई अपनी भूमि में पेड़ लगाता था उसको सहायता दी जाती थी। इसी कारण जनसाधारण में बागों की रचना करने व पेड लगाने की प्रवृत्ति बढ़ गई थी। इस सम्बन्ध में कहा जाता है कि सड़क पर या किसी झोपड़ी के आगे लगाया हुआ पेड़ देख कर सुलतान

अपने घोड़े को रोक लेता और पेड लगानेवाले से पूछता कि इस वृक्ष को पानी कहां से लाकर पिलाते हो। यदि वह पानी का स्थान कहीं दूर पर बतलाता तो सुलतान कृपापूर्वक वहीं कुंआ खुदवा देता और पेड़ बड़ा होने पर लगानेवाले को इनाम देता। फिरदौस बाग जो ५ कोस लम्बा और १ कोस चौडा है इसी सुलतान का लगवाया हुआ है। शआबान बाग भी जो स्वर्ग की समानता करता है इसी के समय में तैयार हुआ था। इसी प्रकार जब वह किसी खाली दुकान या मकान को देखता तो वहां के अधिकारी या नौकरों से इसका कारण पूछता और तुरन्त ही उसको आबाद करने का प्रबन्ध करता था। इस प्रकार 'जो दाखिल होता है वह सही सलामत है' इस कुरान की आयत के अनुसार प्रजा उसके राज्य में सुखी थी।'

अनेक लड़ाइयों में विजयलाभ प्राप्त करने से उसकी वीरता व भवनो तथा बाग़ बगीचों से उसके कला-प्रेम का तो परिचय मिलता ही है, परन्तु कवि उदयराज विरचित प्रस्तुत राजविनोद काव्य से उसके चरित्र का एक और पहलू भी सामने आता है (जिसको प्रायः हमारे इतिहासकार विशेष महत्त्व नहीं दिया करते हैं); वह यह है कि वह कविता प्रेमी भी था। अवश्य ही, कट्टर मुसलमान होते हुए भी, संस्कृत में निगुम्फित उसके इस यशोगान ने उसके मूलतः हिन्दू हृदय को परम सन्तोष प्रदान किया होगा।



राजविनोद काव्यकी आदर्शभूत प्रतिका अन्तिम पत्र

कवि-उदयराजविरचितं

राजविनोदमहाकाव्यम् ।

॥ प्रथमः सर्गः ॥

॥ ॐ नम सरस्वत्यै ॥ श्री जगत्कर्त्रे नम ॥

जगत्कर्त्ता विजयते करुणावरुणालयः ।
राजरूपेण रमते यः प्रजानुग्रहेच्छया ॥१॥

राजन्यचूडामणिमत्युदारमाशास्महे श्रीमहमूदसाहिम् ।
कलानिधेर्यस्य पद श्रयेते सरस्वती श्रीश्च समानमेव ॥ २ ॥

एतच्चरित्रे क्व लभेत पार पदे पदे हन्त मति स्खलन्ती ।
उदारकीर्त्तेर्महमूदसाहेस्तावद्गुणानेव गुरूकरोमि ॥ ३ ॥

अमुष्य राज्ञां परमेश्वरस्य पूजोपहाराय मयोपनीत ।
कवित्वपुष्पाञ्जलिरेष रम्य सन्तस्तदामोदभरं भजन्तु ॥ ४ ॥

उत्कर्षमालक्ष्य सदैव लक्ष्म्या सौभाग्यलाभान्महमूदसाहे ।
उत्सङ्गमुत्सृज्य पितामहस्य सरस्वती क्ष्मावलय प्रपन्ना ॥ ५ ॥

प्रष्टु क्वचित् केलि [पृ०१B] परा तनूजा चतुर्भुजस्येव दिगश्चतस्र ।
विधेर्निदेशात् प्रथमो दिगीश सहस्रमक्षणामदिशत् पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

क्षणादथ क्षोणितल विगाह्य मधुव्रतानामिव पङ्क्तिरक्षणाम् ।
पौरन्दरी श्रीमहमूदसाहे पद्माकरे राजपुरेऽवतीर्णा ॥ ७ ॥

वीथीषु वीथीपु च राजधान्या द्वारे नरेन्द्रस्य च मन्दिरेषु ।
श्रेणी सुरेन्द्रस्य दृगा व्यराजद् व्यालम्बिता वन्दनमालिकेव ॥ ८ ॥

दिवस्पतेर्नेत्रसहस्रमाला दीपावलिश्रीर्भवने भ्रमन्ती ।
आरात्रिकं संसदि कुर्व्वतीव प्राप्ता मुदा श्रीमहमूदसाहे ॥ ९ ॥

सद्वृत्तिस्थपदक्रमा परिलसत्तर्कानुमेयोदरा
मीमांसाद्वयसुन्दरस्तनभरा तत्त्वार्थवादानना ।
वाग्देवी वरनव्यकाव्यरचनाशृङ्गारिणी प्रेक्षिता [पृ०२A]
सुत्राम्णा महमूदसाहनृपतेर्विद्वत्सभामाश्रिता ॥१०॥

ब्राह्मि[1] ब्रह्मसभा सुभाषितरसत्यागेन रूक्षानना
कृत्वा क्रीडसि भूतले किमिति सा शक्रेण पृष्टाऽब्रवीत् ।
सुत्रामन् महमूदसाहिनृपतेर्विद्याविदा ससदि
स्वच्छन्दप्रसरत्कवित्वलहरी त्यक्तु कथ शक्यते ॥११॥

इन्द्र कि कमलापति किमथवा कि वा रतेर्वल्लभ.
शृङ्गार किमु मूर्तिमानिति बुधैस्सोल्लासमालोकित ।
चञ्चच्चामरवीजित सुमहच्छत्रेण विभ्राजित.
सोऽय श्रीमहमूदसाहिनृपति सिंहासने राजते ॥१२॥

औदार्य परमस्य शौर्यमतुल गाम्भीर्यमुख्यान् गुणान्
प्रेक्ष्य श्रीमहमूदसाहनृपतेराश्चर्यमासेदुषाम् ।
केषा वा विदुषा दधीचिररुचि धत्ते न चित्ते चिर
कर्ण कर्णकटुत्वमेति [पृ०२B] भवति प्रायो बलिर्विस्मृत ॥१३॥

पूर्णोध्न्य सुरधेनव फलभरैर्भुग्नाश्च कल्पद्रुमा-
स्ते चिन्तामणयो दृषद्गुरुतया योग्यास्तुलारोहणे ।
वीरश्रीमहमूदसाहनृपते सत्पात्रकोटिम्भरे-
र्जात दानगुणेन सम्प्रति यतो याञ्चाविमुक्त जगत् ॥१४॥

चिन्तामणेर्लोचनमाश्रिता श्री कर च कल्पद्रुमदानशक्ति ।
वाणी विलासेन च दोग्धि कामान् जिष्णोर्जगत्या महमूदसाहे ॥१५॥

उच्चैर्द्विषद्भूधरलक्षपक्षच्छेदैककर्त्तु शतकोटिभर्त्तु ।
सलक्ष्यते श्रीमहमूदसाहेराखण्डलत्व क्षितिमण्डलेऽपि ॥१६॥

यशोभरै श्रीमहमूदसाहेर्वसुन्धराया कुमुदावदातै ।
उदस्य दोषाकरमब्जजन्मा विधित्सता चन्द्रमसा सहस्रम ॥१७॥

प्राच्या प्रतीच्यामपि दिश्यवाच्यामुच्चैरुदी [पृ०३A] च्यामुदय दधान ।
प्रतापभानुर्महमूदसाहे करोति निर्वैरितम समस्तम् ॥१८॥

श्रीचन्द्रहासो महमूदसाहे सृजत्यहो वैरिशिरासि राहून् ।
तेषा यशश्चन्द्रमस प्रतापभानोश्च सर्व्वग्रहणे रणेषु ॥१९॥

सोत्तालपात रिपुकन्धरासु तूर्यस्वनैस्ताण्डविता रणेषु ।
कृपाणयष्टिर्महमूदसाहेर्यश प्रसूनाञ्जलिमातनोति ॥२०॥

प्रवर्तित दक्षिणवामभागयोर्जवेन पश्यद्भिरलक्षितक्रमम् ।
धनुर्हि शार्ङ्ग महमूदभूपतेर्व्यनक्ति युद्धेषु चतुर्भुजश्रियम् ॥२१॥

बलीयसा श्रीमहमूदभूभुजा हता हि ये हेतिभिराहवेऽहिता ।
विभिद्य ते मण्डलमशुमालिनो गतास्स्वराखण्डलदृष्टचण्डता ॥२२॥

अक्ष्णां जिघृक्षति सहस्रकर सहस्रमस्मात् सहस्रकरता च सहस्रनेत्र. ।
श्रीपा [पृ० ३ B] तसाहमहमूदनृपप्रयाणे रेणुव्रजे दिशि दिशि प्रविजृम्भमाणे ॥२३॥

किं भास्करोऽयमुदयाचलमध्यवर्ती जम्भारिरभ्रमुपति किमथाधिरूढ. ।
इत्थं वदन्ति समुद महमूदसाहं दृष्ट्वा विशिष्टमतयो वरवारणस्थम् ॥२४॥

दुर्नीतिदावदहन निजमण्डलाग्रधाराजलैश्शमयता सकलावनीयम् ।
एतेन सान्द्रकरुणाम्बुघनेन काम सम्पत्तिभिस्सपदि पल्लवितेव भाति ॥२५॥

मुक्तोज्ज्वलाभिरभित किलशातकुम्भधाराभिरग्रकरपल्लवसम्भृताभि ।
पट्टाभिषेकसमये स्वयमेव राज्ञा प्रेम्णा घनेन महिपीव सुधाभिषिक्ता ॥२६॥

लीना क्वचित्क्वचिदपि प्रकटीभवन्ती भ्रान्त्वा जगज्जडतयाधिपयोधिखिन्ना ।
साऽहं प्रकाशमधुनाऽधिगताऽस्मि लोके विद्याविवेकरसिकस्य सदस्यमुष्य ॥२७॥ [पृ०४A]

इति निगद्य सुपद्यमनोरम सुचरितं महमूदमहीपते ।
शतमखाभिमुखी किल भारती पुनरवोचदिद मधुर वच. ॥२८॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥२९॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे राजविनोदे महाकाव्ये सुरेन्द्रसरस्वतीसम्वादो नाम प्रथमस्सर्गः ॥

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

वंशस्सहस्रांशुभवो जगत्या जागर्त्यसौ राजभिरर्च्चनीय. ।
कर्णोपमो यत्र किलावतीर्ण श्रीमान् पुरा साहिमुदप्फरेन्द्र ॥ १ ॥

लीनस्य वार्द्धौ[1] कलिकालभीत्या कृष्णस्य साहाय्यचिकी[पृ० ४ B]र्षयेव ।
दिल्लीपुराद् गूर्ज्जरदेशमेत्य दधार यो मूर्द्धनि सितातपत्रम् ॥ २ ॥

समुद्गिरन् कच्छमहीषु येन डिण्डीरपाण्डूनि यशासि खड्ग ।
स्फूर्जद्द्विषच्छोणितपङ्कलिप्त. प्रक्षालित पश्चिमवारिराशौ ॥ ३ ॥

(१) वार्द्धि – वारिधि – समुद्रम् ।

विलङ्घ्य वारानिधिमेकवीरो लङ्काभिध द्वीपमगात् कपीन्द्र. ।
तत्स्पर्द्धयेवोग्रतरञ्चचार द्वीपेषु सप्तस्वपि यत्प्रताप ॥ ४ ॥

मुमोच वन्दीकृतमल्पखानमनल्पशौर्य वलवत्तरो य ।
वश्यास्ततो मालवराजवन्दिमोक्षपदाख्य बिरुद वहन्ति ॥ ५ ॥

तस्यात्मजस्साहिमहम्मदोऽभूद् यस्य क्षमाभोगपुरन्दरस्य ।
औदार्य्यसूर्येण जगत्यजस्र व्यदारि दारिद्र्यमय तमिस्रम् ॥ ६ ॥

दधार शस्त्र न रिपुर्न मित्र यस्मिन् दधत्यायुधमेकवीरे ।
पूर्वस्तत[पृ० ५ A]स्सङ्गरभङ्गभीतेरन्यत् पुनस्तस्य वलप्रतीते ॥ ७ ॥

उदित्वरो यस्य वभौ जगत्यां सहस्रभानुप्रतिम प्रताप. ।
यो मल्लखानाख्यमुलूकमिन्द्रप्रस्थस्यमुद्वेजितवान् द्विषन्तम् ॥ ८ ॥

यस्य प्रसिद्धैर्द्विरदैर्विभिन्नप्राकारसौधस्फुरदट्टमाला. ।
अद्याप्यहो नन्दपदाधिनाथा भल्लूकवत् पल्लिवने भ्रमन्ति ॥ ९ ॥

तस्मात् समुद्रादिव पूर्णचन्द्र श्रीमानभूत् साहिरहम्मदेन्द्र ।
निरस्तदोषावसरैरशोभि ज्योत्स्नोज्ज्वलैर्यस्य जगद् यशोभि ॥१०॥

हुशङ्गसाहेरधिवासदुर्गमाक्रामता मण्डपमाग्रहेण ।
येनोच्चकैराचकृषे करेण पदे पदे मालवमण्डलश्री ॥११॥

विभज्य दुर्गाणि निहत्य वीरान् हठान् महाराष्ट्रपतिं विजित्य ।
जग्राह [पृ० ५ B] रत्नाकरसारजातमनर्गलैर्य स्ववलैर्वलीयान् ॥१२॥

कुर्वन्तु गर्व वहवोऽप्यखर्व्वमुर्व्वीश्वरा श्रीगुणगौरवेण ।
अहम्मदेन्द्रस्य जनानुरागसौभाग्यलेशं न परे लभन्ते ॥१३॥

आनन्दन सुमनसामथ नन्दनोऽभूद् भाग्यश्रिया निधिरहम्मदपातसाहे ।
गायासदीन इति साहिमहम्मदेन्द्र क्षोणीभुजां मुकुटघृष्टपदारविन्द ॥१४॥

सूर्यो दिवैव कुरुते जगति प्रकाश कान्ति शशी वितनुते नियत निशायाम् ।
श्रीमन्महम्मदनराधिपते पृथिव्या दृष्ट प्रतापयशसोर्युगपत्प्रचार ॥१५॥

रूपश्रियैव विजित समभून् मनोभू श्रीमन्महम्मदनराधिपतेरनङ्ग. ।
अस्र स्त्रिय खलु जगज्जयिनोऽपि तस्य वीक्ष्यैव तत्क्षणममु विवशी वभुवु ॥१६॥

यो भारतस्य [पृ० ६ A] भरतस्य च सम्प्रयोगादुच्चैरजायत नयेऽभिनये प्रवीण ।
वीरो रणे वितरणे च विशिष्टशक्ति कर्णार्जुनावपि जिगाय जगत्प्रसिद्धौ ॥१७॥

यस्य प्रतापभरपावकसङ्गमेन दग्धस्य पावकगिरे शिखरान्तरेषु ।
प्रक्षन्त जर्ज्जरसुधाविधुराणि भस्मराशिप्रभाणि रिपवो निजमन्दिराणि ॥१८॥

नित्यप्रसादपरिवर्द्धितहर्षयोगा सम्मानदस्य महता महितापकर्तु ।
यस्य प्रभो. कनकवेत्रधरा पुरस्तात् क्षोणीभुजोऽपि परिचारकता प्रपन्ना' ॥१९॥

तस्यात्मज किल महम्मदपातसाहे श्रीमानय विजयते महमूदसाहि ।
रागेण गूर्ज्जरभुवाऽप्युपसेव्यमानो धारापुरीकरपरिग्रहसाग्रहो य ॥२०॥

पूर्व्वविशिष्टमतिभिर्विहिता क्षितीन्द्रैर्येषा प्रसाधनवि[पृ० ६ B]धौ वहुधा प्रयत्ना. ।
दुर्गाण्यनेन सहसा प्रभुणा स्वशक्त्या भग्नानि तानि वलवद्रिपुरक्षितानि ॥२१॥

पाणौ चकास्ति महमूदनरेश्वरस्य खड्गो रणे विभजनाक्षरपट्ट एप ।
प्रत्यर्थिने दिशति यद्भुवमर्थिदैन्य प्रत्यर्थिवैभवमिहार्थिजनाय दत्ते ॥२२॥

एतच्चमूचरतुरङ्गमचङ्क्रमार्थ क्ष्मामण्डलं खलु कुलाचलक्लृप्तसीमम् ।
अब्धि विलङ्घ्य दहति द्विषतो विमुक्तमर्य्यादमस्य जगति प्रसरन् प्रताप ॥२३॥

शाखोटै कुटजैश्च शाल्मलिवनैश्च्छन्नाश्च या भूमय-
स्तत्राशोकरसालबालवकुलैरम्या कृता वाटिका ।
आक्रान्ता किटिकोटिमर्कटकुलैर्हर्यक्षत्र्यक्षैश्च या-
स्तत्रानेन पुराणि पुण्यजनतापूर्णानि क्लृप्तानि च ॥२४॥

उद्दण्डस्फुटपुण्डरीकरुचिरच्छाया पर विस्फुरद्-[पृ० ७ A]
वीचीचामरवीजिता परिसरत्सद्वाहिनीसङ्गता ।
राजन्ते स्थिरकम्वुकूर्म्ममकरै कोशै समृद्धा. सदा
कासारा क्षितिपा इवास्य नृपतेर्हंसोल्लसत्कीर्त्तय ॥२५॥

सौन्दर्ये मकरध्वजप्रतिनिधि दाने च कर्णोपम
कारुण्ये रघुनन्दनेन सदृश भीमेन तुल्य रणे ।
वाचा सिद्धिषु वाक्पते समधिक लीलासु लक्ष्मीवर
भर्त्तार महमूदसाहमनघ वाञ्छन्ति नित्य प्रजा. ॥२६॥

आलोकोद्यतलोकवारिधिसदाऽऽनन्दोर्म्मिसवर्द्धन
दर्प्पान्ध प्रसरत्प्रतीपनृपतिध्वान्तौघविद्ध्वसनम् ।
वीरश्रीमहमूदसाहनृपते शश्वद् धृतं मूर्द्ध्नि
श्वेतच्छत्रमुदित्वर विजयते पूर्णेन्दुशोभाधरम् ॥२७॥

उच्चैरङ्कुशता विभर्ति वलिना या सर्व्वदा मौलिषु
प्रत्यर्थिक्षितिपालमूर्द्ध[पृ० ७ B]सु पुनर्या चक्रवद् भ्राम्यति ।
मान्याना महता च शेखरपदे मालेव या भ्राजते
वीरश्रीमहमूदसाहनृपतेराज्ञा जगद् रक्षति ॥२८॥

मर्य्यादा न विलङ्घयन्ति निधयो वारामवारोर्म्मय-
श्चन्द्रार्क्कावुदयास्तकालनियम नैवाप्यतिक्रामत ।
यस्याज्ञावशगतश्चरन्ति परितस्तारा निरालम्वने ।
सोऽय श्रीमहमूदसाहमवतात् कर्त्ता जगत्तारक ॥२९॥

इत्याशीर्वचनपरम्परा सृजन्ती वाग्देवी विरचितनव्यकाव्यवन्धा ।
शिष्याय त्रिदशगुरो पुरोगताय व्याकर्त्तु पुनरुदयुङ्क्त राजचर्य्याम् ॥३०॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद. ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपति[पृ० ८ A]र्जीयात् तदीयात्मज ॥३१॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये वशानुसङ्कीर्तनो नाम द्वितीय सर्ग. ॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

उच्चैस्तरा कुञ्जरगर्जितेन प्रहृष्यमाणो हयहेषितेन ।
सान्द्रेण नादेन च दुन्दुभीना प्रवुद्ध्यतेऽसौ समये नरेन्द्र ॥ १ ॥

उल्लासयन्त्यो रहसि स्वरेण वीणाक्वणैस्सम्वदतानुरागम् ।
सौभाग्यवत्योऽस्य विलासगीतै प्राभातिक मङ्गलमाचरन्ति ॥ २ ॥

आलोकनीयं घनपक्ष्मलाभ्या विलोचनाभ्यामलिमञ्जुलाभ्याम् ।
मुखारविन्द स्वयमाश्रिताऽस्य प्रवोधलक्ष्मीर्मुदमादधाति ॥ ३ ॥

प्राभातिकाचारविधौ जलेन प्रक्षालित वीक्ष्य मुख नृपस्य ।
सरोरुह मुञ्चति नाम्वुवास शशी पुनर्मज्जति वारि[पृ० ८ B]राशौ ॥ ४ ॥

सुवर्णवर्णेऽस्य विशेषमङ्गे करवर्ण्यराग कुरुतेऽधिवर्ण्यम् ।
अलकृतानेन कुरङ्गनाभि श्रीखण्डकाश्मीरविलेपनश्री. ॥ ५ ॥

विलासिन. श्रीमहमूदसाहे' सद्भि सभायामभिशोभितायाम् ।
कर्पूरवासैः ककुभा मुखानि ताम्बूलयोग. सुरभी करोति ॥ ६ ॥

मृणालसूत्रैरिव निर्म्मितं यद् अय नवीनैर्मृदुल महीन्द्र ।
वास. शरच्चन्द्रमरीचिगौरमङ्गस्य तन्मण्डनमाबिभर्ति ॥ ७ ॥

विश्लेष्य पूष्णोर्वपुप. प्रयत्नात् त्वष्ट्रेव पूर्व घटित मयूखै ।
रत्नप्रभाभूषितदिग्विभागमय महीन्द्रो मुकुट विभर्ति ॥ ८ ॥

परिस्फुरत्कुण्डलपद्मरागप्रभाङ्कुरै रञ्जितमास्यमस्य ।
स्मितांशुलेशैर्हसतीवगूढं वालारुणस्पृष्टसरोजलक्ष्मीम् ॥ ९ ॥

अलं विशाल नृहरेर्विभाति वक्षस्यल श्रीमहमूदसाहे' । [पृ० ९ A]
लक्ष्मीर्यदालिङ्गय सदा सहार मुदा करोति प्रमदाविहारम् ॥१०॥

अयं भुजाभ्यां स्फुरदङ्गदाभ्यामालिङ्गिताभ्यां चतुरङ्गलक्ष्म्या ।
विराजते श्रीमहमूदसाहि. साम्राज्यमुद्राङ्कितपाणिपद्म ॥११॥

पादारविन्द महमूदसाहे' श्रियोऽधिवास वयमानमाम' ।
दारिद्र्यसन्तापनुदे सदैव यदातपत्रीक्रियते धरित्र्या ॥१२॥

आत्मानमादर्शतले सलीलमालोकयन्त महमूदसाहिम् ।
मुह्यन्ति साक्षान् मदनावतारमुदीक्ष्यमाणा मदिरायताक्ष्य ॥१३॥

आसीनमष्टापदपीठपृष्ठे राजानमेन नयनाभिरामम् ।
नीराज्य नार्य्यो नवरत्नदीपैर्मुक्ताक्षतै सस्पृहमर्चयन्ति ॥१४॥

एवं सदान्त पुरसुन्दरीभिर्मुदा प्रसन्नो वरिवस्यमान ।
वहि समाजस्थितराज [पृ० ९ B] लोकविलोकनेच्छा सफली करोति ॥१५॥

सिहासन श्रीमहमूदसाहे सहेलमारोहति राजसिहे ।
जयेतिशब्द. प्रसरन् पुरस्ताज्जनस्य कर्णोत्सवमातनोति ॥१६॥

सहस्रपत्र ध्रुवमातपत्र शिरस्युदार महमूदसाहे ।
सुवर्णकुम्भश्रितकर्णिकाश्रि चकास्ति गारुत्मद् दण्डनालम् ॥१७॥

तप. पुराऽतप्यत याभिरिन्दोरवर्कस्य सम्पर्कमवाप्य भाभि ।
एताश्चलच्चामरचारुभावान्नरेन्द्रचन्द्र परिवीजयन्ति ॥१८॥

आलोकमात्रादपि सर्व्वलोकानाह्लादयन्त कमनीयकान्तिम् ।
नेच्छन्ति के द्रष्टुमिमं नरेन्द्र सतां सभापर्व्वणि पूर्णचन्द्रम् ॥ १९ ॥

सिहासनस्थस्य पदारविन्द दूगन् नमत्यस्य नरेन्द्रवृन्दम् ।
तत्पीठभूमौ विलुठत्युदारा तन्मौलिमाणिक्यमयूखधारा ॥ २० ॥

निरङ्कुशत्वेन मदातिरेका [पृ०१०A] नोज्झन्ति ये स्वैरविहारदर्प्पम् ।
स्थिता निषिद्धा महमूदसाहेर्द्वारि गजेन्द्रा इव ते नरेन्द्रा. ॥२१॥

सम समास्थाय नरेन्द्रवृन्दैरकुण्ठकण्ठ मधुर पठन्त ।
वैतालिका श्रीमहमूदसाह छन्दोविद सर्सदि सस्तुवन्ति ॥२२॥

उपायनानामपि लक्षकोटी राजन्यकोटीरमणे[1] पुरस्तात् ।
दृक्पातमात्रेण कृतप्रसादा यदृच्छयैवार्थिजना लभन्ते ॥२३॥

यतो यतो भूमिभुजोऽवतीर्ण प्रसादपूर्ण खलु दृक्तरङ्ग ।
ततस्तत सर्सदि रत्नमालालक्ष्येण लक्ष्मीर्भजते विशाला ॥२४॥

आकर्ण्यते कर्णविशेषवर्ण्यात् सुवर्णवर्षान् महमूदसाहे ।
प्रागेव सिद्धार्थमनोरथत्वाद् देहीति कस्यापि न दीनशब्द ॥२५॥

कवीश्वराणा महमूदसाहेर्द्वारि प्रसादाविगता द्विपेन्द्रा ।
दानाम्बुना कीर्त्तिसरोजि [पृ०१०B] नीना स्फुटैर्मृणालैरिव भान्ति दन्तै ॥२६॥

कवित्वरूपेण महाकवीना कीर्त्ति स्फुरन्ती महमूदसाहे. ।
विगाहते राजसभान्तराणि सुधाभिषेकोत्सवमावहन्ति ॥२७॥

सिहासने भाति नरेश्वरोऽसौ व्याप्नोति तेजोमहिमाऽस्य विश्वम् ।
कोश श्रयत्यस्य कृपाणयष्टिराज्ञामय रक्षति दिक्षु चक्रम् ॥२८॥

आक्रम्य दिग्दशकचक्रमपाकरिष्णोरन्ध तमो गगनमूर्द्धिनगतस्य पूष्ण
दृग्गोचरे चरति कोऽपि न भूतले यस्तुल्यो रणे वितरणे महमूदसाहे ॥२९॥

उच्चै प्रतापदहन समरे प्रदीप्यज्जुह्वन् मुहुर्बहलशात्रवकीर्त्तिलाजान् ।
रत्नाकरोचितसमुज्ज्वलमेखलाया वीर करग्रहमय कुरुते धराया ॥३०॥

उल्लासयन् श्रियममुष्यकर समुद्र सान्द्रा प्रदा [पृ० ११ A] नलहरीरभितो बिभर्त्ति ।
यास्तन्वते दशदिगन्तरसैकतानि मुक्ताफलैरिव यशोभिरलङ्कृतानि ॥३१॥

इति दशशतनेत्रस्यापि देवी समक्ष क्षितिशतमखकीर्ति कुर्व्वती ब्रह्मपुत्री ।
व्यलसदिह कटाक्षश्रेणिभृङ्गानुयातै स्मितकुसुमसमूहै पूजयन्ती समाजम् ॥३२॥

---

(१) कोटीर–किरीटः

श्रीमान् साहिमुदफ्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्ज्जीयात् तदीयात्मज ॥३३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे राजविनोदे महाकाव्ये सभासमागमो नाम तृतीय सर्ग. ॥[पृ० ११ B]

॥ चतुर्थः सर्गः ॥

भूयोऽप्यभाषत सुभाषितभावपूर्णा सा पूर्णचन्द्रवदना त्रिदशेन्द्रमेवम् ।
राज्ञोऽस्य वेत्रधरदत्तपदावकाशान् देशाधिपान् सदसि पश्य कृतप्रवेशान् ॥ १ ॥

देशस्य यस्य महिमानमिवोपगातुं गङ्गा विराजति सहस्रमुखी भवन्ती ।
वङ्गस्य तस्य नृपति प्रणतिं विधत्ते प्राचीपयोनिधिसमर्प्पितरत्नपाणि ॥ २ ॥

मुक्ताफलान्यमलतारकसन्निभानि व्यक्तेन्दुखण्डशुचिशुक्तिपुटार्पितानि ।
अस्येश्वरस्य यशसा तुलया धृतानि राशीकरोति पुरत प्रणिपत्य पाण्ड्य ॥ ३ ॥

स्त्रीणा विचित्रवरवेशविभूषणानामग्रे निधाय शतक हरिणेक्षणानाम् ।
आराधयत्यमुमनङ्गजिदङ्गरूपमङ्गाधिप सरसनृत्यसमुत्कलोऽसौ ॥ ४ ॥

निर्गच्छता प्रविशता मुहु[पृ०१२A]रङ्गदेभ्यो हीरैश्च्युतै क्षितिभुजा भुजघट्टनेन ।
द्वारप्रदेशमतिदृश्यममुष्य पश्यन् मान जहाति किल रत्नपुराधिराज ॥ ५ ॥

आयाति मन्थरतयैष कलिङ्गनाथ श्रीगूर्ज्जरक्षितिपते प्रतिहारभूमौ ।
उद्दामयामिकमहत्तरहस्तियूथदानद्रवप्रसरपङ्किलपिच्छिलायाम् ॥ ६ ॥

अश्रान्तमेव समरेषु कृतश्रमा ये प्रागेव साम्प्रतममुष्य सभाङ्गणस्था ।
तेऽमी त्रिलिङ्गसुभटा नटता प्रपन्ना प्रोद्दण्डताण्डवकला परिदर्शयन्ति ॥ ७ ॥

भक्त्या न लङ्घयति राघवसेतुसीमा लङ्कापति तदपि यस्तनुते सशङ्कम् ।
सोऽप्यस्य फय चरणौ शरण प्रपन्न कर्णाटक. समुपढौकितहेमकूट ॥ ८ ॥

मुक्ताचलैरिव पयोधिनिवेशबाधामुर्व्यामवज्ञघरभीरु[पृ०१२B]तया चरद्भि ।
ऐरावतप्रतिवलैरवनीन्द्रमेन दन्तावलैर्भजति सिंहलभूमिपाल ॥ ९ ॥

वेष विशेषरुचिर दधतादरेण हस्तारविन्दसमुदञ्चितचामरेण ।
राजा विराजतितरा परिहृष्यमानो(णो) गोष्ठीषु दक्षिणनृपेण विचक्षणेन ॥१०॥

एतस्य चण्डभुजदण्डपराक्रमेण निश्शेषखण्डितरणाङ्गणगौण्डभाव ।
सर्व्वस्वमेव निजजीवितरक्षणाय दण्ड समर्प्पयति माल्वमण्डलेश ॥११॥

य पार्थिव पृथुतर खलु कुम्भकर्ण कर्णेन वर्णमुचित सहते तुलाया. ।
सोऽयं करोति महमूदनृपस्य सेवां दण्डे वितीर्णवरभूरिसुवर्णभार ॥१२॥

य कामरूप इति देशपति प्रसिद्धो न क्षोभ्यते परबलैर्ध्रुवमानसस्थ. ।
अस्याग्रतो विलुठति प्रभुशक्तियोगाद् आकृष्ट एष विनिवेदि [पृ० १३ A] तरत्नदण्ड ॥१३॥

एतस्य केलिवनराजिविहारलाभाद् गन्तु न राजवनमिच्छति मागधेन्द्र ।
न स्तौति पुष्पामयमण्डपवासयोगाद् भोगाय पुष्पपुरवासमपि प्रकामम् ॥१४॥

यद्देशमेत्य सरितौ परिषष्वजाते जह्नो सुता च यमुना च तरङ्गदोर्भि ।
सोऽयं प्रयागपतिरुज्ज्वलशातकुम्भकुम्भै. पयो वहति पेयममुष्य राज्ञ ॥१५॥

य शूरसेन इति शूरतया प्रसिद्धो देशोऽस्ति तस्य पतिरेष विशेष शूर ।
क्ष्माचक्रवर्त्तिमुकुटस्य समीपवर्त्ती सेनाधिपत्यमधिगत्य जयत्यरातीन् ॥१६॥

पार्श्वे चरन् हरिचरित्रकथाप्रसङ्गात् कोटिम्भरेर्महम्मदक्षितिपालसूनो ।
कृत्येषु नित्यमधिकृत्य पद हि राज्ञा विज्ञापना विननुते मथुराधिनाथ. ॥१७॥

एतस्य सम्प्रति मुदफ्फरपातसाहेर्वंशै[पृ०१३B]कभूषणमणेश्चरणेऽवनम्र ।
ढिल्लीपुरीपरिदृढोऽप्यभिमानगाढा प्रौढि परित्यजति निर्ज्जितकान्यकुब्ज ॥१८॥

एतत्समाजमणिमण्डितवेदिकायामालोकयन् घनविलेपनमेणनाभे ।
नेपालमण्डलपति शिथिलीकरोति स्वस्या क्षितेरपि तदाकरताभिमानम् ॥१९॥

इन्द्रोऽसि वीर वरुणोऽसि वसुप्रदोऽसि लोकेश्वरोऽप्यसि पुरारिमुरारिमूर्त्ति. ।
इत्थं हि साहिमहमूदनृपस्य साक्षात् काश्मीरमण्डलपतिस्तनुते प्रशसाम् ॥२०॥

वीर स्वय समिति विद्विषता निहन्ता प्रख्यातपौरुषमशेषधनुर्द्धरेषु ।
आरोहणे चितविचित्रतुरङ्गमाणा सत्राहनाविधिषु सिन्धुपति नियुङ्क्ते ॥२१॥

लक्षेण शार्ङ्गधनुषामपि वाजिना च तेजस्विना समुपढौकितभागधेय ।
अस्याग्रतो भवति गूर्ज्जर[पृ० १४ A]पातसाहेरानम्रमौलिरधिप किल मुद्गलानाम् ॥२२॥

एतस्य साहिमहमूदनृपस्य सर्वं सर्वंसहेश्वरतयाविक्रवर्द्धितर्द्धे ।
स्पर्द्धेत कस्तुलनया मलयाद्धिमाद्रिमस्ताचलादुदयभूमिधर च यावत् ॥२३॥

सिंहासने महति तिष्ठति चक्रवर्ती यस्मिन् विशिष्टमणिदर्पणदर्शनीये ।
पार्श्वस्थराजपरिषत्प्रतिविम्बिताङ्गी साक्षाद् विभर्त्ति पदमस्य निजोत्तमाङ्गे ॥२४॥

अस्यावनीन्द्रतिलकस्य[1] सभा. कवीना केपा न चेतसि चमत्कृतिमावहन्ति ।
वक्त्रारविन्दनिवहेषु समुल्लसन्त स्वच्छन्दमिन्दुरुचयो वचसां विलासा ॥२५॥

अस्य प्रभोर्वितरणार्ज्जित[2]कर्णकीर्त्तेर्विद्वज्जना प्रणयदृष्टिकृतप्रसादा ।
पट्टाम्बरैश्च मुकुटैश्च समप्रतिष्ठासम्भावनां सदसि भूप [पृ० १४ B] तिभिर्लभन्ते ॥२६॥

रागेण सुस्वरतया प्रगुणेन हा हा हू हूपहासपटुसद्गमकप्रयोगा ।
गीतानि गायनवराश्चरितैरुदारैर्गायन्ति गुम्फितपदानि महीमघोन ॥२७॥

अन्योन्यमुष्टिहतिवक्त्रितपृष्ठदेशा पादाभिघातपरिघट्टितहृत्कपाटा. ।
खेलन्त्यनर्गलभुजार्गलदुर्निवारा कौतूहलाय वलिन पुरतोऽस्य मल्ला ॥२८॥

भाति प्रसृत्वरतरैः परितो जनौघैर्विभ्राजमानवहुरत्नसमृद्धिमद्भि ।
क्षोणीसहस्रनयनस्य महान् समाज पूर्णस्तरङ्गनिवहैरिव वारिराशि ॥२९॥

स्वच्छन्दमेव निजमन्दिरभूमिकासु य य प्रदेशमभिलप्य पद दधाति ।
सभ्या प्रतापनिधिमेनमनुव्रजन्त. सर्वत्र तत्र किरणा इव विस्फुरन्ति ॥३०॥

अमृतसमरसाभिर्दृष्टिभि [पृ० १५ A] प्रीतियोगान्मुहुरपि बहुमानं भावयन् भृत्यवर्गम् ।
विशति मधुरगीतैरेव नृत्योत्सवार्थं रचितसदुपचारं मन्दिर सुन्दरीभि. ॥३१॥

इति किल महमूदसाहेरभिनववैभववर्णने प्रसक्ता ।
पुनरपि पुरुहूतकौतुकार्थं सरसपदानि सरस्वती व्यतानीत् ॥३२॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात. श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥३३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये सर्वावसरो नाम चतुर्थ सर्गः ॥

श्री. कल्याणमस्तु लेखक पाठकयो ॥श्री.॥ [पृ०१५ B]



(१) सभाकवी० इति प्रतौ । (२) वितरणार्जित० इति प्र० ।

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

इतो मृदङ्गध्वनिना मृगीदृशो मुहुर्वहन्त्योऽभिनयाय विभ्रमम् ।
रणज्झणन्नूपुरसूचितागमा विशन्ति सङ्गीतकरङ्गमण्डपम् ॥१॥
सुगन्धिनानाकुसुमस्रजाभरैः प्रक्लृप्तमुद्दिश्य विलासमण्डपम् ।
समापतन्त परितो मधुव्रता सृजन्ति झङ्कारमनोहरा दिश ॥२॥
समीरणो रङ्गभुव समुल्लसन् विलेपिता या घनयक्षकर्दमैः ।
सभाजन भावयतीव सौरभैः कृतार्थयिष्यन्निव गन्धवाहताम् ॥३॥
समन्ततोऽपि प्रसृत नृपालये प्रकृष्टकृष्णागरु(१)धूपसञ्चयम् ।
गवाक्षमार्गैर्नियता मुहुर्बहिर्नभस्वता वासितमम्बर महत् ॥४॥
तमो नुदत्यो निजभूषणस्फुरन्मणिप्रभाभि परित पुरन्ध्रय ।
नृपस्य नीराजनमङ्गलोत्सव सृजन्ति सायतनदीपमालया ॥५॥
उदारशृङ्गारमनोहराकृतिर्विभाति राजा कनकासनस्थित ।
स्फुरत्सुप[पृ० १६A]र्णोपरि सन्निषेदुष श्रयन्मुरारेरनुरूपतामिव ॥६॥
सम समन्तात् परिवृत्य वल्लभ विभान्त्यमूश्चन्द्रमिवोडव. स्थिता. ।
विलोचनैरञ्चितविभ्रमैस्स्त्रिय कृतोपहारा विकचोत्पलैरिव ॥७॥
इमा. प्रकृत्येव पर मनोरमा. पुनर्विचित्राभरणैर्विभषिता ।
तथा च नृत्याभिनयार्थमुत्सुका कथ न रामा रमयन्ति मानसम् ॥८॥
अमुक्तया पाणितलादपि क्षण रहस्यसख्येव निवद्धरागया ।
कल क्वणन्त्या वरवीणयाऽनया प्रवीणया राजमनो विनोद्यते ॥९॥
जित हि वादित्रगतेऽपि वेणुना स्वय निधायाधरपल्लवेऽनया ।
यदेव रागातिशयेन मुग्धया स्वकण्ठमाधुर्यमिवोपशिक्ष्यते ॥१०॥
दिगङ्गन्तरालेषु नरेन्द्रमन्दिराद् विजृम्भते सान्द्रमृदङ्गनिस्वन ।
अमु समभ्यस्यति गर्ज्जितच्छलाद् वलाहकस्ताण्डवयन् शिखण्डिन ॥११॥ [पृ० १६B]
कलावतीय मधुरेण गायति स्वरेण सवासितरागमूर्च्छनम् ।
निजं मनो मञ्जुलकास्यतालजस्वनैरिवोज्जागरयन्त्यनुक्षणम् ॥१२॥
इय मुखाम्भोरुहसौरभार्थिनी विलासिनीना मधुपावलिर्मुहु ।
मनोरमालप्तिषु गीतिषु श्रुते करोति हुकारभरेण पूरणम् ॥१३॥

---

(१) गुरु इति प्र० ।

अलंङ्कृतं षोडशभि पदैरियं समग्रसूडक्रमगानपण्डिता ।
प्रवन्धमेलाख्यमखण्डलक्षणं विचक्षणा गायति भूपतेः पुर ॥१४॥

पदैरुदारैर्विरुदै स्वरैरपि स्फुटैश्च पाटैरतिहर्षवर्द्धनम् ।
अमुष्य राज्ञ· कलकण्ठभाषिणी कुतूहलाद् गायति हर्षवर्द्धनम् ॥१५॥

प्रियेण वृत्तै स्वयमेव निर्मितै स्वय च कण्ठाभरणीकृतैरियम् ।
शुचिस्मिता गायति वीणया सम मनोरम रागकदम्बक मुदा ॥१६॥

इय विशन्ती नवरङ्गमङ्गना स्फुरत्प्रसूनै परिपूरिताञ्जलि ।[पृ० १७ A]
प्रियस्य सौन्दर्य्यविनिर्जितात् स्मरात् स्वंय ग्रहीतैरिव भाति मार्गणै ॥१७॥

समुल्लसन्ती करपल्लवश्रिया स्मितेन तन्वी कुसुमानि तन्वती ।
इय कटाक्षभ्रमरोपशोभिता मनोभुव कल्पलतेव नृत्यति ॥१८॥

विधाय विश्राम्यति नृत्यमेकिका परानुसन्धानपरा च नृत्यति ।
समानसौन्दर्यविशिष्टयोर्द्वयोर्विविच्यते नैव परापरक्रम ॥१९॥

समानलावण्यवयोविभूषणा· प्रतन्वते लास्यविलासमङ्गना ।
इमा सुसङ्गीतकलाकुतूहलात् करोति मन्ये बहुरूपविभ्रमम् ॥२०॥

प्रदर्शयन्त्यो वदनै सुधानिधे स्फुट वपुर्व्यूहमुदारकान्तिभि ।
शयैर्दधत्यश्च कुशेशयश्रिय विवृण्वते भावमपूर्वमङ्गना ॥२१॥

यथाङ्गहारैर्हरिणेक्षणा क्षणान् नव नव बिभ्रति विभ्रमोदयम् ।
तथातिदर्पादधुना पुरद्विषो जयाय सज्जीभवतीव मन्मथ· ॥२२॥[पृ० १७ B]

गतानि लीलाललितानि शिक्षितु नितम्बिनीना चरणाब्जसङ्गतै ।
कलं क्वणद्भिर्मणिहसकावलिच्छलेन हसैरभिरम्यते मन· ॥२३॥

समुच्चयैर्भूषणरत्नरोचिषा स्फुट दधाना परिवेषमुज्ज्वलम् ।
नतभ्रुवो बिभ्रति नेत्रवाससस्तिरस्करिण्यन्तरिता इव भ्रमीः ॥२४॥

समीरणै पल्लवलालनोद्गतै· प्रसक्तनृत्यश्रमवारिहारिभि ।
करोति रङ्गाङ्गणकेलिवाटिका वधूजनाना व्यजनौचितीमिव ॥२५॥

प्रियस्य सङ्गीतरसे मनो मनाक् प्रसक्तमाकर्षति चारुहासिनी ।
इय चलच्चामरचारुदोर्लता समुल्लसत्काञ्चनकङ्कणक्वणै· ॥२६॥

प्रकृष्टरोमाञ्चसमुच्छ्वसत्तरस्तनद्वयाभोगविगाढवन्धनम् ।
इय सुनेत्रा प्रियपाणिनार्प्पितं विभर्ति रत्नावलिचारुकञ्चुकम् ॥२७॥

स्वय प्रसन्नेन कुचावलङ्कृतौ प्रियेण हारेण नितान्त हा[पृ० १८ A]रिणा ।
अतीव तुङ्गौ पृथुलौ सुमध्यमा सखीजने साक्षिणि का न मन्यते ॥२८॥

करे गृहीता मणिकङ्कणार्प्पणे प्रियेण तन्वी तनुकम्पमात्मन ।
मरुच्चलाना चतुरा विनुह्नुते मुहुर्लतानामभिनीय विभ्रमम् ॥२९॥

इत प्रफुल्लेन नवाम्वुजन्मना सरोजिनी भानुमिवोपतस्थुषी ।
विभाति वाला प्रसृतेन पाणिना प्रसादयन्ती प्रियमूर्मिकाकृते ॥३०॥

इत कवित्वै. प्रतिभावती प्रभु नवैर्नवैस्तोषयति प्रतिक्षणम् ।
स्फुट पठन्ती किल तानि पञ्जरे करोति कीरावलिरस्य कौतुकम् ॥३१॥

जयेतिशव्दं समुदीरयन्त्यमी कलाविदो मङ्गलसूचकं मुहु ।
नरेन्द्रलक्ष्मीर्निनदेन दन्तिना तमेव सवर्द्धयतीव सम्मदात् ॥३२॥

यो दत्तवानिह हि भूरि सुवर्णवर्षि-
कर्णाय कुण्डलयुग जगदकदीप ।
सोऽय प्रसारितकर किल सुप्रभात
कुर्वन्नृपस्य पुरत प्रतिभाति भानु ॥३३॥ [पृ० १८-B]

इत्यस्य साहिमहमूदनृपस्य गेहे सङ्गीतकेलिषु शतक्रतुमालपन्ती ।
वीणाक्वणैरिव विरञ्चिसुतावचोभिश्चित्ते चमत्कृतिमधत्त समाजभाजाम् ॥३४॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात. श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज. ॥३५॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये सङ्गीतरङ्गप्रसङ्गो नाम पञ्चम सर्ग: ॥



॥ षष्ठः सर्गः ॥

अथ विकस्वरवारिरुहेक्षणा शरदिव स्फुटकाशसितांशुका ।
पुनरवोचत हसमृदुस्वना सुरपति प्रति वागधिदेवता ॥१॥

अयमनर्गलवाहुबलोद्धत. प्रयतते परचक्रजिगी[पृ० १९ A]पया ।
वसुधयापि नृपा धनिनो न किं न विजयेन विना तु यशस्विन. ॥२॥

भजति मन्त्रमशेषविशेषवित् प्रकृतिभि सुकृती कृतनिश्चयम् ।
अभिमतं सकृदुद्यमिनामपि स्फुरति मन्त्रवले खलु सिद्ध्यति ॥३॥

करगतैव सदा परखण्डने प्रखरतर्क्कमतेरिव वादिन. ।
विजयसम्पदमुष्य सुनिश्चिता समरससदि विक्रमशालिन ॥४॥

भुजवलेन विनिर्ज्जितभूतलं प्रतिवलो न हि कश्चिदमु प्रति ।
निजचमूरमुनातिगरीयसी परिजनप्रणयेन पुरस्कृता ॥५॥

क्षितिभृत. कटके गणना कृता सुभटकोटिपु मुख्यतया स्थिते ।
करिषु यूथशतैरथ पङ्क्तिभिर्हयवरेषु रथेषु च मण्डलै. ॥६ ॥

अगणित वितरत्यवनीपताववित्त वसु वैश्रवणोपमे ।
हसति गूर्ज्जरवीरवसुन्धरा न नगरी न विभीषणगोपिताम् ॥७॥[पृ० १९ B]

असिषु निर्मलितेषु शरासनेष्वधिगुणेषु तथा कवचेषु च ।
ध्रुवमभेद्यतरेषु रणैषिणा प्रकटयत नवीनमिवादरम् ॥८॥

स्मरति यन्मनसा तदुपस्थित सपदि वस्तु पुराकृतसग्रहम् ।
भवति भूमिपतेरतिवल्लभ किमिह भाग्यवत खलु दुर्लभम् ॥९॥

नरपतेर्बहुमानपदे स्थिता प्रकृतय पुरुषा समुपस्थिताः ।
निजनिजाधिकृतिष्वधिकादरा अवहिताद् बहुसैन्यसमन्विता ॥१०॥

क्षितिपतौ विजयाय यियासति प्रसृमर पटुदुन्दुभिसम्भव ।
ध्वनिरुदेतितरा परिपूरयन् गिरिदरीर्मुखरीकृतदिङ्मुख.[१] ॥११॥

सकलभूवलयस्य पुरन्दर. प्रवलशस्त्रभृतामतिसुन्दर ।
विलसदभ्रमुवल्लभवन्धुरं समधिरोहति सम्प्रति सिन्धुरम् ॥१२॥

विदितवीरसहस्रपुरस्सर जय जयेति [पृ०२०A] गिर पृथिवीश्वरम् ।
चटुलचारणबन्दिजनेरिता श्रुतिगता सुखयन्ति समन्तत ॥१३॥

---

(१) दिग्मुख इति प्र० ।

दिशि दिशि द्विषतामतिदुस्सहो वहिरसावुदयन्निजमन्दिरात् ।
अधिकदीप्तिधरा समुदीक्ष्यते दिनकर शरदम्बुधरादिव ॥१४॥

नरपतेरनुकारितया श्रिया स्फुटतर वहुरूपगुणाश्रयै ।
अवनिपैर्मदनैरिव सङ्गत चलति चारुवल मकरध्वजै ॥१५॥

अथ सुमङ्गललम्भितगोपुरो निविगतेऽनतिदूरतरे पुर ।
उपवनेऽनुगतैर्वहुशोऽभित पुरजनै प्रणयादुपशोभित ॥१६॥

अरुणरागभरस्फुरिताम्वर प्रततरश्मिसहस्रमवेक्षते ।
इह भुवोऽधिभुवो नवमण्डप दिनकृते प्रतिरूपमिवोदितम् ॥१७॥

सितपटप्रभवै शरदम्वुदप्रतिभटै कटकस्य निवेशभू ।
हिमगिरेरिव सानुभिरुन्न[पृ० २०A]तैरुपचिता क्व न राजति मण्डपै ॥१८॥

विजयिन कटकेऽस्य महीपते प्रकटितैर्निशि दीपसहस्रकै ।
प्रतिहता विजनेषु विजृम्भिता रिपुपुरेषु घना तमसाभरा ॥१९॥

अमृतकुम्भमिवैन्दवमण्डल क्षितिभुज सुरराजदिगङ्गना ।
अभिमुख कुरुते ध्रुवमुच्चकैरुदयपर्व्वतमौलिसमर्पितम् ॥२०॥

क्रीडाविचित्रनवनाटककौतुकेन निद्रा दृशो प्रियतमामपि वञ्चयित्वा ।
कं वा न वीरकटके रमयत्युदारा वाराङ्गनेव रजनी शिशिरप्रगल्भा ॥२१॥

प्राच्या हरित्यरुणसङ्गमपाटलिम्ना व्यक्तेन लक्षितविभातनिशाविभागा ।
आराधयन्ति महमूदनराधिराज वैतालिका सुललितैर्वचसां विलासै ॥२२॥

यन्मङ्गल पुररिपोर्गिरिजाविवाहे लक्ष्म्या स्वयम्वरविधौ च जनार्दनस्य ।
श्रीपातसाहमहमूदनरेन्द्र नित्य [पृ०२१ A] लाभात्तदस्तु रणमूर्द्ध्नि जयश्रियस्त ॥२३॥

कान्ता नितान्तरतकेलिभरेण खिन्ना द्रागेव तल्पमिव नोज्झितुमिच्छतीयम् ।
व्योम्नस्तल नृपविचक्षणदीर्घयामा रात्रि स्फुरद्विरलतारकपुष्पहारा ॥२४॥

अस्माभिरेतदनघ तव गीयमानमाकर्णयन्निव यश श्रवणाभिरामम् ।
चन्द्र कुरङ्गमधुना परिहर्तुमिच्छुर्नातिद्रुतं प्रमितकान्तिरपि प्रयाति ॥२५॥

यावत्कथाभिरनुनीय कथ कथञ्चित् कान्त प्रिया नयति मन्मथवाणवश्यम् ।
तावच्छ्रुते कटु रटत्यनुवेलमुच्चैर्वैरीभवँस्तरुणयोरिव ताम्रचूड ॥२६॥

प्राचीमुखं भ्रमवशात् परिचुम्ब्य किञ्चिद् रागादिवाम्वरवशात्त्ववलम्वमान ।
दूरात् प्रसारयति सम्प्रति पद्मिनीना प्राणाधिप किल करान् परिरम्भहेतो ॥२७॥

उत्कण्ठया निशि भृग विरह विषह्य तीरान्तरेपु सरस सरस रसन्ति । [पृ० २१B]
राजन् परस्परवितीर्णमृणालनालान्येतानि हन्त निथुनानि रथाङ्गनाम्नाम् ॥२८॥

प्राभातिकेन पवनेन हिमागमेऽपि भूय प्रबोधितमहाविरहानलार्च्चि ।
त्वद्वैरिणामविरलैर्जगदेकवीर सिञ्चन्ति लोचनजलैर्हृदय तरुण्य ॥२ ॥

श्रीमण्डपे तव नवारुणभाविशिष्टमाञ्जिष्ठमाञ्जिमनि मङ्गलगायनीनाम् ।
नि.श्वाससौरभगुणेन मुहुर्भ्रमन्तो वीणारवैर्मधुकरा नृप सम्वदन्ते ॥३०॥

दन्तावलेष्वधिकृता युधि योधमुख्यान् ग्रासाय चाटुभिरमून् प्रतिवोधयन्ति ।
धीरा पराभवमपि प्रणयात् सहन्ते मानोज्झिता न नृपसम्पदमाद्रियन्ते ॥३१॥

अन्योन्यमत्सरभृतो नवमन्दुरासु क्षुण्णोदरासु खुरलीखुरलीलयैव ।
चेतो हरन्ति मधुरं नृप हेषमाना प्राभातिकाय यवसाय हयास्त्वदीया ॥३२॥

नाद. समुल्लसति [पृ० २२ A] मर्दलझल्लरीणा सेवार्थराजकसमाजनिवेशशंसी ।
राजन् मुखानि घनमङ्गलभूरिभेरीभाङ्कारभाञ्जि कुकुभामभितो भवन्ति ॥३३॥

इति मधुरवचोभिर्मागधैस्स्तूयमान क्षितिपतिशतचूडारत्ननीराजिताङ्घ्रि ।
दिनकर इव भूयस्तेजसा वर्द्धमानो महमदनृपसूनु स्वा सभामभ्युपैति ॥३४॥

एव निगद्य वचसामभिदेवता सा सानन्दमुल्लसितकुन्दसमानहासा ।
एतत्समाजकविराजकुल कटाक्षैरालक्षितप्रचलषट्पदलक्षणीयै ॥३५॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥३६॥

॥इति श्रीमहाराजाधिराज-जरबक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्रे
राजविनोदे महाकाव्ये विजययात्रोत्सवो नाम षष्ठ सर्गः ॥
[पृ० २२ B]

॥ सप्तमः सर्गः ॥

प्रकाम सुश्रूषौ सति चरितमस्य श्रुतिसुख
नृप स्वेनाङ्गेन श्रितवति सुरेन्द्रे प्रभवता ।
दधाना सान्निध्य सदसि महमूदक्षितिपते
कवीना वाग्गुम्फैर्मुदमुदवहत् सा भगवती ॥१॥

एका सैन्यपरम्परा तव पुरो विन्ध्य विलङ्घ्यापरा
प्रालेयाद्रितटीरतीत्य झटिति प्राची दिश गाहते ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते धावन्ति सार्द्ध मृगै-
स्तन्मध्ये परिपन्थिनो निपतिता स्थातु न यातु क्षमा ॥२॥

दिक्चक्रबन्धपरपत्तिपरम्पराणा पृष्ठानुयातगजवाजिरथव्रजानाम् ।
मध्ये पुर सरभटैस्तव मृग्यमाणा भ्राम्यन्ति हन्त हरिणैस्सह वैरिणोऽपि ॥३॥

त्रस्यन्ति यान्ति परिवृत्य विलोकयन्ति सङ्घीभवन्ति च विघटच दिशो व्रजन्ति ।
मृग्यश्च वीररिपुराजमृगीदृशश्च चेष्टा समा दधति चापभृत पुरस्ते ॥४॥

पृष्टे भ [पृ० २३ A] त्र द्व्यवशाद् रिव स्वनारीराक्रोशिनी पथि विहाय पलायमाना ।
वीर त्वदीयकटकेन पुरो निरुद्धास्तास्वेत्र निस्त्रपतया पुनरापतन्ति ॥५॥

प्राणास्तृणानि गणयन्ति रणे तु शूरा लोकापवादमिति लाघवद त्यजन्ति ।
दृष्टे नृप त्वयि परैर्वदनेर्ऽप्पितानि प्राणावनात् खलु गुरूणि कृतान्यरीणाम् ॥६॥

विख्यातवीरवरदर्प्पहरप्रचण्डदोर्द्दण्डकुण्डलितदुर्द्धरचापदण्ड ।
आखण्डलत्वमखिलक्षितिमण्डलस्य सिंह निहंसि सरुष पुरुषैकसिंह ॥७॥

मुक्ताफलै रविरलत्वदसिप्रहारै कुम्भस्थलात् प्रतिगजस्य समुच्छलद्भि ।
हृष्टानिोरभरात् तव वीरबाह्वोर्वर्द्धापन प्रकुरुतेऽभिमुखी जयश्री ॥८॥

प्रतिनृपगजसिंहत्रासजाग्रद्भयाणा जनयति हरिणा [पृ० २३ B] नां श्रेणिराश्चर्यमेषा ।
क्षितिगतिमपहाय त्वच्छरै पार्श्वलग्नैरुपहितनवपक्षे वान्तरिक्षे चरन्ती ॥९॥

हयखुरहतभूमीरेणुसछिन्नभानौ नभसि धृतपयोदभ्रान्तयोऽमी मयूरा ।
ध्वनिभि निगभीरैस्त्वद्यशोदुन्दुभीना नृपवर तरुखण्डे तन्वते ताण्डवानि ॥१०॥

चलदचलनिभाना व्यूहभाजामिभाना प्रकटयति समन्तात् कुम्भसिन्दूरपूर ।
अभिनवदिनभर्तुस्त्वत्प्रतापस्य वीर प्रसरदुदयसन्ध्यारागसौभाग्यलक्ष्मीम् ॥११॥

त्वत्सेनातुरगावलीखुरपुटैरुद्धूलिताभिर्भुव
धूलीभि स्थलता गता पथि भृश लुप्ता न नद्य कति ।

वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वत्कुञ्जराणा पुन-
दृ्गनोद्रेकलसत्प्रवाहनिवहै. पूर्णा न जाता. कति ॥१२॥

राजन् स्यन्दनमण्डलानि वहुधाऽऽत्र[पृ० २४ A]र्त्तभ्रम विभ्रति
क्रूरा सयति कोटिशश्च सुभटा कुर्वन्ति नक्रौचितीम् ।
कल्लोलश्रियमावहन्ति तुरगा द्वीपोपमां दन्तिनो
मज्जन्ति द्विषता कुलानि वलिना त्वत्सैन्यवारानिधौ ॥१३॥

धावत्तावकवाजिराजिखुरलीक्षुण्णक्ष्मामण्डली
धूलीव्रातनिपातपीतसलिले सद्य स्थलत्व गते ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वत्तोऽधुना तोयधौ
भूय. सेतुपथप्रबन्धचकितो लङ्कापति शङ्कते ॥१४॥

पश्यन्तो वहुशृङ्गिगानभिनयं त्वद्वैरिण. स्वेच्छया
वीर श्रीमहमूदसाह सहसा घाटी*भिरावेष्टिता ।
ऋक्षाकारभृतोऽथ मर्क्कटमुखा केचिच्च कापालिका
योषिद्वेषभृतो नटैर्निजगृहान् निर्यान्ति निर्यन्त्रणम् ॥१५॥

त्यक्ता. शृङ्खलिता द्विपा परिहृता वाहोत्तमा. सयता
मञ्जूषा [पृ० २४ B] समुपेक्षिता समणय कोशालयै सार्गलै. ।
पुर्यश्चाभिमुखं प्रकीर्णविपणा नो दीक्षिता एव तै
सर्व्वस्वार्पणतत्परैस्तव परै स्व रक्षितु जीवितम् ॥१६॥

त्रुट्यद्भिर्मणिमेखलागुणशतैर्हारैश्च कण्ठच्युतै[1]
विस्रस्तै[2]रवतसकै प्रतिपद भ्रष्टै पुनर्नूपुरै ।
कान्तारेऽपि पथि प्रसाधनविधिर्वित्तरैरग्रतो
नाथ त्वत्परिपन्थिना कुलवधूवर्ग्गे समारभ्यते ॥१७॥

अद्रे कन्दरमाश्रयन्ति रिपवस्तन्मन्दिरं मर्क्कटा-
स्ते द्रुसस्तरशायिन परममी दोलासु केलीपरा ।
ते भ्राम्यन्ति वनान्तरेषु विहरन्त्युद्यानमालास्वमी
स्वामिस्त्वद्भुजविक्रमेण जनित तद्भाग्यमप्यन्यथा ॥१८॥

आरोहन्ति गिरिं विशन्ति विपिन भ्राम्यन्ति दिक्प्रान्तरे
पारावारमहो तरन्ति परितो द्वीपान्त[पृ० २५ A]रं यान्ति च ।

* घाटी-धाड इति लोके ।
(१) कण्ठश्च्युतै इति प्रतौ । (२) विश्रस्तैरिति प्रतौ ।

यत्र त्वद्भयतो व्रजन्ति रिपवो वीर प्रताप स्फुट
तत्रैव प्रकटीभवन् हठवशान् मन्येऽग्रतो धावति ॥१९॥

त्वद्विद्वेषिपुरेषु दावहुतभुग्ज्वालावली जृम्भते
लुम्पन्ति क्षितिमम्वर हयखुरैरुद्धलिता धूलय. ।
हेलाखेलकुतूहलादिव भटा कुर्व्वन्ति कोलाहल
स्त्क्षनजौघरागसलिलैर्नश्यन्ति ते शात्रवा . ॥२०॥

आविद्धा परित शिलीमुखगतै रक्तप्रसूनोद्गिर-
श्शाखाखण्डभृत परिच्छदभरैर्दूरान्तरे वर्जिता ।
लक्ष्यन्ते न वनान्तरे त्वदरयो राजेन्द्र सेनाचरै-
स्तुल्याकारतया वसन्तसमये लीना पलाशद्रुमै ॥२१॥

किमपि विरमद्दानोद्रेका सरस्स्ववगाहनै
शिशिरसमयप्रान्ते राजेन्द्र भद्रगजास्तव ।
कमलवनिकास्त्य[पृ० २५ B]क्त्वा सद्य कटेषु निपातिना-
मिह मधुलिहा झङ्कारौघैर्वहन्ति मद मुहु ॥२२॥

अतिवलतया निर्मथ्नन्तो द्विषा युधि यूथपान् विविधनगरीसौधाट्टालप्रपातसमुद्यता ।
उपवनतरुश्रेणीरुच्चैर्विचूर्णयितु क्षमास्तव कथमिमे राजन् मत्ता नदन्ति न दन्तिन ॥२३॥

रिपुजनपदाक्रान्तौ धारां समुत्पतनक्रिया प्रतिगजघटाकुम्भद्वन्द्वप्रहारविधौ पुन. ।
धरणिवलय जेतु राजन् परिक्रमणे दिशा कटकसुभटैरध्याप्यन्ते हयास्तव मण्डलीम् ॥२४॥

असमसमरक्रीडावेशान्मुहुर्विजितश्रमा पवनरयमप्युच्चैरेते निवर्त्तितुमुद्धता ।
नृप तव हया. क्षोणाघातैरुदग्रखुराञ्चलैर्विजयकमलामाशसन्ति त्वदीयकरे स्थिताम् ॥२५॥

न दक्षिणनृप क्षण भजति मेदपाटो मुद न विन्दति न माद्यति स्वहृदये स ढिल्लीपति ।
धराधर तवाधुना समरचण्डिमव्याहत करोति न च डम्बर स खलु गौडचूडामणि ॥२६॥

अखण्डि रणचण्डिमा झटिति मण्डपक्ष्मापतेरलुण्टि पुटभेदन खलु गरिष्टमाष्टाभिधम् ।
अवन्धि गजवन्धिराडवधि दुर्द्धरो विन्ध्यराडमाथि मथुराधिपो नृप भवद्भटैरुद्भटै ॥२७॥

वङ्गा के क इमे त्रिलिङ्गसुभटा केऽमी महाराष्ट्रजा
के वा मालव-मेदपाटकुनृपा कर्णाटकीटाश्च क ।
वीर श्रीमहमूदसाहनृपते त्वज्जैत्रयात्रोत्सवे
नि साणध्वनिधौङ्कृतैरपि चमत्कुर्युर्दिशामीश्वरा ॥२८॥

सेवन्ते चरणौ शकक्षितिभुजो दत्ते च गौडेश्वर
कन्यारत्नमखण्डदण्डमपरे कर्णाट-लाटादय: ।

त्यक्त्वा लण्टितदे[पृ० २६ B]शकोशविषयो द्राग् दुर्गमानग्रह
　　राजन् जीवितमात्रलाभमधुना काँक्षन्त्यसौ मालव ॥२९॥

या शीर्णोपवनेषु दग्धनगरेष्वालोक्य वीचिभ्रमाद्
　　देशेषु द्विषता हठेन हरिणा धावन्ति तृष्णालव ।
न ह्येता मृगतृष्णिका नृप भवत्तीव्रप्रतापानल-
　　प्लुष्टस्य द्युमणेर्निमज्जनकृते तोयाशया सम्भृता ॥३०॥

भग्नानां समराङ्गणे वलवता वीर त्वया वैरिणा
　　यद् ग्रामेषु पुरेषु याचकजना देशेषु च स्थापिता ।
एतत्ते महमूदसाह चरितं लोकोत्तर सर्व्वत
　　कीर्त्तिस्तम्भमिषादुदञ्चितभुजा व्याख्याति पृथ्वी स्वयम् ॥३१॥

असमसमरकेलीसङ्गमायासभाजा क्षितिप तव भटानां भग्ननानारिपूणाम् ।
मलयमरुदिदानी चन्दनामोदवाही प्रियसुहृदिव [1]मृद्नात्यङ्गमालिङ्ग्य खेदम्॥३२॥[पृ०२७A]

स्फुरति विरहभाजा दु सहोऽय वसन्तस्तरुणजनमनङ्गो बाणलक्षीकरोति ।
इति हि परभृतानां वाक्कुहूकारगर्भा त्वरयति नृप पान्थान् प्रेयसीसङ्गमार्थम् ॥३३॥

कनकशिखरवद्भिर्मञ्जरीपुञ्जिताग्रैर्नवकिशलयसङ्गाकृष्टकौशेयशोभै ।
प्रतिदिशमुपचिन्वन् गूर्ज्जरक्ष्मापलक्ष्मी रचयति सहकारैस्तोरणानीव चैत्र ॥३४॥

घनतरमकरन्दै स्नापिता पल्लवौघै कलितललितवासा प्रोल्लसद्दिङ्मुखश्री. ।
स्फुटकुसुमपरागै सान्द्रकाश्मीररागैर्नृप नवऋतुलक्ष्म्यालङ्कृता गूर्ज्जरक्ष्मा ॥३५॥

अपि बहुतरदूरादुत्सव लोचनाना वरणशिखररूढै केतनैर्वर्द्धयन्ती ।
नृपतुरगरयेण प्रापितासन्नदेशा जनयति मुदमुद्यततोरणा राजधानी ॥३६॥ [पृ०२७ B]

एना प्रविश्य नगरी परमर्द्धिपूर्णा द्वारावतीमिव रमारमण प्रकामम् ।
नानाविधान्यधिवसन् मणिमन्दिराणि राजन् रमस्व तरुणीभिरुदारमूर्त्ते ॥३७॥

सम्भाविता करपरिग्रहणेन सम्यक् सौभाग्यमेतु भवता नृप रत्नगर्भा ।
श्रीपातसाहमहमूद पितेव पुत्रान् प्रेम्णाधिकेन परिपालय भृत्यलोकान् ॥३८॥

एव विधानि वचनानि कवीश्वराणा कर्णामृतानि कलयन् नृपचक्रवर्त्ती ।
सौवर्णवृष्टिभिरध कृतकर्णकीर्त्ती राज्यश्रियाभिमतया रमते प्रकामम् ॥३९॥

श्रीसङ्गमेऽपि सुविवेकपुरस्कृताया कीर्तिप्रशस्तिकरणादनृणीभवन्त्या ।
आज्ञावशेन वचसामधिदेवताया काव्य मया विरचित महमूदसाहे ॥४०॥

---

(१) मृद्नात्यग० इति प्र०

प्रयागदासस्य तनूद्भवेन श्रीरामदासेन कृ [पृ० २८ A] ताभियोग ।
व्यधत्त काव्य महमूदसाहे सदोदयायोदयराजनाम्ना ॥४१॥

[लोका सप्त?] विभान्ति यावदनघा यावच्च सप्तर्षयो
यावद्दीप्यति सप्तसप्तिरमलो यावच्च सप्तार्णवा ।
यावत्सप्तधराधरा पुनरिमा. पुर्यश्च सप्तोत्तमा
काव्य श्रीमहमूदसाहनृपतेस्तावज्जनैर्गीयताम् ॥४२॥

श्रीमान् साहिमुदप्फरस्समजनि श्रीगूर्ज्जरक्ष्मापति-
स्तस्मात् साहिमहम्मदस्समभवत् साहिस्ततोऽहम्मद ।
जातस्साहिमहम्मदोऽस्य तनुजो गायासदीनाख्यया
ख्यात श्रीमहमूदसाहिनृपतिर्जीयात् तदीयात्मज ॥४३॥

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज-जरवक्सपातसाह-श्रीमहमूदसुरत्राणचरित्र
राजविनोदे श्रीमदुदयराजविरचिते महाकाव्ये
विजयलक्ष्मीलाभो नाम सप्तम. सर्गः ॥



वितरति सता प्रसन्न सहस्रमयुत च लक्षमथ कोटिम् ।
महमूदसाहनृपति पूरयति प्रार्थनामेक ॥१॥



श्रीरामेणात्मजपठनार्थमिद पुस्तकमलेषि ॥

[पृ० २८ B]



॥ श्री ॥

महमूद (बेगड़ा) का दोहाद का शिलालेख

(वि० सं० १५४५; शक सं० १४१०)

श्री[1]

कास[2]मीरवासिनी देवी नत्वा साहि[3]मुदा [फ] रस्यादौ
वशं जगति विशु [द्ध] – – च[4] पातसाहीनां (नाम्) ॥ १ ॥

आदौ श्री [गू[5]] र्जरेशो नृपकुलतिलक [.] प्राप्त पु[ण्यै[6]] कदेश[]
श्रीमान् शौर्यादिसारैर्नृपकुलमखिल यो विजित्याधि [त] स्थौ ।
पश्चात् श्रीपत्तनेस्मिन् प्र [त्र]रगुण ⏑ – – रकीर्त्तिर्यशस्वी
मानी भूपालमौलिर्वरमुकुटमणि[7]र्वीरविख्यातमू [र्त्ति.] ॥ २ ॥

श्रीमान् वीरोऽभवत् शाहिमुदाफरनृपप्रभु. ।
तत्पुत्रो वीरवि [ख्या]नो महम्मदमहीपति ॥ ३ ॥

तस्यान्वये — ⏑ ⏑ – प्रसूत. प्रतापसंतापितमालवेश. ।
वीर सदा श्रीमदहम्मदेन्द्रो राजा महीमंडलमडनाय ॥ ४ ॥

य. सर्वधर्म्मार्थविचारसारसर्वज्ञ [शुद्धो नृप] वशजात ।
जित्वा मही मालवकाधिपस्य जग्राह तद्देश[8]धन च पश्चात् ॥ ५ ॥

तस्मात्पुनर्भूमिपति. प्रधानवीर [] सदा साहमहम्मदोऽभूत् ।
दाता जगज्जीवनजातकीर्त्ति [र्यस्य प्रभावो] विदित पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

साहश्रीमहमूदवीरनृपति. श्रीग्यास [दीन] प्रभो-
र्विख्यात ⏑ ⏑ – [9]उदारचरितो जातोन्वये वीर्यवान् ।
यो राज्यादधि [क] ⏑ – प पदवी – – घदामेन[10] वै
कर्ण्णं विक्रमभूपतिं च जितवान् शास्त्रार्थसारे गुरुम् ॥ ७ ॥

राज्य प्राप्य निज प्रस[11]न्न [वद]नो दातातिवी [र्या] न्वित
पश्चाद (द्द) क्षिणदिक्पतिं स्वनगरे स – ⏑[12] जित्वा रिपुम् ।

---

(१) यह अक्षर अब बहुत हल्कासा दिखाई पडता है। इसके पहले सम्भवत: 'स्वस्ति' शब्द होगा। (२) कास्मीर होना चाहिए। (३) शुद्ध शब्द 'शाहि' है। आगे तीसरे श्लोक में शाहि लिखा है। (४) सम्भवत: यहा 'वक्ष्ये' पद है। (५) अब इस अक्षर की 'ऊ' की मात्रा ही दिखाई देती है। (६) पाठ संदिग्ध है। (७) रेफ यहा णि पर दिया गया है। (८) 'तद्देशमधन च' ऐसा होना चाहिये। (९) 'स्वगुणैर्' (?) (१०) 'दानेन' होना चाहिए। (११) यहा स पर अनुस्वार दिया गया है जो अनावश्यक है। (१२) सम्भवत 'सङ्ख्ये च' ऐसा पाठ हो ।

[तप्तो वै]ई (द) मनाधिमस्य सकल देश सम भूधरै-
नीत्वा श्रीमहमूदसाहनृपतिश्चक्रे मति [रै] वते ॥ ८ ॥

तत्रोत्तुगनगेन्द्रसगतभटान् वीक्ष्यादरेण [स्वय]
युद्ध चाद्भुतविक्रम [स कृतवान्] भूप. स्वसेनाजनै ।
जित्वा दुर्गमशेपवैरिसहित यो जीर्ण सज्ञ ⏑–[1]
कीर्तिस्तभमिद चकार नृपतिस्तद्रैवत पर्वतम् ॥ ९ ॥

चपक – –[2] पश्चात् स – – वैरिकुद्ध(ल?)कुद्दाल [] ।
जित्वा पावक [दुर्गं] पित्रा रुद्ध प्रतापतापू[3] (र्वम्) ॥१०॥

महमूदमहीपालप्रतापेनेव पावकम् ।
प्रविश्य ज्वालित [सर्वं] वैरिवृ द पतगवत् ॥११॥

जीवतं तत्पति व[द्ध्वा] दुर्गं [नी] त्वा महावलम् ।
चकार तत्पुरे राज्य महमूदमहीश्वर [] ॥१२॥

ज्ञात्वा गुणै [] कर्म्मभिरप्युदारैरेत कुलीन नृपवशजातम् ।
मुख्य चकारात्मगृहे महीश स सेवके [भ्यो]धिकमानदानै ॥१३॥

पश्चादि [म] सेवक [मि] कवीरमिमादल कार्यकर विदित्वा ।
आ – ⏑ – – – ⏑ सदातिगूरं सद्वाक्य – – ⏑ ⏑ देशर[4]क्षाम् ॥१४॥

[पा] मीरवशे नृपतिश्र [धा] न (न)– – ⏑ मोभूदतुलप्रताप. ।
स – हव या स (सा) नागरीत – सूयते – ⏑ ⏑ चारुकीर्त्ति ॥१५॥

तस्मात् संत्रलवनेज – – – मखिल क्षितौ – – –( )
मा (मी) प्रतापवान्,वीर (रो) विख्यात [] पुण्यकर्मणि ॥१६॥

मह[मू]द महीपालसेवाप्रौढप्रतापवान् ।
दानवीरश्चिर जीयान्मलिकश्रीईमादल ॥१७॥

पल्लीदेशाधिकार च पुण्य पुण्यमतिस्तदा ।
दुष्टारिहृदये राज्य[5] दुर्गमेनं चकार वै ॥१८॥

[येनादौ] ⏑ ⏑ – ⏑ धौति [विपुल] गगोर्मिकल्लोलवत्
पूर्णं पुण्यजलेन सर्वं ⏑ ⏑ – – – – ⏑ – – ⏑ – ।
कासार ⏑ दक्षोद ण[6] मनसोल्लासेन निष्पादित
सोय वीर इमादले [द्रनृप] तिर्दुर्गं चकारोत्तमम् ॥१९॥

---

(१) 'सज्ञ पुन.' ऐसा होना सभव है। (२) 'द्रग' होगा। (३) इस पद का ठीक ठीक अर्थ नही निकलता। पाठ सदिग्ध है। (४) मूलमें 'वेशरक्षा' जैसा मालूम देता है। (५) शल्य। (६) 'कामारद्वयमादरेण' यह पाठ हो सकता है।

अहम्मदपुरॉतरस्थ कूपो यस्य विराजते ।
जगज्जीवनदानेन यशोराशिमिवोद्वहन् ॥२०॥
य [ ] श्रीमन्महमू शाहकृपया श्रीचपकाख्ये पुरे
[1]––[की] र्निविवर्द्धन मुविपुल तापत्रयोन्मूलनम् ।
मानदेन चकार मानससम 'मत्पुष्कर' भूतले
मोय वीर इमादलेंद्रनृपतिर्दुर्गं चकारोत्तमम् ॥२१॥
वागू गाविपतिर्यस्य जयदेवो म – ट ‿ [।]
मिर्षैन्ये लूषजीवगिर [,] स्वयम्[2] ॥२२॥
तत्रागेबा [न्रि] पून् हत्वा कृत्वा दिग्विजयोदयम् ।
रायदुर्गं समजयत् योमौ वीर इमादल ॥२३॥
(गावल) वेधनेन सकल तद्वैरिवृन्द त [था]
लि – त्रिमुक्त गोलकगणै सहत्य चूर्णीकृ [तम्]
दुर्ग पू [र्ण] बली विजित्य सबल प्रोद्यत्प्रतापेन यो
धर्म्मद्व रमिद प्रहारसहित त – ‿ पा – र्ददौ[3] ॥२४॥
बागू [ल] भूप लबल प्रह [न्य प्रच] ण्डभूमी-वरकालकर्त्ता ।
य पावके पूर्ववि [त्रृ] द्धभर्ता किं वर्ण्यते चास्य जयस्य वार्ता ॥२५॥
दधिपद्रे रुचिरतर दुर्गं वै दु सह ।
श्रीमदिमादलमुल्को दान सुदरश्चक्रे ॥२६॥

श्रीनृपविक्रमार्क्कसमयातीत सवत् १५४५[4] वर्षे शाके १४०१०[5] वर्षे प्रवर्तमाने वैशाख शुदि १३ शुभे दिने मलिक श्रीइमादलमल्किि दुर्ग उद्धरे [श्रीरस्तु] जे गढ पोलि नी पारी ते वतरी तिस ।

---

(१) 'पुण्य'

(२) अर्थ स्पष्ट नही है । (३) तर्म्म कृपाब्धिर्ददौ ।

(४) १५४ और ५ के बीच मे एक बिन्दु सा दिखाई देता है । सभवत पत्थर की खरोच है ।

(५) १४ और १० के बीच का बिन्दु अनावश्यक है ।

महमूद बेगड़ा के समय का दोहाद का शिलालेख†।

(वि० स० १५४५, शाके १४१०)

मूल लेख के संपादक

डॉ० एच्० डी० साँकलिया, एम्० ए०, एल्-एल् बी०,
पीएच्० डी० (लन्दन)

यह शिलालेख प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई में सुरक्षित है। उक्त म्यूजियम के सरक्षको के सौजन्य से प्राप्त लेख की छापों एव मूल शिला से भी देखकर इस लेख को सर्वप्रथम अभी प्रकाशित किया जा रहा है। पुरातत्व विभाग के क्यूरेटर श्री जी० वी० आचार्य व श्री आर० के० आचार्य ने इस लेख के कुछ अशो को पढने में सहायता की है अतः सम्पादक उनका आभार मानता है। जिस पत्थर पर यह लेख खुदा हुआ है वह ३ फीट ३ इंच लम्बा और १ फुट ७ इच चौड़ा है। कहते है कि यह पत्थर दोहाद कस्बे से प्राप्त किया गया था जो बम्बई प्रेसीडेन्सी में बडौदा से उत्तरपूर्व में ७७ मील पर स्थित है। दोहाद पांचमहाल जिले के सबडिवीजन का एक प्रमुख कस्बा है। दो लम्बी दरारो के अतिरिक्त कई जगह से इस पत्थर की चटलें उतरी हुई है जिनसे इस लेख को पढने में कठिनाई पडती है। कहीं-कहीं इस पर सिन्दूर अथवा और कुछ रंगीन चिकना पदार्थ लगा हुआ है जिससे यह कठिनाई और भी बढ जाती है। इस लेख में कुल २२ पंक्तियां लिखी हुई है, पहली व अन्त की दो पक्तियो के बहुत से अक्षर बिलकुल घिस गये है। प्रत्येक अक्षर प्राय. ½ इच का है।

यह लेख वैशाख सुदी १३ विक्रम सम्वत् १५४५, शक सम्वत् १४१०, का है (सम्भवत: २१ वीं पक्ति के पूर्वार्द्ध में हिज़री सम्वत् और वार का नाम भी खुदा हुआ था जो बिलकुल चटख गया है)। गणना से यह दिन बृहस्पतिवार, २४ अप्रैल १४८८ ई० (हिज़री सन् ८९३ जमादि-उल्-अव्वल) आता है।‡ तिथि के विषय में यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस लेख पर विक्रम सम्वत् तथा शक सम्वत् दोनो ही खुदे हुए है। यह क्रम गुजरात में पाए जाने वाले महमूद के समय के सभी सस्कृत शिलालेखो¶ में

---

† 'एपिग्राफिआ इण्डिका' के जनवरी, सन १९३८ (भाग २४, अक ४) मे प्रकाशित।

‡ इण्डियन एफिमरीज, जिल्द ५, पृ० १७८ (एस के पिल्लई)

¶ (बाई हरी) का शिलालेख। इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ४, पृ० ३६८ 'अडालज वाव' शिलालेख 'रिवाइज्ड लिस्ट एन्टीक्वेरियन रिमेन्स बाम्बे प्रेसीडेन्सी' पृ० ३०० ।

नहीं बरता गया है वरन् उत्तरी भारत के दूसरे लेखो में भी ऐसा ही पाया जाता है। काठियावाड में प्राप्त *इसी काल के शिलालेखो † पर केवल विक्रम सम्वत् ही पाया जाता है। ‡

लेख की लिपि देवनागरी है और इस विषय पर विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

शिलालेख की भाषा सस्कृत है और आरम्भ में मङ्गलाचरण व अन्त में २६ वें पद्य के बाद के अश के अतिरिक्त सम्पूर्ण लेख पद्य में है।

दुर्भाग्य से अन्त की तीन पंक्तियाँ वहुत ज्यादा घिस गई है और यह ठीक-ठीक पता लगाना सम्भव नहीं है कि यह लेख महमूद बेगड़ा के राज्यकाल में खुदवाया गया था अथवा उसकी स्वयं की आज्ञा से उसके कार्यों का इतिहास अकित करने के लिये उत्कीर्ण किया गया था। इन पंक्तियो से जो कुछ आशय निकलता है वह इतना ही है कि यह लेख महमूद वेगडा के मुख्यमन्त्री इमादुल-मुल्क द्वारा दधिपद्र (दोहाद) के दुर्ग का निर्माण कराए जाने के बाद ही खुदवाया गया था। प्रसंगवश इसमें गुजरात के सुलतानो की वशावली, उनके कार्यों और मुख्यत महमूद के वीरकृत्यो का भी वर्णन आगया है। यह पहला ही शिलालेख है जिसमें महमूद वेगडा और उसके पूर्वजो के कार्यों का अर्थात् उनकी बनवाई हुई इमारतो व उनकी जीती हुई लडाइयो का विवरण दिया हुआ है। ¶

* देखो भाण्डारकर, लिस्ट आफ इन्सक्रिप्शन्स आफ नार्दर्न इण्डिया (List of Inscriptions of Northen India,) स० ७२३ और ११२१, ७३६ और ११२६, ७३७ और ११२७, ७४८ और ११२८, ७५७ और ११२९, ७७३ और ११३० ८७३ और ११३६, ९०१ और ११३८, ९६७ और ११४६।

† देखो रिवाइज्ड लिस्ट Revised List etc पृ० २३९-२४६, २४८-४९, २५१, २५४, २५७, २६३।

‡ इससे पता चलता है कि सवत्सरो का प्रयोग करने की जो प्राचीन रूढ़ि काठियावाड मे १३वी शताब्दी के अन्त तक पाई जाती थी वह बाद में बन्द हो गई थी।

¶ अब तक के प्रकाशित अन्य शिलालेख ये है—अरबी लेख—रिवाइज्ड लिस्ट, एण्टी क्वेरियन रिमेन्स बाम्बे प्रेसीडेन्सी, पृ० ३०३, ३०६-०७, एक लेख एण्टी० रिपोर्ट A.S I १९२७,२८ पृ० १४६ मे प्रकाशित हुआ है, कहते है कि इसमें गुजरात के उन सुलतानो के नाम दिए है जिनका दौहाद कस्बे को पूरा कराने से सम्बन्ध था। हालोल दरवाजा और चाँपानेर से प्राप्त दो लेख 'एपि० इन्डो-मोस्लि०' १९२९-३० पृ० ४ में प्रकाशित हुए है।

सस्कृत लेख—अडालज 'रिवाइज्ड लिस्ट' पृ० ३१० वाई हरी का शिलालेख Inscription Rev List पृ० ३००, इन्डियन एण्टी०, जिल्द ४, पृ० ३६८, जिल्द ४ पृ० २९८।

१५०० ई० तक के सभी लेखो में—चाहे वे मुसलमान शासको के हो अथवा

यह लेख मङ्गलाचरण से आरम्भ होता है जिसमें काश्मीरवासिनी देवी§ को नमस्कार किया गया है। इसके बाद मुदाफर पातशाह का उल्लेख है जो गुजरात के मुजफ्फर प्रथम के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

इसके बाद गुजरात के सुलतानो की वंशावली इस प्रकार दी हुई है --(१) शाह मुदाफर (२) उसका पुत्र महम्मद (३) उसके वश में उत्पन्न शाह अहमद (४) तत्पुत्र शाह महम्मद (५) उसका वशज शाह महमूद।

यह वशावली मुस्लिम इतिहासकारो द्वारा दी हुई (एव कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया* द्वारा स्वीकृत) वंशावली से भिन्न है। इस पर नीचे विचार किया जाता है।

फरिश्ता,† मीराते सिकन्दरी,‡ मीराते अहमदी¶ और अरेबिक हिस्ट्री ऑफ गुजरात|| के लेखको ने सुलतानो की सूची इस प्रकार दी है –

राजपूत राजाओ के, उनके मुसलमान प्रभुशामको का उल्लेख है। उनमे से प्रस्तुत लेख के समय का निकटवर्ती एक ही लेख राजपूताने की जोधपुर रियासत के अन्तर्गत लाडनू नामक स्थान का मिला है। यह लेख सस्कृत में है और वि० स० १३७३ का है। प्रसगवश इसमे शाहबुद्दीन गोरी से अलाउद्दीन खिलजी तक दिल्ली के बादशाहो की वशावली दी है। देखो जि० १२, पृ० १७-२७।

§ महमूद के समय के दूसरे लेखो मे इस देवी को पहचानने मे सहायता नही मिलती। सभवत यह ब्राह्मी सरस्वती देवी है क्योकि गुजरात के एक लेखक चन्द्रप्रभसूरि (१२७८ ई०) ने भी अपने प्रभावक-चरित (स० हीरानन्द शर्मा, बम्बई १९०० ई०) के हेमचन्द्र प्रबन्ध खण्ड में 'देवी काश्मीरवासिनी' पद का प्रयोग किया गया है (पद्य ३९–४६)। इसमे यह बताया गया है कि हेमचन्द्र ने काश्मीरवासिनी ब्राह्मी देवी को प्रसन्न किया और 'सिद्धसारस्वत' हो गया। यहा काश्मीर के शारदामन्दिरवाली दुर्गा सरस्वती से भी तात्पर्य हो सकता है। यह मन्दिर १५वी और १६वी शताब्दी मे भारतवर्ष मे खूब प्रसिद्ध था। देखो— स्टॉईन का 'कल्हणम् क्रानिकल आफ काश्मीर,' भा० २, पृ० २७९।

* जिल्द ३, पृ० २९५ और ७११.

† ब्रिग्स द्वारा फारसी से अग्रेजी अनुवाद–'हिस्ट्री आफ दी राइज आफ दी महोमेदन पावर' जिल्द ४, पृ० १-९। यहा पृ० ८-९ पर फरिश्ता ने किसी इतिहासकार का हवाला नही दिया है परन्तु लिखा है कि मुजफ्फरशाह ने अपने पुत्र को दिल्ली रवाना होने से पूर्व 'गियास उद्दौला-उद्दीन मोहम्मद शाह' की उपाधि प्रदान की।

‡ फरीदी कृत अनुवाद पृ० ७, इसमें भी लिखा है कि जफरखा ने स्वतन्त्र होने से पहले तातारखा को नासिर उद्दीन मुहम्मदशाह की उपाधि देदी थी।

¶ Bird (बर्ड) कृत अनु० पृ० १९५,-१९७, २०१-०२,

|| जफ़र उल्वालि बी मुजफ्फर वा आली (रॉस) पृ० १, ३, १४, ९०९ (देखो जिल्द ३ परिशिष्ट)

(१) मुजफ्फर शाह (मुजफ्फर प्रथम) (२) अहमद शाह (अहमद) (३) उसका पुत्र मुहम्मदशाह (मुहम्मद), (४) उसका पुत्र कुतुबउद्दीन (कुतुबउद्दीन अहमद शाह), (५) दाउद (दाऊद) और (६) महमूद (महमूद प्रथम), मुहम्मदशाह का द्वितीय पुत्र ।

इससे विदित होगा कि इस लेख की वंशावली में क्रमाक (४) व (५) के अर्थात् मुहम्मदशाह के पुत्र कुतुबुद्दीन* और उसके भाई तथा कुतुबुद्दीन के काका दाऊद के नाम नहीं दिए हुए हैं । परन्तु इसमें महम्मद (जिसको मुसलमान इतिहासकार मुहम्मद लिखते हैं) का उल्लेख अवश्य किया गया है । मुहम्मद का असली नाम तातारखाँ था और उसको यह उपाधि, उसके दिल्ली रवाना होने से पहले, उसके पिता जफरखाँ ने प्रदान की थी ।† यह घटना उस समय की है जब जफरखाँ दिल्ली के बादशाह की ओर से गुजरात में सूबेदार ही था और वहाँ का स्वतन्त्र शासक नहीं हुआ था । प्रस्तुत शिलालेख में महम्मद का 'महीपति' की स्थिति में वर्णन किया गया है । सम्भवतः उसके लिए इस उपाधि का प्रयोग महम्मद के उपरिवर्णित अल्पकालीन प्रभुत्व का स्मरण कराने के लिए ही किया गया हो । यह बात इस कारण से और भी सगत प्रतीत होती है कि उसे 'महीपति' लिखने के अतिरिक्त इस लेख में उसके द्वारा विजय की हुई किन्ही लडाइयो का उल्लेख नहीं किया गया है ।

परन्तु, इन कुतुबुद्दीन और दाऊद के नाम इसी शिलालेख में छोड दिये गये हों ऐसी बात नहीं है, दूसरे दो अरबी शिलालेखो में भी थे नाम नही मिलते हैं । एक लेख तो स्वय महमूद‡का है और दूसरा बाई हरी की बनवाई बावडी¶में प्राप्त हुआ है ।महमूद के चाँदी के सिक्को§ और अन्य कथानको में भी इनका पता नहीं चलता है । इसके अतिरिक्त इन लेखो में भी मुजफ्फरशाह के पुत्र मुहम्मद (तातारखाँ) को मुहम्मदशाह लिखा है जिसका अर्थ यह निकलता है कि वह गुजरात के स्वतन्त्र सुलतानो में से था ।

इस वशावली के सम्बन्ध में दो बातें और ध्यान देने योग्य है । (१) यद्यपि अहम्मद (क्र० ३) और महमूद (क्र० ५) क्रमश महम्मद (क्र० २) और शाह महम्मद (क्र० ४) के पुत्र थे परन्तु जिस प्रकार इन दोनो को स्पष्टतया क्रमश. मुजफ्फर और

---

* देखो—ऊपर बताए हुए इतिहासकारो की टिप्पणिया ।

† ब्रिग्स–पृ० ९, फरीदी–पृ० ६, बर्ड–पृ० १७६, फरिश्ता ने लिखा है कि तातारखा ने अपने पिता को कैद करके मोहम्मद शाह की उपाधि ग्रहण की, रॉस ने पृ० ६०४ पर लिखा है कि मुहम्मदखा उसका नाम था और तातारखा उसकी उपाधि थी ।

‡ एपि० इण्डो-मोस्लिम Ep Indo–Mos , 1929–30 P 4

¶ इण्डियन एण्टि०, भा० ४, पृ० ३६७

§ देखो—प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम, बम्बई का सूचिपत्र, गुजरात के सुलतान, पृ० २२

अहम्मद का पुत्र लिखा है उस प्रकार इनके बारे में स्पष्ट न लिखकर "उनके वशज" इतना ही उल्लेख किया है। (२) कुतुवउद्दीन और दाऊद के नाम इस सूची में नहीं दिये गए है। दाऊद का नाम न देने की बात समझ में आ सकती है, क्योंकि उसने बहुत ही थोडे समय राज्य किया और वह इस वश का क्रमानुयायी भी नहीं था, परन्तु कुतुवउद्दीन तो महम्मद का ज्येष्ठ पुत्र था और उसने ७ वर्ष* तक राज्य किया। यद्यपि ७ वर्ष का समय कोई लम्बा समय नहीं कहा जा सकता परन्तु उसका राज्यकाल नगण्य भी नहीं माना जा सकता। इसलिए, इन लेखो में इसका नाम न पाये जाने का कोई कारण† समझ में नहीं आता है। ऐसा हो सकता है कि महमूद के समय के सभी अरबी और सस्कृत के लेखो में मुहम्मद (प्रथम) का नाम उल्लिखित करने का और कुतुवउद्दीन व दाऊद का नाम निकाल देने का कोई विशेष कारण रहा हो, जो अब तक ज्ञात नहीं हो सका है। परन्तु, यह कहना तो सगत नहीं होगा कि उन लेखो के लिये जिन साधनो से जानकारी प्राप्त की गई थी वे इतने विशद नहीं थे जितने कि उन इतिहासकारो की जानकारी के स्रोत जिनको हम जानते हैं। फिर, महमूद में और इन दोनो में इतनी अधिक पीढियो का अन्तर भी नहीं है कि उसके घरेलू आलेखो में उनको सहज ही भुलाया जा सके। वरन्, ऐसे आलेखो में तो उनके विषय में बाहरी लोगो की अपेक्षा और भी अधिक जानकारी की सामग्री मौजूद होनी चाहिये। सम्भवत विभिन्न इतिहासकारो और लेखों मे प्राप्त वंशावलियो में भिन्नता होने का यही कारण हो (कि वे इन सुलतानो के घरू आलेखो पर आधारित नहीं है)।

इस लेख से हमें जो दूसरी जानकारी प्राप्त होती है वह यह है कि इसमें मुजफ्फर शाह को 'मुदाफर नृप प्रभु' लिखा है। इस 'नृप प्रभु' उपाधि से, दिल्ली के बादशाहो‡ की सेवा करते हुए १३९६ ई० में मुजफ्फर द्वारा गुजरात के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की ओर सकेत किया गया है। इस राज्य की राजधानी पट्टण थी जो प्राचीन काल में गुजरात के चालुक्यो के समय (९६०-१३०० ई०) में अणहिल पट्टण के नाम से प्रसिद्ध थी। दिल्ली के सम्राट् मुहम्मदशाह के सूबेदार की हैसियत से मुजफ्फर द्वारा गुजरात के विद्रोही सूबेदार फरहत-उल्-मुल्क और अन्य पडौसी सूबो पर विजय¶ का उल्लेख इस प्रकार किया गया है.—

---

* कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, भा० ३, पृ० ३०१–३०३f, ब्रिग्स–पृ० ३७–४४; फरीदी–पृ० ४१, रॉस–पृ० १४, २००, ४५१।

† कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया (जि० ३ पृ० ३०१) में लिखा है कि वह बहुत बीमार होकर मर गया था परन्तु यह हो सकता है कि वह सन्देहात्मक दशा में मर गया हो जैसे उसका पिता मुहम्मद मर गया था (ब्रिग्स–जि० ४ पृ० ३६)

‡ विवरण के लिए देखो 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' जि० ३, पृ० २९४-९५

¶ देखो—कैं० हि० इ०, ब्रिग्स–जि० ४, पृ० ४-१०, फरीदी–पृ० ५-७, ९-१०, बर्ड–पृ० १७७

"नृपकुलं अखिलं यो विजित्य अधितस्थु."

मुदाफर के पुत्र महम्मद को केवल 'महीपति' लिखा है। जब तक कोई विशेष वृत्तान्त प्राप्त न हो, इस उपाधि से कोई तात्पर्य नहीं निकलता है। वास्तव में, न तो महम्मद अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और न इतिहासकारो ने ही उसके विषय में कुछ अधिक लिखा है। अतः उसके लिये इस साधारण उपाधि का प्रयोग उपयुक्त ही जान पडता है।

महम्मद के बाद अहम्मद हुआ। उसके विषय में लिखा है कि वह 'महीमण्डल' का मण्डन (भूषण) और सब धर्मों, पदार्थों और विचारो को जानने वाला और समझने वाला था। उसने अपने पराक्रम से मालवाधिपति को आक्रान्त ही नहीं किया वरन् उसके देश और धन पर भी अधिकार कर लिया। अहमद की इस प्रशस्ति की सत्यता बहुत कुछ इतिहास से प्रमाणित होती है। उसको 'मही–मण्डल-मण्डन' इसलिये कहा गया है कि वह गुजरात के पहले बड़े सुलतानो में से था, उसने अपने राज्य को दृढ बनाया और अहमदाबाद शहर बसाया। यह आश्चर्य की बात है कि इस लेख में उसके अन्य महान् कार्यों के साथ-साथ नगर निर्माण के विषय में कुछ नहीं उल्लेख किया गया है; यद्यपि २० वें पद्य में इस नगर का नाम प्रसगवश आगया है।

जैसा कि हमें मुसलमान इतिहासकारों से ज्ञात होता है अहमद मालवा के अधिपति हुशङ्गशाह की आँखो में चुभता था। सन् १४११ व १४१८ ई० में दो बार हुशङ्गशाह ने गुजरात पर आक्रमण* किये परन्तु अहमद ने दोनो ही बार उसे पीछे हटा दिया। इतना ही नहीं, १४१९† ई० में उसने स्वयं मालवा पर चढाई की और हुशङ्ग को हार कर माँडू के गढ़ में शरण लेनी पडी। इसके बाद १४२२ ई० में जब हुशङ्गशाह उडीसा पर चढाई करने गया हुआ था तो अहमद ने फिर मालवा पर आक्रमण किया परन्तु माण्डू पर अधिकार करने मे सफल नहीं हुआ।‡ अहमदशाह के इन हमलो का कोई विशेष फल न निकला। उसने केवल मालवा प्रान्त को लूटा और बरबाद कर दिया परन्तु उसे अपने राज्य में न मिला सका। प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित मालवा का ग्रहण करना ऐतिहासिक आधारो पर सिद्ध नहीं होता है।¶

* ब्रिग्स–जि० ४, पृ० १६, १८, फरीदी पृ० १३, १५, कैं० हि० इ० जि० ३, पृ० २९६-७

† ब्रिग्स–जि० ४, पृ० २१–२२, फरीदी–पृ० १६–१७

‡ ब्रिग्स–पृ० २२–२५, फरीदी–पृ० १८, कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० २९६

¶ 'जग्राह तद्देशधन च पश्चात्'—यहाँ 'तद्देशधन' का द्वन्द्व समास करते है तो 'तद्देश च धन च' ऐसा विग्रह होता है। इससे प्रतीत होता है कि उसका देश और धन ग्रहण कर लिए। यदि उसका विग्रह 'तद्देशस्य धन जग्राह' इस तरह किया जावे तो इसका अर्थ उसके देश का धन ग्रहण किया अर्थात् उसके देश को लूट लिया ऐसा होता है।

विवरण के लिए देखिए—ब्रिग्स–जि० ४, पृ० १७, २६, ३०, फरीदी–पृ० १४, १७, १९, २१, बर्ड–पृ० १८८, कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० २९६–९९।

यह भी विचारणीय है कि इस लेख में अहमद की दूसरी लडाइयो*का कोई उल्लेख नहीं है, विशेषत: गिरनार के चूडासमा राजा, खानदेश के नासिर और चाँपानेर के राजा का, जिनको उसने १४२२ ई० में अपने आधीन कर लिया था। दक्षिण के बहमनी राजा अलाउद्दीन अहमद के विषय में भी इसमें कोई उल्लेख नहीं है।

अहमद के पुत्र महम्मद के बारे में इस लेख में विशेष हाल नहीं लिखा है और यह ठीक भी है। यद्यपि ऐसा कहते है कि ईडर के राजा वीर (वैर), मेवाड के राणा कुम्भा और चम्पानेर के राजा गगादास† पर उसने विजय प्राप्त की थी‡ परन्तु कुछ मुसलमान इतिहासकारो ने उसके विषय में लिखा है कि वह कायर था और जब मालवा के सुलतान महमूद ने उस पर हमला किया तो उसने पीठ दिखा दी थी। उसकी इस कायरता के फलस्वरूप ही कुछ अफसरो के बहकाने से उसकी स्त्री ने उसे विष दे दिया था।¶ उसका एक गुण यह था कि वह उदार§ बहुत था और इसीलिये मुसलमान लोग उसे 'करीम' कहते थे।||

महम्मद के बाद तुरन्त ही महमूद से हमारा परिचय होता है। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है उसके दो पूर्वाधिकारियो के नाम छोड दिये गये है। महमूद का नाम महमूद बेगडा (गुजराती वेगडो) अधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत शिलालेख में उसको वीर योद्धा** लिखा है और आगे चल कर ग्यासदीन का उल्लेख है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस उपाधि का प्रयोग महमूद के लिए किया गया है अथवा उसके कुल में उत्पन्न किसी अन्य व्यक्ति के लिए। यदि इसका प्रयोग महमूद के लिए किया गया है तो यह बात कुछ विचित्र सी जान पडती है क्योकि इस उपाधि का अर्थ है (गियास-उद्दीन) धर्म का सहायक, और सिक्को†† और लेखो‡‡में उसके लिए नासिरउद्दीन वा उद्दुनिया अर्थात् 'धर्म और जगत् का रक्षक' लिखा है। अहमद प्रथम के पुत्र मुहम्मद द्वितीय को उसके सिक्को में गियासउद्दीन लिखा है।¶¶

* देखिए—कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, जि० ३, पृ० २९६—९९

† देखिए टिप्पणी पृ०

‡ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३००—०१, ब्रिग्स—जि० ४, पृ० ३५, फरीदी—पृ० २३-२४

¶ ब्रिग्स—जि० ४,पृ० ३६, फरीदी ने यह कृत्य किसी सय्यद का लिखा है,पृ० २६।

§ मीराते सिकन्दरी, पृ २३ पर लिखा है कि उसने 'ज़र बख्श' स्वर्ण-दाता का नाम प्राप्त किया।

|| ब्रिग्स—जि० ४,पृ० ३६,'करीम अर्थात् दयावान्'। वर्ड—पृ० १९६ "जरबक्स"

** फरिश्ता जि० ४ पृ० ६९—७०

†† सूचीपत्र, गुजरात के सुलतान, पृ० २२

‡‡ एपि इन्डो-मो०, १९२९—३०, पृ० ३-५, रिवाइज्ड लिस्ट, पृ० २५३

¶¶ सूचीपत्र पृ० २२

जिन पक्तियो में उसके युद्धो का वर्णन किया गया है वे दुर्भाग्य से कई जगह खण्डित हो गई है, अतः इन सब घटनाओ का ठीक-ठीक पता लगाना कठिन है। आठवें पद्य में दक्षिण दिक्पति और दम्मण के अधिपति के साथ महमूद के सम्बन्धो का वर्णन है (?) रैवत तक पृथ्वी पर अधिकार (?) का भी जिकर है। (पद्य के) पूर्व भाग में मालवा के महमूद खिलजी द्वारा १४६२ और १४६३ ई० में*'दक्षिण दिक्पति' निजाम शाह पर चढ़ाई करने के अवसर पर महमूद ने जो सहायता की थी उसका उल्लेख किया गया प्रतीत होता है और अपर भाग में दम्मण के पास पारडो के राजा द्वारा १४६४ ई०† में किए गए आत्म-समर्पण की ओर संकेत है।

रैवत अर्थात् जूनागढ के गिरनार पर्वत का उल्लेख करने से महमूद द्वारा १४६६ ई० में उस राज्य पर किए पहले हमले से तात्पर्य है। उस समय वहाँ के राजा रावमांडलिक से महमूद ने कर वसूल किया था और उसे राजचिह्न छोडने को बाध्य किया था।‡ आगे पद्य में लिखा है कि महमूद ने उस दुर्भेद्य जूना (जीर्ण) गढ को विजय किया और उसकी कीर्ति को चिरस्थायी करने के लिये रैवताचल ही विजय स्तम्भ बनाया गया। इससे जूनागढ के किले को पूर्णतया जीत कर दिसम्बर १४७० ई०¶ में सोरठ को गुजरात में सम्मिलित कर लेने की ओर लक्ष्य किया गया है। मुसलमान इतिहासकारो का कहना है कि गिरनार के राजा को फिर आत्म-समर्पण करने के लिए दबाया गया तब उसने इस्लाम धर्म को अगीकार कर लिया और उसको 'खान-ए-जहान्' की उपाधि प्रदान की गई। पहाडी की तलहटी में महमूद ने मुस्तफाबाद नामक नगर बसाया और वह नगर भी उसकी राजधानियो में से एक था—साथ ही, वह उसके ठहरने का एक मनचाहा स्थान भी था।§

---

* कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०४-०५, ब्रिग्स पृ० ४९-५१, फरीदी पृ० ४० ४२, बर्ड ने पृ० २०६ पर एक ही लडाई का हाल १४६१-६२ लिखा है। रॉस पृ० १७

† कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५, बर्ड ने इसका कोई उल्लेख नही किया है; ब्रिग्स ने पृ० ५१ पर दम्मण का तो उल्लेख नही किया है परन्तु १४६५ ई० में गुजरात से कोकण की चढाई का वर्णन अवश्य किया है, फरीदी ने पृ० ४२ पर बडोदर पर्वत पर चढाई और एक चट्टानी किले की विजय का उल्लेख किया है।, रॉस ने पृ० १८ पर (Bardu) बरडू विजय का हाल लिखा है। यह एक पहाडी पर स्थित है जो दम्मण के सामने देखती हुई है।

‡ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५, ब्रिग्स के मतानुसार पहला हमला १४३९ ई० में हुआ पृ० ५२, फरीदी (पृ० ५३-५४) और बर्ड इस हमले को १४६७ ई० के आस पास हुआ बताते है।, रॉस—पृ० १९

¶ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०५-०६, पृ० ५५, पृ० ५७ और पृ० २०९ पर १४७२ लिखा है।

§ कै० हि० इ०, पृ० ३०६-०७, पृ० ५६, ५७, २०९, २०, २५, २६ क्रमश

पद्य सख्या १०–१२ में बताया गया है कि महमूद ने चम्पक (पद्र ?) अर्थात् वर्तमान (चाँपानेर) को ले लिया, पावक* (पावागढ) को जीत कर वहाँ के शासक को जीवित पकड लिया और उस नगर पर राज्य करने लगा। यहाँ चम्पानेर और इसके किले पावागढ़ पर अन्तिम विजय के सम्बन्ध में मुख्य मुख्य घटनाओं का पता चलता है। मालवा और गुजरात के बीच में चाँपानेर एक 'राजनैतिक स्थिति' का राज्य था। यहाँ के शासक चौहान शाखा के राजपूत थे और गुजरात के पास यही एकमात्र हिन्दू राज्य था। इसलिए जब कभी मालवा के शासक को गुजरात पर आक्रमण करना होता तो वह पहले चाँपानेर के राजा को बहकाता था अथवा यदि उसी को कोई आपत्ति होती तो वह स्वयं गुजरात प्रदेश में लूट मार करके वहाँ के सुलतानो को तग किया करता था। इस प्रकार, इस राजा और गुजरात के सुलतानो में प्राय छुटपुट की लडाइयाँ और कभी-कभी बडी लडाइयाँ होतीं ही रहती थीं परन्तु महमूद से पहले कोई भी सुलतान पावागढ की जीत कर वहाँ के राजा को काबू में नहीं कर सका था।

उस समय सम्भवत जयसिंह चापानेर† का राजा था और महमूद उसके विद्रोह-पूर्ण कार्यों को अच्छी तरह जानता था परन्तु बहुत समय तक उसके राज्य पर आक्रमण

---

* जयसिंह का वि० स० १५२५ का एक शिलालेख, इण्डियन एण्टीक्वेरी, जि० ६, पृ० २, रासमाला जि० १ पृ० ३५७ (रॉलिन्सन), बाम्बे गजेटियर, जि० ३, पृ० ३०४, ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ६६। आजकल इनके प्रतिनिधि छोटा उदयपुर और देवगढ बारिया के राजा हैं।

† वि स० १५२५ के लेखानुसार जयसिंह उस समय पावक दुर्ग पर राज्य करता था और शायद महमूद के हमले तक भी वही राज्य कर रहा था। प्रस्तुत शिलालेख के २१ वें पद्य में जिस जयदेव का नाम आया है वह वास्तव में जयसिंह ही है क्योकि 'तबकाते अकबरी' (ब्रिग्स् द्वारा सपादित पृ० २१२) और 'मीराते सिकन्दरी' (फरीदी पृ० ५६) में भी लिखा है कि चाँपानेर के राजा 'जयसिंह' को महमूद ने हराया था। इन नामो में बहुत समानता है। इसके अतिरिक्त लेख में दिए हुए उसके पूर्वजों के नाम मुसलमान इतिहासकारो द्वारा दिए हुए नामो से मिलते हैं। यथा—

जयसिंह के १५२५ वि० स० का लेख	मुसलमान इतिहासकार
(१) वीर धवल	(१) वीरसिंह (तबकाते अकबरी) यह सम्भवत अहमदशाह का समकालीन था।
(२) त्र्यम्बक भूप	(२) त्रिम्बक दास (मीराते सिकन्दरी पृ० १४-१७) यह भी अहमदशाह का समकालीन था।
(३) गगराजेश्वर	(३) गंगादास (मीराते सिकन्दरी पृ० २४ व ३०) यह कुतुबुद्दीन का समकालीन था

करने का कोई अवसर नहीं मिला। निदान, १४८२ ई० में जब चापानेर के एक पताई* द्वारा पड़ौसी प्रदेश का सूबेदार मलिक सूद मारा गया तो उसे मौका मिल गया। उसके इस कार्य से नाराज़ होकर महमूद ने चापानेर पर चढ़ाई की और उस पर अधिकार करके वहाँ एक मस्जिद बनवाई। पताई ने पावागढ़ में शरण ली और महमूद ने उस किले को घेर लिया। यह घेरा २१ महीनो तक चला और अन्त में चालाकी से किले पर हमला बोल दिया गया। हताश होकर राजपूतो ने (जो अब बहुत थोडे रह गये थे) स्त्रियो को जीवित जला कर जौहर पूर्ण किया और मरणपर्यन्त मुसलमानो से अन्तिम युद्ध करने के लिये मैदान में आ गए। (इसका उल्लेख शिलालेख में किया गया मालूम होता है) कहते है कि और सब राजपूत मारे गये परन्तु राणा पताई और उसका एक मन्त्री डूगरशी जीवित पकडे गए। महमूद उनके साहस और वीरतापूर्ण युद्ध करने पर बहुत प्रसन्न हुआ और जब उनके घाव ठीक हो गए तो उन्हें इसलाम धर्म अंगीकार करने के लिये कहा। जब वे इन्कार हो गए तो उन्हें कैद कर दिया गया और फिर सोचने के लिए समय दिया गया। जब उन्होंने फिर सुलतान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और मुसलमान न होने का दृढ निश्चय प्रकट किया तो पाँच* महीने बाद उनको फाँसी दे दी गई। इसके बाद महमूद ने महमूदाबाद नगर वसाया और इसके चारो तरफ एक किला बनाया जो जहाँपनाह कहलाया।

१३-१४ पद्यों का तात्पर्य यह है कि इस नए जीते हुए प्रदेश पर शासन करने के लिए इमादल को नियुक्त किया गया।

आगे के कुछ पद्यो में मलिक इमादल द्वारा पल्लिदेश की विजय और वहाँ पर एक गढी निर्माण कराने का वर्णन है। इमादल की आज्ञा से बने हुए इसी किले व वहीं पर खुदवाए हुए दो तालावो का उल्लेख १९ वें पद्य में किया गया प्रतीत होता है। जैसा कि आगे बताया गया है, यह पल्लिदेश गोधरा जिले का ही कुछ भाग था न कि राजपूताने का वह जिला जो इस नाम से प्रसिद्ध है।

पद्य संख्या २० में एक कुए का वर्णन है जो, स्पष्ट है कि, इमादल द्वारा अहम्मदपुर में खुदवाया गया था। यहाँ अहम्मदपुर से अहमदाबाद का तात्पर्य है न कि अहमदनगर का।

---

* दूसरे इतिहासकारो (जैसे फरिश्ता, ब्रिग्स पृ० ६६) ने उसे 'बेनीराय' लिखा है, फरीदी (पृ० ६५-६७) ने रावल पताई, वर्ड (पृ० २१२) ने 'रावल नुप्पई, और बेले ने 'लोकल महोमेदन डाइनेस्टीज़ गुजरात' (१८८६, पृ० २११) में 'राय-पताई' लिखा है। इससे विदित होता है कि दूसरे 'चाहमान' अथवा 'चौहान' वश के राजाओ की तरह चाँपानेर के राजा भी 'राय' कहलाते थे। वाटसन (इन्डि० एण्टि०, जि० ६, पृ० २) का यह अनुमान ठीक है कि 'पताई' पावापति का सक्षिप्त रूप है।

* कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०९-१०, फरीदी, पृ० ६६-६७ फरिश्ता, जि० ४, पृ० ६६-७०, रॉस, पृ० २७-३१

इक्कीसवें पद्य में फिर लिखा है कि इमादल ने महमूदशाह की आज्ञा से [चम्पक पुर (चांपानेर ?)] में एक सुदृढ दुर्ग और वावडी बनवाई। यहाँ दुर्ग से तात्पर्य चांपानेर के चारो ओर की उस बाहरी दीवार और विशेष परकोटे से है जिसको बनवाने के लिए महमूद ने आज्ञा दी थी।*

पद्य स० २२–२५ में वागुलाधिपति का वर्णन है जिसका नाम जयदेव था (पद्य २२)। इमादल ने उसकी सेना को पूर्णत. पराजित कर दिया था। तेईसवें पद्य में रायदुर्ग विजय का उल्लेख है। यह राय (राजा) का दुर्ग सम्भवत. इसी (जयदेव) राजा का था। चौबीसवें पद्य में फिर किसी किले पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है। यहाँ पर यह स्पष्ट नहीं है कि ये सब पद्य पावागढ़ के राजा ही के विषय में है जिसका नाम जयदेव था और जिसको पावागढ के शिलालेख का जयसिंहदेव बताया जाता है अथवा वागुलाधिपति जयदेव के विषय में जो पावागढ़ के राजा से भिन्न व्यक्ति था। पूर्व पक्ष को मान लेने के लिए पद्य २३ में प्रयुक्त 'दिग्विजय' शब्द ही साधक है। सम्भव है पावागढ की विजय को ही 'दिग्विजय' कहा गया हो। क्योंकि इसे अब तक कोई भी गुजरात का सुलतान पूर्ण नहीं कर सका था। फिर, यही एक ऐसा हिन्दू राज्य था जो अब तक स्वतन्त्र बना हुआ था। इस दलील में तो कोई सार नहीं है कि चम्पकपुर विजय का उल्लेख एक ही बार किया गया है और फिर नहीं किया गया क्योंकि २५ वें पद्य में फिर 'पावक' का उल्लेख मौजूद है। यह प्रश्न तब तक ठीक-ठीक हल नहीं हो सकता जबतक कि वागुला का पता न लगा लिया जावे। शायद यह उस भू भाग का दूसरा नाम हो जिस पर चापानेर का राजा राज्य करता था। सम्भव है, पासही के प्रदेश वागड से भिन्न नाम रखने के लिये ही ऐसा किया गया हो अन्यथा यह 'बागलान' हो जो गुजरात और दक्षिण† के बीच में एक छोटी सी राजपूत रियासत थी। मुसलमान लेखकों द्वारा वागुला का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है।

छब्बीसवें पद्य में, जो ठीक ठीक नहीं पढा जा सका है, दधिपद्र (आधुनिक दोहाद) के सुन्दर किले का उल्लेख है। यह किला इमादल मुल्क द्वारा शक सम्वत् १४१० व विक्रम

---

* बाम्बे गेजे०, जि० १, भा० १, पृ० २४७, बर्ड पृ० २१२, बेले (तबकाते अकबरी, पृ० २१०)। यह विचारणीय है कि यद्यपि 'मीराते अहमदी' का लेखक 'मीराते सिकन्दरी' के आधार पर ही चलता है परन्तु 'सिकन्दरी' में इसका कोई उल्लेख नही है। कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ६१२और pt 25, Beley (बेले) ने पृ० २१२ पर एक नोट में लिखा है कि 'यह ऊपरवाला 'राजप्रासाद' मालूम होता है। स्पष्ट ही दिखाई पडता है कि ऊपर के किले के अवशेषो की बनावट मुसलमानी ढग की है। यह महमूद बेगडा द्वारा बनवाया हुआ बताया जाता है जिसने इसका नाम 'मान महेश' रक्खा था। देखिए 'बॉम्बे गजेटियर' जि० ३, पृ० १९०

† यह दक्षिण सम्भवत पल्लिदेश (वर्तमान गोधरा ताल्लुका) के बहुत समीप है।

सम्वत् १५४५ में बनवाया गया था । इक्कीसवीं पंक्ति में इमादल मलिक द्वारा किसी खास दिन जीर्णोद्धार कराए जाने का उल्लेख है । यह तिथि और दिन अब नहीं पढ़े जा जा सके हैं ।

इस (२६ वें) पद्य में हमें एक नई ही सूचना मिलती है । किसी भी मुसलमान इतिहासकार ने, दधिपद्र (दोहाद) के दुर्ग के निर्माण अथवा जीर्णोद्धार का श्रेय महमूद अथवा उसके साथियो को जिनके कार्यों का विस्तृत वर्णन मीराने-सिकन्दरी* में मिलता है, नहीं दिया है ।

इस शिलालेख में महमूद की १४६० ई० (जब यह उत्कीर्ण हुआ था) तक की सभी महत्वपूर्ण विजयो का उल्लेख है परन्तु इसमें सिन्ध, जगत और द्वारा (द्वारका) के हमलो को छोड़ दिया है जो क्रमश. १४७२ और १४७३ ई० में हुए थे ।†

लेख की ११, १३, १५–१७, २० और २१ वीं पक्तियोंमें क्रमश· (१) इमादल (२) इमादल मलिक (३) 'वीर' इमादल, (४) इमादुल मुल्क और (५) इमादुल मलिक नामक व्यक्ति के कार्यों का उल्लेख है ।

पहली (११वी) पक्ति का सन्दर्भ स्पष्ट नहीं है । (इससे) ऐसा प्रतीत होता है कि उसे(इमादल को)'देश रक्षा', (सम्भवतः नये जीते हुए चापानेर राज्य की रक्षा)के लिए नियुक्त किया गया था । दूसरी (१३ वीं) पंक्ति के अनुसार मलिक इमादल ने पल्लिदेश को जीत कर वहाँ एक किला बनवाया था । तीसरे, उसने चम्पकपुर में एक किला बनाया था । और चौथे. इमादुल मुल्क ने दधिपद्र दुर्ग के सम्बन्ध में एक दान किया और अन्त में मलिक इमादल ने अपने अधीनस्थ उसी दुर्ग का (?) जीर्णोद्धार कराया (मलिकि ?)

प्रसंग देखने से ये सब कार्य एक ही व्यक्ति इमादुल मुल्क द्वारा सम्पन्न हुए जान पडते हैं । प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों का वर्णन. 'देश रक्षा' पर नियुक्ति से लेकर शक सम्वत् १४१० में दधिपद्र दुर्ग के जीर्णोद्धार तक तिथि क्रमानुसार लिखा गया है ।

यह इमादल मुलक और इमादुलमुल्क‡एक ही हो सकता है जो कि प्रधान मन्त्री के समकक्ष ही एक पद होता था । महमूद के समय में इस तरह के तीन¶ इमादुल-मुल्क हुए (१) इमादुल मुल्क शा' बान, (२) इमादुल मुल्क हाजी सुलतानी और (३) उसका पुत्र बूद । पहले इमादुलमुल्क ने महमूद की उस षड्यन्त्र के विरुद्ध सहायता की जो उसके तख्त पर बैठते समय हुआ था । बूद वह व्यक्ति था जिसकी सहायता से महमूद ने चाँपानेर आदि स्थानो पर विजय प्राप्त की और दधिपद्र (दोहाद) का किला बनवाया

* देखिये—फरीदी पृ० ७८-८८, बेले पृ० २३८ इतिहासकारो ने इमादुल-मुल्क मलिक आईन का नाम लिखा है जिसने आईनपुरा बसाया । यह अहमदाबाद का बहुत सुन्दर कस्बा है । परन्तु, दधिपद्र और दोहाद एक है अत इस सूचना से विशेष काम नही चलता है ।

† कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०६-०७

‡ प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियम के श्री ज्ञानी के मतानुसार ।

¶ कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०४ व ३०६

तथा उसका जीर्णोद्धार कराया क्योंकि उसका पिता हाजी सुलतानी चाँपानेर की चढाई* के पहले ही मर चुका था ।

इस शिलालेख में अहम्मदपुर, चम्पक (पद्र), चम्पकपुर, दधिपद्र नामक स्थानों, गूर्जर, मालवक, दम्मण और वागूला के अधिपतियों; पावक और जीर्ण (?) दुर्गों तथा रैवतक पर्वत के नाम आये हैं ।

जिस प्रसग में अहम्मदपुर का नाम आया है वह स्पष्ट नहीं है । अधिक सम्भव यही है कि इससे अहमदाबाद ही का तात्पर्य है जिसको अहमदशाह ने प्राचीन नगर आशावाल †के स्थान पर बसाया था । यहाँ पर उसी के बसाये हुए अहमदनगर‡का प्रसंग इसलिये ठीक नहीं बैठता कि महमूद द्वारा वहाँ पर बनवाई हुई किसी भी इमारत का उल्लेख नहीं मिलता है, जब कि अहमदाबाद में उसने चांपानेर विजय करने के बाद ही बहुत-सी शानदार इमारतें,¶ नगर के चारों तरफ एक दीवार व बहुत-सी बुर्जें बनवाई थीं ।

चम्पक (पद्र) अथवा चम्पकपुर ही आधुनिक चाँपानेर है जिसके प्राचीन गौरव का इतिहासकारों ने§ बखान किया है । महमूद की बनवाई हुई कितनी ही इमारतों के खण्डहर अब भी चाँपानेर में मौजूद हैं । इनमें से गढ (राज प्रासाद) का परकोटा, बुर्जें, दरवाजे, राहदारी के थाने, मस्जिदें और छतरियाँ मुख्य हैं । सबसे बढ कर जामा मस्जिद है।||

दधिपद्र और दोहाद एक ही है । इसका शब्दार्थ है 'दधि पर बसा हुआ पद्र (गाँव)। दधि से तात्पर्य है दधिमती नदी जिसके किनारे आजकल दोहाद** बसा हुआ है ।

---

* कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०९

† कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३००

‡ बर्ड, पृ० १९०

¶ कै० हि० इ०, जि० ३, पृ० ६१२; जि० ४, पृ० ७०

§ आईन-ए-अकबरी (अबुल फजल) जि० २, पृ० २४१-२४२

|| इस मसजिद और दूसरी इमारतो के लिए देखिए—आर्कियालाजिकल सर्वे; वेस्टर्न इण्डिया, भा० ६, पृ० ४१ (Arch Surey West India, Vol VI, P 41 and Pts, LVI, LVI II,LXI, and XIV, and C H I Vol III, 612-13 and Pt XXV और कै० हि० इ०, भा ३, पृ० ६१२-१३

** पौराणिक आधार पर इसका नाम दध्येश्वर महादेव के कारण दधिपुर का नगर था । दध्येश्वर महादेव दधिमती नदी पर स्थित हैं । नदी का नाम दधिमती इसलिए पडा कि दधीचि ऋषि यहा पर रहते थे । इन आधारो पर दधिपद्र नाम ही अधिक सगत जान पडता है । दधिपुर नगर तो बाद में शिव की पुरातनता बताने के लिए नाम रख लिया जान पडता है ।

[इस गाँव का स्थानिक उच्चारण 'देवद' या 'दहिवद' है जो ठीक 'दधिपद्र' का अपभ्रंश है । मुसलमानो ने अपने जिह्वा–वैक्लव्य के कारण इसको 'दाहोद' या दोहाद कह कर बोलना शुरू किया और उसी तरह लिखना प्रारम किया और फिर जिनका अनुकरण इंग्रेजो ने किया—जिन विजय ।]

दोहाद से प्राप्त हुए जयसिंह और कुमारपाल के समय के शिलालेखो*में भी दधिपद्र शब्द का प्रयोग मिलता है ।

मुसलमान इतिहासकार दोहाद में दुर्ग निर्माण के जिस प्रश्न को पूर्णतया हल नहीं कर सके थे वह प्रस्तुत शिलालेख से हो जाता है । उदाहरणार्थ, मीराते अहमदी के लेखक ने एक जगह†लिखा है कि दोहाद की व्यापारी मण्डी की पहाडियो में अहमदशाह ने एक किला बनवाया, दूसरी जगह‡ इसके बनवाने का श्रेय मुजफ्फर (द्वितीय) को दिया गया है । परन्तु, मीरात-ए-सिकन्दरी के कर्त्ता का अभिप्राय है कि धमोद और दोहाद एक ही स्थान के नाम है और दोहाद का किला अहमद (प्रथम)* ने बनवाया तथा मुजफ्फर ने मालवा जाते हुए १५१४† ई० में इसका जीर्णोद्धार कराया ।

हमारे शिलालेख के प्रसग से ज्ञात होता है कि दधिपद्र में किला तो पहले ही मौजूद‡था परन्तु वह टूटी-फूटी दशा में था । इसका जीर्णोद्धार¶ महमूद (प्रथम) के समय में मलिक इमादल ने कराया । सम्भवतः यह किला अहमद (प्रथम) का ही बनवाया हुआ था, जैसा कि ऊपर बताया गया है ।

हम ऊपर लिख चुके है कि बागूला या तो फरिश्ता§ द्वारा उल्लिखित 'बगलान' है अथवा अबुल फजल|| व अन्य ग्रन्थ कर्ताओ के मतानुसार "बागलान" है । फरिश्ता का कहना है कि यह 'सूरत' के पास का प्रदेश है, दूसरे लोगो का मत है कि यह सूरत और नन्दरबार के बीच का पहाड़ी और घनी आबादी वाला प्रदेश था । आजकल के नासिक जिले** का एक भाग जो बागलान कहलाता है वह इस वर्णन से मिलता है । मुसलमान इतिहासकारो के मतानुसार इस स्थान के शासक राष्ट्रकूट वंश के थे । ये लोग और कन्नौज††के राठौड एक ही थे । इन लोगो की वशपरम्परागत उपाधि 'बहरजी' थी जो

* इण्डियन एण्टिक्वेरी, जि० १०, पृ० १५९

† वर्ड, पृ० १९०

‡ वर्ड, पृ० २२२

* 'दोहाद का एक थान का कोट खिचवाया जो पहाडियो के बीच में था' । फरीदी, पृ० १७

† फरीदी, पृ० ९६

‡ दधिपद्रे रुचिरतर दुर्गं वै—प० १९

¶ उद्धरेत् प० २१

§ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० १९ व ३०

|| आईन ए अकबरी (ग्लैडविन), जि० २, पृ० ७३ । इस का उल्लेख सर्वप्रथम, Bombay Gaz Vol. XVI, p 188, Vol VII, p. 65 and 189 में किया गया है।

** Bombay Gaz Vol XVI, p 399.

†† वर्ड द्वारा उल्लिखित 'मोआसिरुल उमरा' (उमरावो का इतिहास) पृ० १२२-इसका यह कथन विश्वसनीय नही है कि 'जमीदार के पास . . . . देश चौदह सौ वर्ष से कब्जे मे था ।'

शायद मसूदी* के मतानुसार कन्नौज के राज्यवंश की उपाधि 'बडराह' से मिलती है। इन लोगो का कहना है कि इस प्रदेश में सात दुर्ग थे जिनमें से मुल्हेर और सालेर के किले असाधारणतया दृढ† थे।

बहुत पहले ही से बागलान दक्षिण और गुजरात के समुद्री किनारे पर बीच का स्थान रहा है। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में गुजरात के अन्तिम हिन्दू शासक कर्ण ने यहीं पर शरण ली थी। इसके बाद भी यह स्थान गुजरात के और दक्षिण के सुलतानों के बीच लड़ाई का कारण रहा है। कभी इस पर एक का अधिकार होता था तो कभी दूसरे का, और कभी कभी यह दोनो ही के अधिकार से निकल कर स्वतन्त्र हो जाता था। प्रस्तुत शिलालेख में भी गुजरात के सुलतानो की किसी ऐसी ही विजय से अभिप्राय है जिसका मुसलमान इतिहासकारो ने उल्लेख नहीं किया है। यह विजय उन्होंने दौलताबाद के सूबेदार मलिक वागी और मलिक अशरफ बन्धुओ की १४८७ ई० की जीत से पहले प्राप्त की होगी।

पल्लीदेश के विषय में प्रसङ्ग स्पष्ट नहीं है परन्तु इतना अवश्य विदित होता है कि इस नाम के देश में इमादल ने एक किला बनवाया था। आजकल के गोधरा तालुका‡ में एक स्थान है जो पाली कहलाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रदेश के प्राचीन नाम पल्लीदेश के आधार पर ही इस स्थान का यह नाम चला आ रहा हो। शिलालेख में वर्णित पल्लीदेश को राजपूताने¶ का प्रसिद्ध जिला पाली मानने के लिए प्रसङ्ग की संगति ठीक नहीं बैठती है क्योंकि चाँपानेर विजय करते समय महमूद ने उसी भूखण्ड पर अधिकार किया होगा जो आजकल गोधरा ताल्लुका के अन्तर्गत है और जो उस समय पल्लीदेश के नाम से प्रसिद्ध था। राजपूताने में महमूद ने कोई विजय प्राप्त नहीं की। हाँ, जूलवाडा और आबूगढ§ के राजाओ से कर वसूल करने के लिये मारवाड़ के साँचोर और जालोर जिलो पर आक्रमण करने का उसने मनसूबा अवश्य किया था। इस हमले का कार्य इमादु-

---

* जैसा कि 'बाम्बे गजेटियर' भा० १६, पृ० १८४ नोट ८ में लिखा है।

† इनमें से बहुत से अब भी मौजूद है। (बाम्बे गजेटियर, भा० १६, पृ० ४००) बहुत सी पहाडियो पर सीधी चट्टानें खडी है और बहुत सी पहाडियो पर परकोटे खिचे हुए है। इनमें से बिल्कुल पश्चिम में बम्बई प्रदेश का सालेर और इससे करीब दस मील पूर्व में मुल्हेर का किला मुख्य है।

‡ रिवाइज्ड लिस्ट अन्टिक्वेरियन रिमेन्स, बाम्बे प्रेसि०, पृ० ९८

¶ जोधपुर राज्य में, देखिए—राजपूताना गजेटियर (इम्पीरियल गजट इण्डिया, प्राविन्शियल सिरीज) पृ० २०३, हेमचन्द्राचार्य ने भी अपने द्व्याश्रय महाकाव्य के सर्ग २० पद्य ३३ में पल्लिदेश का उल्लेख किया है परन्तु उसका अभिप्राय भी राजपूताने के तन्नामक प्रदेश से है।

§ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ६४, कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३०६, बेले पृ० २०६

ल्मुल्क और क़ैसरख़ां के आधीन किया गया था। परन्तु, इसमें सन्देह है कि यह हमला कभी हुआ भी था या नहीं। इसके विपरीत यह कहा जाता है कि महमूद के अधिकार में गोधरा नाम का एक अलग ही प्रान्त था जिसका सूबेदार कुवाम-उल-मुल्क था*। कुछ भी हो, इस (पल्ली) देश में दुर्ग-निर्माण का प्रश्न इस स्थान पर हल नहीं हो सकता है।

पावकदुर्ग (१६) ही पावागढ़ का पहाड़ी किला है जो बम्बई प्रान्त के पंचमहाल जिले में गोधरा से २५ मील दक्षिण में और सड़क द्वारा बड़ौदा†से २६ मील पूर्व में स्थित है। यहां के शासकों के एक शिलालेख में इसका नाम पावागढ़ भी दिया है।‡

महमूद से पहले अहमदशाह और उसके पुत्र महम्मदशाह ने इस दुर्ग को लेने के लिए प्रयत्न किये थे परन्तु वे सफल नहीं हुए। एक लम्बे घेरे के बाद १४८४ ई० के नवम्बर मास में इस किले पर हमला करने और इसके दरवाज़े तोड़ देने में सफलता मिली। कहते है कि पहाड़ी पर अधिकार प्राप्त करने के बाद महमूद ने ऊपर और नीचे के दोनो किलों¶ में रक्षकों के दल को और भी मजबूत कर दिया और वहां पर महमूदाबाद नामक शहर बसाया जो महमूदाबाद चांपानेर§ भी कहलाता था। प्रस्तुत शिलालेख में इन कार्यों की ओर इतना ही कह कर लक्ष्य किया है कि महमूद ने उस देश पर राज्य किया।

जीर्ण (दुर्ग) से आधुनिक जूनागढ़ का अभिप्राय नहीं है बल्कि यहाँ पर बनाये गये किलों में से एक का है जिनका हाल मुसलमान इतिहासकारों ने लिखा है और दूसरे शिलालेखो में भी जिनका उल्लेख मिलता है। उक्त आधारों से विदित होता है कि १५वीं शताब्दी में यहां पर दो किले|| और एक शहर था। शहर का नाम सम्भवतः गिरिनगर** था जैसा कि इससे पूर्व क्रमशः दूसरी†† और आठवीं‡‡ शताब्दियों में मिलता है। शहर का किला जो दामोदर घाट¶¶ के किनारे पर गिरनार (रैवत पर्वत) की ढाल पर बना

---

* ब्रिग्स, पृ० ६२

† बाम्बे गजेटियर, जि० ३, पृ० १८५ नो० १

‡ वही, पृ० २१७ नो० ३,४

¶ पावागढ की पहाडी और किले का नकशा देखिये, बाम्बे गजे०, जि०३,पृ० १६६,

§ फरिश्ता, जि० ४, पृ० ७, बर्ड, पृ० २१२, फरीदी, पृ० ६७, कैं० हि० इ०, जि० ३, पृ० ३१०

|| फरीदी, पृ० ५२, ५४, बर्ड पृ० २०८

** ब्रिग्स (फरिश्ता), जि० ४, पृ० ५२, ५३ "महमूदशाह.. ...गिरनाल देश की ओर (चला) जिसकी राजधानी का भी यही नाम था।"

†† रुद्रदामन का शिलालेख, ब्रिग्स, जि० ८, पृ० ४५

‡‡ जयभट्ट का दानपत्र (इण्डि० एण्टि०, भा० १३, पृ० ७८ पंक्ति १९)

¶¶ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ५३

हुआ है जीर्णदुर्ग,* झिक्षरकोट† अथवा जूनागढ़‡ कहलाता था। इसीको शायद आजकल ऊपरकोट¶|| कहते है। वास्तव में, यह परकोटे से घिरा हुआ राजमहल था। यह मुगलों की गढ़ियों जैसा था और सम्भवतः इसको गिरनार के चूड़ासमा राजाओ ने बनवाया था। दूसरा किला पहाड़ के ऊपर बना हुआ था§ और अब उसके कोई भी चिह्न अवशिष्ट नहीं है। इस पर्वत का प्राचीन नाम रैवत अथवा ऊर्जयन्त (उज्जयन्त) से बदल कर गिरिनगर के आधार पर गिरनार होना और शहर का नाम जीर्णदुर्ग अथवा जूनागढ में बदल जाना सम्भवत· १५ वीं शताब्दी के बाद की बात है।

रैवतक गिरनार पर्वत का ही दूसरा नाम प्रतीत होता है। इसी स्थान पर मिले हुए एक शिलालेख में इस पर्वत का नाम ऊर्जयत्|| लिखा है। स्कन्दगुप्त** के लेख में ये दोनों ही नाम मिलते है। फ्लीट साहब का मत है कि गिरनार की दो पहाडियों में से एक का नाम रैवतक है न कि खास गिरनार††ही का। इसके बाद १३०० ई० तक का कोई शिलालेख सम्बन्धी प्रमाण अबतक‡‡प्राप्त नहीं हुआ है। इसके बाद के शिलालेखों में रैवत

---

* मल्लदेव का चोरवाड का लेख वि० सं० १४४५ (रिवाइज्ड् लिस्ट एण्टि० रिमेन्स बाम्बे प्रेसि०, पृ० २५०; ब्रिग्स, जि० २१, परिशिष्ट पृ० १०३ स० ७३१, थेपक राजा मेहरा के ह्यसनी के लेख, इण्डि० एण्टि०, भा० १५, पृ० ३६०, वही० भा० १६, परि० पृ० ६८

† रिवाइज्ड् लिस्ट बाम्बे प्रेसि०, पृ० ३६१ लेख क्र० ३५ पंक्ति ६

‡ ब्रिग्स, जि० ४, पृ० ५३

¶ यह हिन्दू ढग का बना हुआ और सम्भवत १३वी अथवा १४वी शताब्दी का है या इससे भी पहले का हो सकता है। (आर्कियालॉजिकल सर्वे वेस्टर्न इण्डिया, भा० २, पृ० १५)

§ फ़रिश्ता (ब्रिग्म, जि० ४, पृ० ५३) "पहाड़ पर. . . . दृढतम किला"।

|| रुद्रदामन का लेख (ब्रिग्स, जि० ८, पृ० ४२)

** गुप्तकालीन लेख, कॉ० इ० इ०, भा० ३, पृ० ६०

†† वही पृ० ६४ नो० १, "ऊर्जयत् अथवा गिरनार के सामने का पहाड।" परन्तु 'बाम्बे गजेटियर' जि० ८, पृ० ४४१–४२ में लिखा है कि रेवतकुण्ड (जो दामोदर कुण्ड भी कहलाता है) के ठीक ऊपरवाले पर्वत को ही रेवताचल कहते हैं। इसका नाम रेवताचल, राजा रेवत के नाम पर पडा है। कहते है कि अपनी पुत्री रेवती का विवाह श्रीकृष्ण के बडे भाई बलदेव के साथ करने के बाद राजा रेवत द्वारका मे गिरनार आकर रहने लगा था। भागवतपुराण के स्कन्ध १० अध्याय ५२ में इस कथा का उल्लेख है। वहाँ रेवत को आनर्तराज लिखा है परन्तु यह नही लिखा है कि वह गिरनार जाकर रहने लगा था।

‡‡ जौनपुर के ईश्वर वर्मन् के शिलालेख में रेवतक का उल्लेख है। गुप्तकालीन लेख कॉ० इ० इ०, भा० ३, पृ० २३०

और उज्जयन्त‡ पर्वत को एक ही वताया गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व समय में गिरनार की दो भिन्न-भिन्न पहाडियो के नाम रैवत और उज्जयन्त थे परन्तु बाद में वे एक ही पर्वत¶ के नाम हो गए। अत प्रस्तुत शिलालेख में उल्लिखित रैवतक से उस पर्वत का अभिप्राय है कि जिस पर मन्दिर आदि बने हुए है और जो गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है।

‡ देखो नेमीनाथ के मन्दिर से प्राप्त लेख स० १४ (रिवाइज्ड लिस्ट बाम्बे प्रसि०, पृ० ३५५) और मल्लदेव का चोरवाड का लेख पृ० २५०। माण्डलिक राजा के एक लेख में दोनो नाम है परन्तु यह स्पष्ट नही है कि ये दोनो नाम एक ही के है अथवा भिन्न भिन्न पर्वतो के। (पृ० ३४७-४८)

¶ बाम्बे गजेटियर, भा० ८, पृ० ४४१ "जैन लोग कभी कभी गिरनार को ही रेवताचल कहते हैं, परन्तु यह गलत है।"

शिलालेख का पद्य विवरण

पद्य स०	१, १०, २६	आर्या
„	३, ११, १२, १६ से १८, २०, २२, २३	अनुष्टुप्
„	५, ६	इन्द्रवज्रा
„	४, १३, १४, १५, २५	उपजाति
„	२	स्रग्धरा
„	७ से ६, १६, २१, २४	शार्दूलविक्रीडित

राजविनोद महाकाव्य में वर्णित प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं स्थानों आदि की सूची

* मांडू